हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

3 मार्च, 1994

खण्ड–1, अंक–4

अधिकृत विवरण

विशत सूची

वीरवार, 3 मार्च, 1994

पृश्ठ संख्या

तारांकित प्र न एवं उत्तर	(4)1
नियम 45 के अधीन सदन की मेज पर रखे गए तारांकित प्र नों के लिखित उत्तर	(4)21
अतारांकित प्र न एवं उत्तर	(4)23
ध्यानाकर्शण प्रस्ताव	(4)34
गैर–सरकारी प्रस्ताव –	
शिक्षा को रोजगारोन्मूख बनाने तथा परीक्षाओं में नकल करने की बुराई का उन्मूलन करने संबंधी	(4)37

हरियाणा विधान सभा

वीरवार, 2 मार्च, 1994

हरियाणा विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर–1, चण्ड़ीगढ़ में प्रातः 9.30 बजे हुई। अध्यक्ष (चौधरी ईश्वर सिंह) ने अध्यक्षता की।

तारांकित प्र न एवं उत्तर

श्री अध्यक्ष: मैम्बर साहेबान, अब सवाल होंगे।

Ram Krishan Gupta Marg

***656. Sh. Ram Bhajan Aggarwal**: Will the Minister of State for Local Government be pleased to state whether there is any proposal under consideration of the Government to declare the road between park and Octori post of Delhi-Mohindergarh road in Charkhi-Dadri as Ram Krishan Gupta Marg?

Minister of State for Local Government (Ch. Dharambir Gauba): The said road has already been named as 'Ram Krishan Gupta Marg'.

श्री अमर सिंह: अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूं कि अगर किसी रोड का, कालेज का या स्कूल का नाम किसी व्यक्ति के नाम से रखना हो तो उसके लिए क्या क्राईटेरिया है?

चौ. धर्मबीर गाबा: अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्य को बतना चाहूंगा कि मेरा संबंध तो सिर्फ कमेटीज के अंडर आने वाली सड़कों के साथ है, स्कूल या कालेज को तो एजुकेशन डिपार्टमैंट देखता है। जहां तक रोडज का ताल्लुक है, उसमें म्युनिसिपल कमेटी रैजोल्यूशन पा करती है और पोस्टल अथौरिटी को इन्फार्म करती है कि हमने इस रोड का नाम बदली कर यह रख दिया है। साथ ही लोकल बाडीज विभाग के डायरैक्टोरेट को भी इन्फार्म करती है कि हमने इस सड़क कानाम बदल कर यह रख दिया है। जहां तक क्राईटेरिया की बात है तो वहां का लोकल आदमी हो और जिसकी सैक्रीफाईज भी हो, तभी उसके नाम से रोड का नाम रखा जाता है और यह सब कमेटी ही करती है।

Appointments made in Haryana State Cooperative Land Development Bank

***664. Prof. Chhattar Singh Chauhan**: Will the Minister for Cooperation be pleased to state the category-wise total number of apointments made in Haryana State Cooperative Land Development Bank during the period from August, 1991 to-date togetherwith the mode of their appointments?

सहकारिता मंत्री (श्रीमती शकुन्तला भगवाड़िया): विवरण सदन के पटल पर रखा जात है।

विवरण

क्र. सं.	पद की श्रेणी	व्यक्तियों की संख्या	भर्ती का ढंग
1	भूमि मूल्यांकन अधिकारी	5	सीधी भर्ती
2	लिपिक	9	''
3	पी.बी. एक्स चालक	1 तदर्थ	''
4	ड्राईवर	1	''
5	दफतरी	6+2 तदर्थ	''
6	सेवादार	7	''
7	अतिरिक्त सचिव	3	पदोन्नति से
8	उप सचिव	3	''
9	योजना एवं मूल्यांकन अधिकारी	1	''
10	आंकड़ा अधिकारी	1	''
11	प्रबन्धक	11	''
12	सहायक / जूनियर अकाउंटन्ट	6	''

13	फील्ड आफिसर	5	''
14	लिपिक	1	''
15	दफतरी	2	''
		64	

प्रो. छतर सिंह चौहान: अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि भर्ती की गई है, इसका विज्ञापन किस अखबार में दिया गया था क्योंकि हमें पता चला है कि यह बहुत ही मैनुप्लेटिड ढंग से दिल्ली की किसी छोटी सी अखबार में इसका विज्ञापन दिया गया था ताकि लोगौं को पता ही न चले। दूसरे, इन पोस्टों के लिए क्या क्वालीफिकेशन थी ओर कितनी भर्ती की गई है?

श्रीमती शकुन्तला भगवाड़िया: अध्यक्ष महोदय, हमने कोई नियुक्ति ही नहीं की है। दूसरे, हम एम्पलाईमैंट एक्सचेंजिज के थ्रू ही भर्ती करते हैं। इस विशय में मैं तभी बता सकती हूं अगर हमने कोई नियुक्ति की हो। जब हमने कोई नियुक्ति ही नहीं की तो कैसे बता दूं?

प्रो. छतर सिंह चौहान: अध्यक्ष महोदय, मैडम जी ने जो जवाब दिया है, उसमें लैन्ड वैल्यूएशन अफसर की नियुक्ति डायरैक्ट हुई है, वह कैसे हुई है? इसका कया अभिप्राय है? साथ

ही जो अखबारों में छपा था, कया वह पिछली सरकार के टाईम का था या आपकी सरकार के टाईम का है?

मुख्यमंत्री (चौ. भजन लाल): अध्यक्ष महोदय, मैं इसका जवाब दे देता हूं। माननीय सदस्य लेट आए हैं और मंत्री जी ने जो जवाब दिया है, वह इन्होंने पढ़ा नहीं है। अध्यक्ष महोदय, 91 से लेकर अब तक, 64 नियुक्तियों में से 33 वे लोग लिए गए हैं जो बाई–परमोशन हैं। बाकी 31 नियुक्तियों में 15 तो वे लोग है जो कम्पनसेशन ग्राउंड पर लिए गए हैं जिनके नजदीकी रिश्तेदारों को उग्रवादियों ने मार दिया था। इसके अलावा, 13 लोग वे लिए गए हैं जो सुप्रीम कोर्ट या हाई कोर्ट से जीतकर आए हैं। इस तरह से 15 ओर 13 मिलाकर 28 लोग लिए गए। इसके अतिरिक्त जो दूसरे लोग लोग लिएगए हैं उनमें से दो तो दफतरी हैं और एक पी.बी.एक्स. का आपरेटर हैं जो 89 डेज पर लिए गए हैं। ऐसी बात नहीं है कि ये रिक्तियां छुपाकर अखबार में दी गयी हैं या इनका पता ही नहीं लगा। ऐसा भी नहीं है कि भजन लाल ने इन पोस्टों पर अपने हल्के आदमपुर के लोगों को लगा लिया हो। मैं यह बात कलीयर करने के लिए बता देताहूं कि इन तीन आदमियों में से दो तो रोहतक जिले के ओर एक अम्बाला जिले का रहने वाला है।

साथी लहरी सिंह: स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से बहन जी से जानना चाहूंगा कि यह जो भर्ती की गई है, इनमें शिडयूल्ड कास्टस की भर्ती हुई है या नहीं?

श्रीमती शकुन्तला भगवाड़िया: स्पीकर साहब, मैं माननीय सदस्य को बताया चाहूंगी कि यह बात सही है कि इनमें 12 व्यक्ति रिजर्वेशन के लगने चाहिऐ थे, इनमें पिछला शार्टफाल भी है। लेकिन हमने तो कोई भी कर्मचारी नहीं लगाया है। ये तो उस समय के ही कर्मचारी लगे हुए हैं। फिर भी मैं इनको विश्वास दिलाती हूं कि जब कभी भी हम कर्मचारी लगायेंगे तो रिजर्वेशन में शार्टफाल का पूरी तरह से ध्यान रखेंगे।

साथी लहरी सिंह: स्पीकर साहब, जो एस.सी. के लोग इस बात से वंचित रह गये हैं, क्या ये उनके लिए कोई स्पैशल भर्ती करेंगी?

श्रीमती शकुन्तला भगवाड़िया: स्पीकर सर, जब हमने कर्मचारी लगाये ही नहीं तो फिर हम कैसे स्पेशल भर्ती कर सकते हैं? लेकिन फिर भी जब कभी भर्ती करेंगे तो शार्टफाल का अवश्य ध्यान रखेंगे।

श्री अमर सिंह धानक: स्पीकर सर, मैं आपके माध्यम से बहन जी से जानना चाहूंगा कि जो 11 मैनेजर बाई प्रमोशन लिए गए हैं, इनमें शिडयूल्ड कास्टस ओर बैकवर्ड क्लास के कितने–कितने व्यक्ति हैं?

श्रीमती शकुन्तला भगवाडिया: स्पीकर सर, इतना सब कुछ तो कोई भी ऐसे ही नहीं बता सकता। इस समय मैं इतना ही कह सकती हूं कि जिन कर्मचारियों की प्रमोशन हुई है और यदि

इनमें से किसी के भी साथ कोई अन्याय हुआ हो तो यह मुझे बता दें हम उसको देखेंगे। लेकिन अभी तक जो भी प्रमोशन हुई हैं, उनमें से किसी भी कर्मचारी का शिकायती पत्र हमारे पास नहीं आया है। जो कर्मचारी लगे हुए थे, उन्ही को प्रमोशन दे दी गयी है।

श्री अध्यक्षः अमर सिंह जी, प्रमोशन तो रूल्ज के मुताबिक ही हुई है।

चौ. भजन लालः अध्यक्ष महोदय, रूल्ज के मुताबिक तो क्लास थ्री तक ही प्रमोशन होती है और उसके मुताबिक ही ये प्रमोशन हुई हैं।

साथी लहरी सिंहः स्पीकर साहब, जो प्रमोशन्ज हुई हैं, उनमें से शिडयूल्ड कास्टस की हुई है या नहीं?

चौ. भजन लालः रूल्ज के मुताबिक ही हुई है।

श्री सतबीर सिंह कादयानः स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदया से जानना चाहूंगा कि लैंड डिवैल्पमैंट बैंक में कुछ वैकेन्सीज निकली थीं, क्या यह बात उनके नालेज में है? इसके अलावा, दूसरा प्रश्न भीमेरा इसी से जुड़ा हुआ है कि एच.एस.सी.एल.डी.बी. जो बैंक है, क्या उसकी 6 महीने में ऐनुअल मीटिंग मंत्री महोदया बुलाने की कृपा करेंगी?

श्रीमती शकुन्तला भगवाड़िया: स्पीकर साहब, कल भी इन्होंने इसके बारे में मुझ से बात की थी। मैं इनको कहना चाहूंगी कि अगर मीटिंग के बारे में कोई कमी लगती है तो हम यह मीटिंग बुला लेंगे।

चौ. सुरज मल काजल: स्पीकर साहब, मैं मंत्री महोदया से जानना चाहूंगा कि जो बहादुरगढ़ का लैंड डिवल्पमैंट बैंक है, उसके मैनेजर ने अपनी कलम से 15 दिन के अन्दर 6 लाख रूपये बगैर किसी जमानत के, बगैर कोई मौर्गेज किए हुए, तीस–तीस चालीस–चालीस हजार के हिसाब से बांटे हैं। क्या मंत्री जी के नोटिस में यह बात है, और अगर है, तो उसके खिलाफ क्या कार्यवाही की गयी है?

श्री अध्यक्ष: वैसे तो यह क्वैश्चन इस प्रश्न से रिलेटिड नहीं है, फिर भी अगर मंत्री साहिबा चाहे तो इसका उत्तर दे सकती हैं।

श्रीमती शकुन्तला भगवाड़िया: हां, स्पीकर सर, यह बात आदरणीय चौ. सूरज मल जी ने ही मुझे बताई थी। इनके बताने के समय ही मैंने संबंधित अधिकारी और फाईनैंशियल कमिश्नर को बुला लिया था। उन्होंने उस समय इंक्वायरी की और इनको हमने यह कह दिया था कि यदि आप एफिडेविट दिला देंगे तो हम उसे कड़ी से कड़ी सजा देंगे लेकिन ये कोई भी एफिडेविट नहीं दिला सके, फिर भी हमने उस अधिकारी की वहां से बदली कर दी। यदि

ये आज भी कोई ऐफिडेविट देंगे तो हम कड़ी से कड़ी कार्यवाही करेंगे।

चौ. सूरज मल काजल: एफिडेविट आपके पास जरूर भिजवा देंगे।

श्रीमती शकुन्तला भगवाड़िया: आप एफिडेविट भिजवा देंगे तो प्रश्न ही नहीं उठता कि कार्यवाही न हो।

श्री राम कुमार कटवाल: स्पीकर सर, दिल्ली से एक पत्रिका निकलती है, उसमें दिनांक 10.11.91 को 9 वैकेंसीज के लिए विज्ञापन निकला था। हमें यह बताया जाए कि विज्ञापन कौन से अखकार में निकलता है ताकि वह अखकार हम पढ़ लें और अपने बच्चों को बता दें ताकि वे एप्लाई कर सकें?

श्री अध्यक्ष: इस सवाल का मूल प्रश्न से कोई ताल्लुक नहीं है।

Buses Declared Unserviceable

***667. Sh. Jai Parkash**: Will the Minister of State for Transport be pleased to state –

(a) the total number of busses of Haryana Roadways declared unserviceable/condemned during the year 1992-93 and 1993-94 to-date togetherwith the criteria adopted for declaring the buses unserviceable/condemned; and

(b) the total number of buses out of the buses referred to in part (a) above have been disposed of so far?

परिवहन राज्य मंत्री (श्री बलबीर पाल शाह):

		वर्श 1992–93	वर्श 1993–94	योग
(क)	हरियाणा रोडवेज की बेकार/रद्द घोशित की गई बसों की संख्या	415	294	709 बड़ी बसें
(ii)	बसों की बेकार/रद्द करने हेतु अपनाए गए मानदंड।	6 लाख किलोमीटर तथा 8 वर्श, पूर्ण बसों के संबंध में।		
(ख)	ऊपर के भाग (क) में निर्दिश्ट बसों में से अब तक निपटान की गई बसों	379	136	518

	की संख्या			

इसके अलावा हमारे पास 194 बसें बिकने के लिए तैयार हैं।

श्री जय प्रकाश: स्पीकर सर, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि इन्होंने जो ब्यौरा दिया है कि 1992–93 में 415 और 1993–94 में 394 बसें इन्होंने बेकार और रद्द घोशित की हैं, उसमें मिनी बसें कितनी हैं ओर इन्होंने जो 379 और 136 टोटल 515 बसें सेल की हैं, उनमें से मिनी बसें कितनी व बड़ी बसें कितनी हैं?

श्री बलबीर पाल शाह: स्पीकर सर, ये जो 515 बसें बेची गई हैं, ये बड़ी बसें हैं। जहां तक मिनी बसों का प्रश्न है यह प्रश्न पहले भी सदन में उठा था उनके बेचने का क्राईटेरिया यह है कि सरकार द्वारा उस समय छह वर्श की अवधि घोशित की गई थी लेकिन बायबल न होने के कारण हमने उन बसों को बुक वैल्यू पर बेचने का प्रावधान किया था। उस समय कुल 225 मिनी बसें खरीदी गई थीं और उसमें से 31.1.94 को 97 बसें आक्शन करके बेच दी गई थीं, बाकी बसें बिक नहीं सकीं। उसके बाद यह निर्णय लिया गया कि बुक वैल्यू से 20 प्रतिशत कम कीमत पर भी अगर बस बिकती है तो उसको बेच दिया जाए क्योंकि ऐसी एक बस के प्रति वर्श एक लाख रूपये का घाटा होता है, जिससे डिपार्टमैंट को बहुत नुक्सान पहुचता हैं, इस समय हमारे पास कुल

128 बसें बकाया हैं जिनमें से 95 बसिज अनसर्विसेबल हैं और 33 को हम इस्तेमला कर रहे हैं। वह केवल नाल–कमर्शियल परपजिज के लिये हम ट्रांसपोर्ट विभाग में इस्तेमाल कर रहे हैं। यह जो 95 बसिज बकाया है, इनकी कीमत कम करने के बावजूद, यानी बुक वैल्यू से भी 20 प्रतिशत कम करने के बावजूद नहीं बिक पा रही हैं। इसके लिये हम कोशिश करेंगे कि जल्दी से जल्दी इनका निपटारा किया जाये।

श्री जय प्रकाश: अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से परिवहन राज्य मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि इन्होंने जो बसिज कंडैम करने के लिये नार्म्ज बताये हैं कि वह कम से कम 6 लाख किलोमीटर चली होनी चाहिये या फिर 8 वर्श तक के लिये चली हो। कया मिनी बसिज के लिये भी यही नार्म्ज हैं या अलग से हैं, अगर अगल से हैं तो यह बसिज कितने किलोमीटर चली होनी चाहिये या कितने साल पुरानी होनी चाहिये, तब आप इनको कंडैम करोगे?

श्री बलबीर पाल शाह: स्पीकर साहब, इस बारे में ब्यौरे अगर माननीय सदस्य अलग से प्रश्न पूछ कर पूछें तेा मैं इनको बता दूंगा क्योंकि सब डिपुओं से यह इन्फर्मेशन मंगानी पड़ेगी कि यह बसिज कितनी–कितनी चली हैं। इस बारे में नार्म्ज कोई तय नहीं किया गया है। सिर्फ 6 वर्श की अवधि इनके लिये निर्धारित जरूर की गयी है। लेकिन फिर भी, अगर यह जानना चाहते हैं कि कितने किलोमीटर चली हैं तो इसके लिये अगल से नोटिस दे दें,

हमें अलग–अलग डिपुओं से इन्फर्मेशन कुलैक्ट करनी पड़ेगी और इसमें कुछ समय लगेगा।

मुख्यमंत्री (चौ. भजन लाल): इस बारे में मैं भी थोड़ा सा बता दूं। अध्यक्ष महोदय, यह मिनी बसिज पिछली सरकार ने खरीदी थीं। बड़ी भारी गलत तरीके से खरीदी गयी। यह बसें कामयाब नहीं हुई ओर इन की वजह से विभाग को कुछ नुक्सान हुआ। सरकार के नोटिस में आने के बाद से इस बारे में जांच चल रही है। जांच की रिपोर्ट आने के बाद हम पूरी डिटेल में आपको बतायेंगे। जहां तक नार्म्ज की बात का ताल्लुक है, उसके लिए 6 साल की अवधि जरूर निर्धारित की गयी है लेकिन कितने किलोमीटर चलनी चाहिये, यह मेरे ख्याल से तय नहीं किया गया है क्योंकि उस वक्त तक यह बसें इतनी ज्यादा चली नहीं थीं। जो बसें खरीदी गयी हैं, यह ठीक नहीं खरीदी गयीं। इसमें बड़ा घोटाला हुआ है। लेकिन फिर भी हम इस बात की जांच कर रहे हैं और इस बारे में मैंने पिछली दफा भी हाउस में कहा था कि हम आपको बतायेंगे। अब भी यही कहता हूं कि जल्दी ही हम आपको इस बारे में पूरी डिटेल बतायेंगे (व्यवधान व शोर) मैंने तो सिर्फ इसलिये कहा है कि इनको याद आ जाये।

प्रो. छतर सिंह चौहान: स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से एक बात जानना चाहता हूं। यह जो अनसर्विसेबल बसिज हैं, यह डिपोवाईज कितनी–कितनी हैं? दूसरी बात और, कि भिवानी और दादरी डिपो में सबसे ज्यादा

अनसर्विसेवल बसिज हैं, उनकी रिप्लेसमैंट कब तक आप दे देंगे? तीसरी बात मैं आपकने माध्यम से एक और जानना चाहता हूं। पिछले सेशन में भी मेरा इस बारे में प्रश्न था। मुख्यमंत्री महोदय ने मिनी बसिज के बारे में जब मैंने की गई कार्यवाही के बारे में पूछा था तो यह कहा था कि इस बारे में इंक्वायरी चल रही है। इसक लिये टिल–मिल की नीति क्यों अपना रहे हैं? कितनी बड़ी इंक्वायरी है जो पिछले डेढ़ साल से चल रही है? अगर सरकार को मन्शा साफ है तो इसके लिये कोई समय निर्धारित करें कि इतने समय में यह इंक्वायरी पूरी हो जायेगी, क्योंकि जो भी नके लिये जिम्मेवार हैं, उनके खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिये। कह तो देते हैं कि यह करेंगे, वह करेंगे, लेकिन मुख्यमंत्री महोदय की, ऐसा लगता है कि कोई न कोर्ठ मजबूरी है, इसीलिये यह इंक्वायरी अभी तक कम्पलीट नहीं हो पा रही है। मैं यह जानना चाहता हूं कि वह इन्क्वायरी कब तक पूरी हो जायेगी?

चौ. भजन लाल: अगले सैशन से पहले–पहले हम इसकी जांच पूरी करा देंगे। जब अगला सैशन होगा तो हम पूरी तफसील के साथ आपको सारी इन्फर्मेशन देंगे कि कौन कौन अधिकारी या कौन–कौन से वजीर इसमें दोशी हैं। इस बारे में हम हाउस में सारी जानकारी अपने सैशन में देंगे।

प्रो. छतर सिंह चौहान: अध्यक्ष महोदय, भिवानी और दादरी में जो बसें हैं, व सारी अनसर्विएऐबल हैं और पानीपत की बसों की हालत बहुत अच्छी है। वहां से भी कई बसें जो खराब

हालत की थी, वह भिवानी व दादरी डिपो को शायद ट्रांसफर की गई है। मैं यह जानना चाहता हं कि हमारे इलाके में जो बसिज अनसर्विसऐबल हैं, उनकी जगह नई बसिज कब तक भेज दी जाएंगी? अब तो भिवानी जिले के तीन विधायक भी इनके अपने हैं, क्या उन जिलों में नई बसिज भेजी जाएंगी?

श्री बलबीर पाल शाह: स्पीकर सर, जहां तक मिनी बसिज का प्रश्न है, भिवानी डिपो को 16 अलाट की गई थी और चरखी दादरी को आठ बसिज दी गई थी। मैं यहां यह बता देना चाहता हूं कि उस समय सरकार हमारी नहीं थी। उन बसिज में सात बसिज बिक गई हैं और दो को डिपो में प्राईवेट काम के लिये चला रहे हैं, बाकी 7 बसिज खड़ी हैं। इसी तरह से चरखी दादरी में आठ बसिज दी थीं उनमें से दो को हम डिपों में ही प्राईवेट परपज के लिये चला रहे हैं और बाकी खड़ी हैं। (व्यवधान) जहां तक बड़ी बसों का संबंध है, उनके बारे में में इतना कहना चाहूंगा कि पानीपत से कोई भी पुरानी बस दादरी या भिवानी में ट्रांसफर नहीं की गई है।

चौ. बलवन्त सिंह मैना: अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री महादय से जानना चाहता हूं कि ऐक्सप्रैस बसों की गिनती जिलावार कितनी है? दूसरा मैं इनके नोटिस में यह बात लाना चाहता हूं कि रोहतक से एक एक्सप्रैस बस 5.40 पर चलती है, बरसात के दिनों में उसकी छत बुरी तरह से चूती है। क्या उसको मंखी महोदय

रिप्लेस करवाने का प्रयत्न करेंगे ताकि लोगों को कोई दिक्कत न हो?

श्री बलबीर पाल शाह: अध्यक्ष महोदय, वैसे माननीय सदस्य इनके लिये अलग से प्रश्न पूछते तो मैं डिटेल में बता देता। अगर इनको किसी बस के बारे में कोई शिकायत है तो ये कृपया लिखकर हमें दें ताकि हम उसको ठीक करवा सकें। मैं सारे हाउस को यह ऐश्योर करना चाहता हूं कि हम सारे हरियाणा के अन्दर बेहतर से बेहतर बस सर्विस देने की कोशिश करेंगे। इनको यह पता होना चाहिये कि जब इनकी सरकार थी, उस समय ट्रांसपोर्ट विभाग की क्या स्थिति थी और आज इनको देखना चाहिये कि जब से हमारी सरकार आई हे, तब से ट्रांसपोर्ट विभाग ने कितनी तरक्की की है, इनके वक्त से आजतक कितना फर्क पड़ा है? मेरे को यह बताने में फख्र है कि हमारी भजन लाल जी की सरकार ने जो इस बारे में फैसले किये हैं, यह सारा उन्ही फैसलों का ही इफैक्ट है कि आज सारे हरियाणा के अन्दर बस सर्विस कितनी अच्छी है, लोगों को किसी प्रकार की कोई शिकायत नहीं है। इनको पता होना चाहिये कि जब इनकी सरकार 1990–91 में थी तो उस समय 10 करोड़ का नुक्सान था और जब से हमारी सरकार आई है, 1992–93 में हमारे ट्रांसपोर्ट विभाग को एक करोड़ रूपये का मुनाफा हुआ है।

चौ. बलवन्त सिंह मैना: अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि वे बसें किस सरकार के युग की

खरीदी हुई थीं? जो बसें चौ. भजन लाल के वक्त में खरीदी गई थीं, उन्हीं की ही हालत आज बहुत खस्ता है, लोग दुखी है। क्या इस बारे मंत्री महोदय बताएंगे कि खस्ता बसों की हालत कब तक सुधार देंगे?

श्री बलबीर पाल शाह: अध्यक्ष महोदय, अगर हमारे पास कोई डिफैक्टिव बस की शिकायत आती है तो हम उसी वक्त उसकी मुरम्मत करवाते हैं, ठीक करवाते हैं। ऐसा हमने तय किया है कि जो पुरानी बसें टूटी फूटी थीं, उनको हरियाणा इंजीनियरिंग कारपोरेशन से रीफैबरीकेट करवाया जाए लेकिन मुश्किल यह है कि हमारे पास फंडज की कमी रही है। दूसरी बात यह है कि यह जिस हालत में ये बसें छोड़ी गई थीं, अगर इनकी पूरी तरह से दोबारा रिपेयर करवाएं तो उससे नई बसें लेना बेहतर होगा। माननीय सदस्य जो एक्सप्रैस बस की बात करते हैं, यह बात हाउस में पहली बार आई है और इससे पहले हमारे नोटिस में नहीं आई। हम उसको ठीक करवाएंगे, मैंने बस का समय नोट कर लिया है।

श्रीमती चन्द्रावती: स्पीकर साहब, जो दादरा से बसें स्टार्ट होती हैं, चाहे वे दिल्ली के लिए हों, या चण्डीगढ़ के लिए हों, क्या इनके पास उनकी रिपोर्ट है कि उनका ब्रेक डाउन कितना होता है? कई बार तो टायर की वजह से ही इतनी गाड़ियां खड़ी रहती हैं। क्या आपके पास इनका कोई हिसाब किताब है और इनको कब तक रिप्लेस करने का इरादा है?

श्री बलबीर पाल शाह: स्पीकर साहब, नार्म्ज के मुताबिक बसों को रिप्लेस किया जाएगा। जहां तक हिसाब की बात है, इसका इस प्रश्न से ताल्लुक नहीं है। बहिन जी अलग से नोटिस दे दें तो पूरा जवाब दे दिया जाएगा।

श्री धीर पाल सिंह: अध्यक्ष महोदय, अभी मुख्यमंत्री जी ने एक सप्लीमैंटरी का रिप्लाई दिया था। मैं उनसे जानना चाहता हूं कि अभी दूसरे और तीसरे महीने के करीब बी बसें टाटा की गोआ बौडी बिल्डिर्ज से बनकर आई हैं। एक बस की कास्ट दस लाख रूपए आई है और इनकी सीटें केवल 15 इंच चौडी हैं। दूसरी तरफ आप राजस्थान परिवहन की गाड़ियां देखें जो सतलुज बौडी बिल्डिर्ज जालन्धर से बनकर आई हैं। राजस्थान की एक बस की कास्ट 9 लाख रूपए आई है और उनकी सीटें भी सुविधाजनक हैं जिस वजह से उनमें ज्यादा सवारियां बैठती हैं। मैं चाहता हूं कि इसकी इंक्वायरी करवाई जाए कि डीलैक्स बस पर एक लाख की बढ़ौतरी क्यों हुई है? आपने बीस गाड़ियां खरीदी हैं और आपका 20 लाख रूपए का अधिक खर्चा हुआ है, इसकी इंक्वायरी करवाएं।

श्री बलबीर पाल शाह: स्पीकर साहब, बीस बसें हमने खरीदी हैं ओर इनकी कौस्ट लोकल मैनुफैक्चरर से ज्यादा ळै लेकिन इनकी क्वालिटी लोकल मनुफैक्चरर से कहीं सुपीरियर है। ये एक्सपोर्ट क्वालिटी की बसें हैं और एक्सपोर्ट हो रही हैं। इन बेसिज का सिर्फ डिलैक्स बसिज के तौर पर इस्तेमाल किया गया

है। इसमें सिर्फ दो पट्टियां हैं ओर वे दोनों लाल रंग की हैं। जो बसें पहले खरीदी गई थी उनकी सीटों के बारे में कम्पलेंट थी लेकिन उसके बाद हमने खुद उसका प्रोटो टाईप बनाया और अब हम सस्ते रेट पर बनवा रहे हैं। पहले तो हमने ट्रायल बेसिज पर बनवाई थी वरना हम 550 बसें वहीं से खरीद लेते।

10.00 बजे

श्री धीर पाल सिंह: स्पीकर साहब, मंत्री जी ने कहा है कि अब ठीक करवा दी हैं। मैं चाहता हूं कि सरकार पांच सदस्यों की एक कमेटी बना दे। वह कमेटी देखे कि राजस्थान की बसों और हरियाणा की बसों में कितना अन्तर है। राजस्थान परिवहन की एक डिलैक्स बस जयपुर से शिमला जाती है और वह पांच दस मिनट चण्डीगढ़ में भी रूकती है, उसका अध्ययन यहीं पर किया जा सकता है। ये कहते हैं कि अब सीटें अच्छी हैं। मैं बताना चाहता हूं कि आपकी गाड़ियां 4.2.94 को रोड पर आई हैं। उनमें आयल भी उठ रहा है। उनकी सीटों में भी चार इंच की कमी है। स्पीकर साहब, हमारी जो बसें जयपुर जाती हैं, उनमें सवारियां नहीं बैठती और राजस्थान पथ परिवहन को बसों को महत्व देती हैं। राजस्थान पथ परिवहन की बसों में सवारियों ज्यादा बैठती हैं इसलिए मैं कह रहा हूं कि सरकार पांच सदस्यों की एक कमेटी बना दें, वह कमेटी जो भी फैसला देगी, वह हम माल लेंगे।

श्री बलबीर पाल शाह: स्पीकर साहब, मेरे मोअजिज दोस्त एक बात नहीं समझ पा रहे हैं कि डीलैक्स बस में 35 सीटें होती हैं और माननीय सदस्य 52 सीटों वाली बस के बारे में बात कह रहे हैं।

श्री धीर पाल सिंह: स्पीकर साहब, मैं उन 20 बसिज की बात कर रहा हूं जो गोआ बौडी बिल्डर से आई हैं। उन बसिज की चेसिज भी डिफैक्टिव हैं और उनकी सीटें भी चार इंज छोटी हैं।

श्री बलबीर पाल शाह: स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से सभी माननीय सदस्यों को एक बात बता देना चाहता हूं कि जो राजस्थान पथ परिवहन की डीलैक्स बसिज हैं, वे ए.सी.जी.एल. से खरीदी हुई हैं और उनकी कीमत एक लाख रूपया मंहगी है।

Construction of Road

695. Ch. Bharath Singh: Will the Minister for P.W.D. (B & R) be pleased to state whether there is any proposal under consideratioin of the Government to construct metalled roads from village sajuma to village Di9wal and from Village Guransar to Village Ambersar; if so, the time by which the said roads are likely to be constructed?

लोक निर्माण (भवन एवं सड़कें) मंत्री (चौ. आनन्द सिंह डांगी): नहीं श्रीमान जी। अतः समय का प्रश्न ही नहीं उठता।

चौ. भरत सिंह: स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि उन गांवों के लोगों की डिमांड और उनकी परेशानी को देखते हुए, क्या उन सड़कों को बनाने के बारे में सरकार विचार करेगी?

चौ. आनन्द सिंह डांगी: स्पीकर साहब, माननीय सदस्य ने दो सड़कों के बारे में सवाल पूछा है। मैं माननीय सदस्य को बताना चाहूंगा कि सजूमा गांव की सड़क कलायत रोड से मिली हुई है और दिवाल गांव की सड़क कैथल रोड से मिली हुई है जिससे ये दोनों गांवों की सड़कें सारे हरियाणा प्रदेश की सड़कों से जुड़ी हुई हैं। अगर माननीय सदस्य यह सवाल करते कि पंजाब जाने का रास्ता बना दिया जाए तो इनकी बात ठीक थी। इसी तरह से गांव गुरांसर की सड़क नरवाना रोड से मिली हुइ है, इसलिए उन सड़कों को बनाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। उन गांवों के लोगों को आलरेडी सड़कों की सुविधा मिली हुई है।

श्री अमर सिंह ढांडे: स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि जो सड़कें फल्ड के कारण टूट गई थीं, क्या उन सड़कों को रिपेयर करने का सरकार का विचार है, अगर है तो उन सड़कों को कब तक रिपेयर कर दिया जाएगा?

चौ. आनन्द सिंह डांगी: स्पीकर साहब, फल्ड के कारण जितनी भी सड़कें टूट गई थीं, उन सभी सड़कों को ठीक कर दिया गया है। यह बात बिल्कुल सही है कि हरियाणा प्रदेश की

ऐसी सड़क कोई भी नहीं है जिस पर यातायात का आवागमन न हो। यह बात भी सही है कि उन सड़कों की रिपेयर अच्छी तरह से नहीं हुई। फल्ड के कारण जो सड़कें टूट गई थीं उनको ठीक करने के लिए 70 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया था। सैंट्रल गवर्नमैंट से भी माननीय मुख्यमंत्री जी ने पैसा मांगा था। सैंट्रल गवर्नमैंट ने केवल सवा चार करोड़ रूपया ही दिया था। हम उन सड़कों को जल्दी ही बहुत बढ़िया बनाएंगे जिनकी रिपेयर ठीक नहीं हुई है।

श्री अमर सिंह ढांडे: स्पीकर साहब, मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि जिन एरियाज में ज्यादा फल्ड आया था, क्या उन एरियाज की सड़कों को प्रायर्टी बेस पर रिपेयर कराएंगे?

चौ. आनन्द सिंह डांगी: स्पीकर साहब, उन सड़कों को प्रायरिटी बेस पर ठीक कराएंगे।

श्री सतबीर सिंह कादियान: स्पीकर साहब, मंत्री हफ्ते में चार बार रोहतक जाते हैं, क्या इनको मुडलाना से चिड़ाना की सड़क फल्ड के कारण टूटी हुई नजर नहीं आई? वह 100 गज का टुकड़ा है और उस पर 6 महीने के काम चर रहा है उसको ठीक करने के लिए हर रोज 40 आदमियों का मस्टर रोल बनाया जाता है लेकिन काम केलव एक या दो आदमी ही कर रहे हैं। मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि क्या उस सड़क को जल्दी से जल्दी बनाया जाएगा क्योंकि वे केवल 100 गज का टुकड़ा है?

चौ. आनन्द सिंह डांगी: अध्यक्ष महोदय, मुझे तो ऐसा लगता है कि माननीय सदस्य गोहाना की तरफ कभी गए ही नहीं लगते। इस सड़क पर पूरी प्रगति के कार्य चल रहा है। इस सड़क पर जितनी रेजिंग की आवश्यकता थी, वह कर दी गई है और मैटलिग भी कर दी गई है। मैं इनको बताना चाहूंगा कि इन सड़क का काम जल्दी ही पूरा कर दिया जायेगा।

चौ. सूरज मल काजल: अध्यक्ष महोदय, अक्तूबर, 1992 में हल्का जुलाना में बुझाना से इंगर की सड़क एक महीने में और बुराडहर से बुझाना की सड़क तीन महीने में बनाने की बात कही गई थी। मैं जानना चाहता हूं कि इस सड़क को कब तक पूरा कर दिया जाएगा, क्या ये जनता में झूठे वायदे करके झूठी लोकप्रियता हासिल करना चाहते हैं?

चौ. आनन्द सिंह डांगी: माननीय साथी ने ठीक सवाल किया है। हमने इन सड़कों को बनाने के बारे में जनता से वायदा किया है लेकिन धन की कमी के कारण अभी तक इन पर कार्य आरम्भ नहीं हो पाया है। आने वाले साल में इन सड़कों को बनाने की कोशिश करेंगे।

श्री जयपाल सिंह आर्य: अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री महोदय, अभी 10 दिन पहले नाहरी गांव में एक शादी में गए थे। मैं इनकी जानकारी के लिए बताना चाहता हूं कि नाहरी से नाहरा और नाहरी से नरेला के बीच की सड़क टूटी पड़ी है और यह

गांव सड़क से कटा हुआ है। वहां पर कोई भी बस ठीक नहीं चल सकती। अभी मुख्यमंत्री महोदय भी वहां पर जलसा करके आए थे, इन्होंने कहा था कि इस सड़क को जल्दी ही बना दिया जायेगा। मैं यह भी बताना चाहता हूं कि इन्होंने नाहरी से खरखौदा के बी 18 फुट चौड़ी सड़क बनाने की बात कही थी, वहां 18 फुट तो क्या, 2 फुट चौड़ी सड़क भी नहीं बनायी जा रही है। मैं चाहूंगा कि इस सड़क को जल्दी ही पूरा कर दिया जाये ताकि बच्चे बसों से स्कूल आ जा सकें।

चौ. आनन्द सिंह डांगी: मैं अपने साथी सदस्य को बताना चाहता हूं कि मैं शादी में नाहरी नहीं बल्कि नाहरा गया था। आज माननीय सदस्य ने यह बात कही है और मुख्यमंत्री द्वारा जनता में आश्वासन दिया गया है इसलिए धन की उपलब्धता पर अगले साल इन सड़कों को बनाने की कोशिश करेंगे?

श्री राम रतन: अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री महोदय ने जटौली से अतरगढ़, घोरी से पहलादपुर तथा एक दो और सड़कें बनाने के बारे में कहा था। मैं जानना चाहता हूं कि ये सड़कें कब तक बना दी जाएंगी?

चौ. आनन्द सिंह डांगी: अध्यक्ष महोदय, माननीय साथी ने जिन 4–5 नई सड़कों के बनाये जाने बारे बात की है, ये उनके बारे में लिख कर भेज दें। हम इनको देख लेंगे और अगर इनकी आवश्यकता हुई तो धन की उपलब्धता के आधार पर बनवा लेंगे।

साथी लहरी सिंह: सरकार कई बार कह चुकी है कि हरियाणा के सभी गांवों की पक्की सड़कों से जोड़ दिया गया है। मैं मंत्री महोदय के नोटिस में लाना चाहता हूं कि मेरे हल्के में एक गुढ़ी गांव है, वह सड़क से कहीं से भी नहीं जुड़ा है। क्या मंत्री जी बताएंगे कि इस गांव को पक्की सड़क से कब तक जोड़ दिया जायेगा?

चौ. आनन्द सिंह डांगी: आज ही इन्होंने इस बारे में चर्चा की है। ये इस बारे में हमें लिखकर भेज दें, इसको हम एग्जामिन करवा लेंगे और यदि जरूरत हुई तो बनवा देंगे।

चौ. जिले सिंह जाखड़: अध्यक्ष महोदय, अभी मंत्री महोदय ने हाउस को बताया था कि ऐसी कोई सड़क नहीं है जिस पर कि ट्रैफिक न चलता हो। मैं इनके ध्यान में लाना चाहता हूं कि तकरीबन आज से डेढ़ साल पहले महोदय सालहासास में एक बैंक का उदघाटन करने के लिए गए थे। कोसली से नाहर का एक 5 किलोमीटर का टुकड़ा है, वह बनना रहता है। कोसली परौपर शहर से रेलवे स्टेशन पर जाने के लिए कोई रास्ता नहीं है। मंत्री जी ने आश्वासन दिया था कि 1 महीने में सड़क ठीक करवा देंगे लेकिन डेढ़ साल हो गया है, उसको ठीक नहीं करवाया गया है। पिछले दिनों श्री चन्द मोहन जी वहां पर गए थे और श्री ए.सी. चौधरी जी भी गए थे लेकिन सड़क का रास्ता ठीक न होने के कारण रास्ता चेंज करके गए थे। उस सड़क पर पिछले करीब डेढ़ साल से 4–4 फुट के खड्डे पड़े हुए हैं। स्पीकर साहब, मैं

आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि इस सड़क को कब तक ठीक करवा देंगे?

चौ. आनन्द सिंह डांगी: स्पीकर साहब, सड़क पर पैच वर्क करवाया गया था लेकिन इन साल 3–4 बार बारिशें हुई हैं और सड़क की स्ट्रैंथनिंग कमजोर होने के कारण नये–नये पैच बन जाते हैं। हमारी हर सम्भव कोशिश है कि जितनी जल्दी सम्भव हो, उन पैचिज को कण्ट्रोल किया जाए। जनता को अच्छी से अच्छी सड़क बना कर देने के लिए हम हर सम्भव प्रयास कर रहे हैं।

श्री पीर चन्द: स्पीकर साहब, मेरे हल्के में कुलां से लेकर जाखल तक सड़क है जो बारिश के अन्दर बह गई है। मैं माननीय मंत्री जी से जनना चाहूंगा कि इस सड़क को कब तक बनाने का विचार है? जाखल एक जंक्शन है और हिसार जिला के काफी लोगों को उधर जाना पड़ता है जिस कारण वहां पर ट्रैफिक बहुत ज्यादा रहता है। क्या मंत्री जी बताने की कृपा करें कि यह सड़क कब तक बन जाएगी ताकि ट्रैफिक को इसका फायदा हो सके?

मुख्यमंत्री (चौ. भजन लाल): अध्यक्ष महोदय, यहां सदन में माननीय सदस्यों ने सड़कों की रिपेयर के बारे में काफी विचार रखे हैं और हम भी इस बात को महसूस करते हैं कि सड़कें ठीक होनी चाहिएं। बरसात के दिनों में काफी सड़कें टूट जाती हैं। मैं

इस बात को सदन में कहना चाहता हूं और आश्वासन दूंगा कि अगले साल अप्रैल से इस ओर विशेश ध्यान दिया जाएगा और सड़कों की मुरम्मत की जाएगी। जो सड़कें बरसात की वजह से खराब हो गई हैं या टूटी पड़ी हैं, उन सब की मुरम्मत अगले 6 महीने के अन्दर करवा दी जाएगी। स्पीकर साहब, जो सड़कें टूट गई हैं, उनको ठीक करवाएंगे बजाए नई सड़कें बनाने के, यह मैं सदन को आश्वासन देता हूं कि 6 महीने के अन्दर सड़कों की मुरम्मत करवा देंगे।

Construction of Four Laning Road

***669. Sh. Karan Singh Dalal@**: Will the Minister for P.W.D. (B & R) be pleased to state –

(a) whether the construction of four laning road from Sikn/Jharsetli to Hodel Border (G.T. Road) in Distt. Faridabad has been started;

(b) if so, the total amount spent so for, together with the time by which the four laning construction on the road as referred to in part (a) above as likely to be completed; and

(c) the name of the agency to whom the said work has been entrusted?

लोक निर्माण (भवन एवं सड़कें) मंत्री (चौ. आनन्द सिंह डांगी):

(क) जी हां।

(ख) दिसम्बर, 1993 के अन्त तक 16.97 करोड़ रूपये खर्च किया जा चुका है। पूर्ण करने की सम्भावित तिथि दिसम्बर, 1995 है।

(ग) कार्य मैसर्ज इण्डीयन रेवले कन्सट्रक्शनज कम्पनी, नई दिल्ली (भारत सरकार का उपक्रम) को सौंपा गया है।

श्री राजेन्द्र सिंह बिसला: अध्यक्ष महोदय, यह सड़क हमारे जिले फरीदाबाद के बल्लभगढ़ विधान सभा क्षेत्र से होकर जा रही है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण नेशनल हाईवे है। काफी दिनों से इस पर बड़ा भारी काम चल रही है। ट्रैफिक अधिक होने के कारण इस पर बहुत से एक्सीडैंट होते हैं और पिछले 10–15 साल से लोग इसको बनाने की डिमांड करते आ रहे हैं। इस सड़क के निर्माण कार्य को एक्सपिडाईट करवा कर उस पर काम चालू करवाने का श्रेय हमारे आदरणीय नेता चौ. भजन लाल जी को जाता है। मैं चौ. भजन लाल जी का धन्यवाद भी करना चाहता हूं क्यौंकि इस सड़क के ऊपर दिन–रात काम युद्धस्तर पर चल रहा है। (विघ्न) स्पीकर साहब, ज्यों ही हमारी सरकार का गठन हुआ तो चौ. भजन लाल जी ने केन्द्रीय मंत्री श्री जगदीश टाईटलर को बुलाकर बड़ा भारी फंक्शन किया और मैं मुख्यमंत्री जी के प्रति आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने इसकी एक्सपिडाईट करवाया और इस पर काम चालू करवाया। अध्यक्ष महोदय, इस सड़क के पूरे होने के लिए जो दिसम्बर, 1995 तक का समय निर्धारित किया है, उस समय तक यह काम पूरा हो जाना चाहिए। इस सड़क का

आधा अर्थवर्क पूरा नहीं हुआ है और काम रात–दिन युद्धस्तर पर चल रहा है, सड़क पर बजरी वगैरा और काफी मशीनरी पड़ी हुई है जिसके कारण वहां परन काफी एक्सीडैटस होते हैं। स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि क्या इस सड़क को दिसम्बर, 1995 तक पूरा करवा देंगे?

चौ. आनन्द सिंह डांगी: अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने बहुत ही सही सवाल किया है। मैं इनको बताना चाहता हूं कि यह तो सड़क बनने जा रही है यह भारतवर्श में अपने किस्म की पहली सड़क है जो कंकरीट से बनाई जा रही है। इसको इसलिए बनाया जा रहा है क्योंकि हरियाणा का 40 प्रतिशत ट्रैफिक लोड इस पर से होकर गुजरता है। इस सड़क में रिपेयर का काम नाममात्र का ही होगा और जहां तक इस सड़क को जल्दी पूरा करने का सवाल है, इसका 40 प्रतिशत अर्थवर्क पूरा हो चुका है तथा हमें पूरी उम्मीद है कि दिसम्बर, 1995 तक इसको पूरा कर देंगे क्योंकि इसमें हमें वर्ल्ड बैंक से तथा एशियन डिवैल्पमैंट बोर्ड से पैसा मिला है। इसी के साथ–साथ नेशनल हाई–वे न. 1 पर पिछली सरकार के टाईम के काम ठप्प था लेकिन हमी सरकार आने के बाद उस पर 22 से 38 किलोमीटर फोर लेनिंग करके खोल दिया गया है। अभी 30 किलोमीटर और खोला जा रहा है और यह करनाल तक खोल दिया जाएगा। अध्यक्ष महोदय, अम्बाला शहर में एक ओवर ब्रिज शुरू होता है, उसके आगे बस–स्टैण्ड और रेलवे स्टेशन हैं हम वहां तक ओवर ब्रिज बनाएंगे, साथ ही

एक चौराहा चण्डीगढ़–अम्बाला का है, वहां पर भी ट्रैफिक नीचे से और ऊपर से जाएगां वहां पर जनता को कोई दिक्कत नहीं होगी।

एक नैशनल हाई–वे न. 8 गुड़गांव से राजस्थान तक जाता है, उसकी भी एप्रूवल आ गई है, उसके भी टैन्डर करके जल्दी ही फोर लेनिंग कर देंगे। (शोर एवं व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, यहां पर जनता भी बैठी हुई है और हमें सदन के द्वारा ही जनता की भलाई की बात उन तक पहुंचानी है और क्या काम हो रहा है, उसकी जानकारी देनी है। (शोर)

प्रो. छत्तर सिंह चौहान: अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी से मैं यह जानना चाहता हूं कि इस सड़क की कितनी लम्बाई है और इस पर काम कब शुरू हुआ था? एक तरफ तो मंत्री जी कहते हैं कि हमने सभी सड़कों की मुरम्मत कर दी है। आज पानी और बिजली का क्या हाल है, यह हम जानते हैं। (शोर)

चौ. आनन्द सिंह डांगी: अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य बहुत ही पढ़े–लिखे हैं, ये क्या बोल रहे हैं? (विघ्न)

श्री अध्यक्ष: चौहान साहब, आप अपना प्रश्न पूछें।

प्रो. छत्तर सिंह चौहान: अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि अगस्त, 1993 में माननीय मंत्री जी मेरे हल्के में गए थे। वहां पर लोगों ने इनको बताया था कि भिवानी जींद रोड फ्रौम बास टू खांडाखेड़ी सड़क बिल्कुल टूटी है। यह सड़क वीरेन्द्र

सिंह जी के हल्के में, इनके गांव के बिल्कुल नजदीक ही पड़ती है। क्या मंत्री जी इस सड़क को ठीक करवायेंगे? (विघ्न)

(इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया)

Shikara Hawks and Owls

***690. Smt. Chandravati**: Will the Minister for Forests be pleased to state whether it is a fact that the number of Owls and Shikara Hawks is decreasing day by day in the State; if so, the steps taken or proposed to be taken by the Government to preserve the breeds of Owls and Shikara Hawks?

Forests Minister (Rao Inderjit Singh): No, Sir, the question does not arise.

श्रीमती चन्द्रावती: स्पीकर साहब, उल्लू किसानां के लिए बहुत ही फायदेमंद पक्षी है क्योंकि यह रतोल चूहों को खा जाता है जो किसानों के लिए नुक्सानदायक होता है। इसी तरह से स्पीकर साहब, जो शिकारा बाज है, इसको मैंने तो जिन्दगी में एक ही बार देखा है परन्तु आज उसकी भी संख्या बहुत कम हो गयी है, इसलिए क्या मंत्री जी बतायेंगे कि सरकार इनकी गिनती को बढ़ाने के लिए कुछ कर रही है?

राव इन्द्रजीत सिंह: स्पीकर साहब, शिकारा बाज के बारे में इन्होंने जो चिन्ता व्यक्त की है वह ठीक नहीं है। I am happy that she has shown cencern about the wild life in Haryana but her conception is misplaced. She has stated that the number

of sparrow hawk and owls are decreasing in Haryana but this is not correct. These are migratory birds. यह दोनों ऐसे पक्षी हैं जो एक जगह पर नहीं रहते बल्कि एक जगह से दूसरी जगह पर आते जाते रहते हैं, माईग्रेट होते रहते हैं, इसलिए इनके बारे में सन्सस करना बड़ा मुश्किल है। इनकी पकड़ा नहीं जा सकता है क्योंकि ये पक्षी आते जाते रहते हैं। यह जरूर हो सकता है कि इन्होंने इस पक्षी को न देखा हो या या इनकी कहीं पर नजर न आया हो। स्पीकर साहब, यह बात सही है कि जितने ये पक्षी आज से बीस साल पहले थे, उतने आज नहीं हैं। ये नैचुरल हैवीटेड हैं इसलिए ये इधर से उधर जाते रहते हैं। स्पीकर साहब, नीलकंठ के बारे में हम सभी को चिंता जरूर होनी चाहिए क्योंकि यह पक्षी जरूर खत्म हुआ है। लेकिन उल्लुओं का और शिकारा बाज की चिन्ता करने की इनको आवश्यकता नहीं है।

श्रीमती चन्द्रावती: स्पीकर साहब, जो शिकारा बाज है इसको तो गुरू गोबिन्द सिंह जी भी अपने साथ रखते थे, लेकिन आज ये बिल्कुल खत्म हो रहे हैं, इसलिए इनके बारे में देखना बहुत जरूरी है। इसके अलावा उल्लू भी किसानों के लिए बहुत फायदेमंद है, इसलिए मैं इनके लिए कह रही हूं कि क्या सरकार इनकी संख्या बढ़ाने के लिए कुछ कर रही है या नहीं?

राव इन्द्रजीत सिंह: स्पीकर सर, माइग्रेशन का यह मतलब नहीं है कि विदेश से ही होगा, देश के अन्दर भी माइग्रेशन हो सकता है। पक्षी सारे हिन्दुस्तान में एक साइड से लेकर दूसरे

साइड जा सकते हैं। गुरू गोविन्द सिंह जी स्पैरो हॉक रखते थे, शिकारा बाज नहीं रखते थे। स्पैरो हॉक एक अलग किस्म का परिन्दा होता है।

श्रीमती चन्द्रावती: स्पीकर सर, उसी को हिन्दी में शिकारा बाज करते हैं। शिकारा बाज चील जितना बड़ा होता है, मिट्टी की शक्ल और तोते जितना लम्बा होता है जिसका जमीन जैसा रंग होता है और शरीर पर सफेद चिकते होते हैं, उसको शिकारा बाज कहते हैं। वह बाज मैंने करीब–करीब कहीं भी वाइल्ड लाइफ में नहीं देखा है।

राव इन्द्रजीत सिंह: स्पीकर सर, मैं माननीय सदस्य को बताना चाहूंगा कि उसको स्पैरो हाक बोलते हैं। बाज को शिकारा बाज कहते हैं। सर्दियों में जहां उनको चिड़ियां मिलती हैं वहां वे रहते हैं। शायद बहन जी ने उसे नहीं देखा है, मैंने उसे आपके दादरी हल्के में देखा है। जहां चिड़ियां होती हैं वह वहां मौजूद होता है, जहां चिड़ियां नहीं होती वह वहां नहीं रहता। गर्मियों में ये पहाड़ियों पर चले जाते हैं।

श्री अध्यक्ष: चन्द्रावती जी का सवाल यह है कि उनको बढ़ाने का, उनके नम्बर बढ़ाने का क्या आपने कोई इंतजाम किया है?

राव इन्द्रजीत सिंह: स्पीकर सर, जब वाइल्ड लाइफ डिपार्टमैंट यह महसूस ही नहीं करता कि इनकी संख्या घट गई है तो उनकी संख्या को बढ़ाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

Kaithal, Bhuna and Meham Sugar Mills

***725. @ Prof. Sampat Singh**: Will the Minister for Cooperation be pleased to state –

(a) the date on which the Kaithal, Bhuna and Meham Sugar Mills started functioning;

(b) the yearwise total quantity of Sugarcane purchased by each above said Mills from the bounded local areas during the years 1991-92, 1992-93 and 1993-94 together with the per quintal amount paid by the aforesaid mills during the said period, and

(c) the yearwise total quantity of Sugarcane purchased by each above said mills from outside the mills area during the above said period together with the per quintal amount paid by the aforesaid mills at their door-step?

सहकारिता मंत्री (श्रीमती शकुन्तला भगवाड़िया):

(क)	विवरण सदन के पटल पर रखा है।
(ख)	
(ग)	

विवरण

पूछी गई सूचना निम्न प्रकार है :–

		मेहम शुगर मिल	कैथल शुगर मिल	भूना शुगर मिल
1	मिल के कार्य आरम्भ करने की तिथि	4.4.91	2.4.91	18.1.92
2	अपने चीनी मिल क्षेत्र से खरीदे गये गन्ने की मात्रा (लाख क्विंटल)			
(क)	1991–92	24.29	23.31	4.80
(ख)	1992–93	19.76	17.17	5.93
(ग)	1993–94	19.09	6.27	3.10
3.	गन्ने के मूल्य का किया गया भुगतान (रूपये प्रति क्विंटल)			
(क)	1991–92			
	सी.ओ.जे. 64	49	49	49
	सी.ओ. 7717	47	47	47
	आम किस्म	45	45	45

(ख)	1992–93			
	सी.ओ.जे. 64	50	50	50
	सी.ओ. 7717	48	48	48
	आम किस्म	46	46	46
(ग)	1993–94			
	सी.ओ.जे. 64	60	60	60
	सी.ओ. 7717	58	58	58
	आम किस्म	56	56	56
4	मिल क्षेत्र से बाहर से खरीदे गये गन्ने की मात्रा (लाख क्विंटल)			
(क)	1991–92		0.44	0.20
(ख)	1992–93		4.17	6.35
(ग)	1993–94		2.72	4.93
5	मिल क्षेत्र से बाहर से खरीदे गये मिल गेट पर गन्ने का किया			

	गया प्रति क्विंटल भुगतान			
(क)	1991–92		45.42	53.56
(ख)	1992–93		56.97	60.93
(ग)	1993–94		69.72	71.63

श्री धीरपाल सिंह: स्पीकर साहब, मैं मंत्री महोदया से जानकारी चाहूंगा कि इन्होंने अपने लिखित जवाब में दिया है कि 1991 में मेहम शूगर मिल में 24.29 लाख टन खरीदा गया, कैथल में 23.31 लाख टन और भूना में 4.80 लाख टन गन्ना खरीदा गया, इसी तरह से 1992–93 में क्रमशः 19.76 लाख टन, 17.17 लाख टन और 5.93 लाख टन गन्ना खरीदा गया है और 1993–94 में मेहम में 19.9 लाख टन, 6.27 लाख टन और 3.10 लाख टन गन्ना खरीदा गया। यह जो गन्ने की उपलब्धता है, यह क्यों कम हुई, इसका क्या कारण है, कहीं ऐसा तो नहीं है कि ठीक भाव न मिलने से किसानों को सरकार से विश्वास उठ गया हो?

श्रीमती शकुन्तला भगवाड़िया: स्पीकर सर, पहले तो मैं माननीय सदस्य को बताना चाहूंगी कि सारे भारतवर्श में हरियाणा प्रान्त ने सबसे ज्यादा भाव दिया है। गन्ने का भाव 60 रूपये प्रति क्विंटल जब निर्धारित किया तो यह समूचे भारतवर्श में सबसे ज्यादा था। लेकिन बीच में जब मिल बन्द हुए तो पंजाब और

उत्तर प्रदेश ने गन्ना लेना शुरू कर दिया। इनको यह तो सोचना चाहिये कि ये अपने राज में क्या भाव देते थे? इनको अपने समय को याद करना चाहिये जब गन्ना किसानों के पास इतना था और रेट कम मिलने की वजह से उन्होंने गन्ना खेतों में जलाया था हमने तो किसानों को बहुत बढ़िया भाव दिया है। यह हमें कैसे कहते हैं कि हम किसान के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। वह दिन क्यों भूल गये, जब गन्ना और आलू खेतों में किसानों ने छोड़ दिया था। इस बारे में यह कुछ न कहें तो बेहतर होगा।

Mr. Speaker: Hon. Members, the Question Hour is over.

नियम 45 के अधीन सदन की मेज पर रखे गए तारांकित प्रश्नों के लिखित उत्तर

Shera and Untla Feeder

***710. Sh. Krishan Lal**: Will the Minister for Power be pleased to state whether there is any proposal under consideration of the Govt. to connect teh Shera Feeder and Untla Feeder of Madlauda Sub-Division with the 16 M.V.A. Transformer in the 132 K.V. Power House of Panipat Thermal Plant during the year 1993-94?

बिजली मंत्री (श्री ए.सी. चौधरी): हां, श्रीमान जी।

B – 1 Test

***732. Sh. Amar Singh Dhanday**: Will the Chief Minister be pleased to state –

(a) whether any B – 1 test was conducted by the Police Department during the year 1993-94; if so, the number of candidates selected in the said test; and

(b) the number of candidates out of those referred to in part (a) above belonging to Scheduled Castes and Backward Classes separately?

मुख्य मंत्री (चौ. भजन लाल):

वांछित सूचना निम्न प्रकार से है :–

(क) वर्श 1993 तथा 1994 में पुलिस विभाग द्वारा बी –1 परीक्षाएं पंजाब पुलिए रूल 13.7 के अनुसार प्रत्येक वर्श परीक्षा मास जनवरी में ली गई थी। जो प्रति परीक्षा में उम्मीदवार चुने गए, उनकी प्रत्येक वर्श की संख्या निम्न प्रकार है:

क्र.स.	वर्श	
1	1993	772
2	1994	466

(ख) भाग ''क'' में ऊपर दर्शाए गए अनुसूचित जातियों तथा पिछड़ी जातियों से सम्बन्धित उम्मीदवारों की संख्या निम्न प्रकार से है:–

क्र.स.	वर्श	अनुसूचित जातियां	पिछड़ी जातियां

1	1993	152	87
2	1994	84	63

Illegal Possession of Cremation Land

***757. Sh. Daryao Singh**: Will the Minister of State for Local Government be pleased to state whether any case of illegal possession of the cremation ground (Children) Gudha Road, Jhajjar has come to the notice of the Govt. if so, the details thereof together with the action taken to get the said ground vacated?

स्थानीय शासन राज्य मंत्री (चौ. धर्मबीर गाबा): इस शमशान घाट वाली भूमि का नगरपालिका झज्जर से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह भूमि वकफ बोर्ड की है। उपायुक्त रोहतक को हिदायत कर दी गई है कि इस मामले की जांच करके आवश्यक कार्यवाही प्राथमिकता के आधार पर करें।

Encroachment

***821. Sh. Rajinder Singh Bisla**: Will the Minister for P.W.D. (B&R) be pleased to state whether the Government is aware of the Fact that there is an encroachment alongwith both sides of National Highways/State Highways/Link roads in the State; if so, the steps taken or proposed to be taken to remove the said encroachment?

लोक निर्माण (भवन एवं सड़कें) मंत्री (चौ. आनन्द सिंह डांगी): हां, श्रीमान जी, अतिक्रमण हटाने के लिए सरकार द्वारा

कानून के प्रावधान के अनुसार प्रभावशाली कार्यवाही की जा रही है।

Declaration of Hodel as Tehsil

***840. Sh. Ram Rattan**: Will the Minister for Revenue be pleased to state –

(a) whether there is any proposal under consideration of the government to declare Hodel as Tehsil; and

(b) if so, the time by which Hodel is likely to be declared as Tehsil?

राजस्व मंत्री (श्री निर्मल सिंह):

(क) हां, श्रीमान् जी,

(ख) होडल में 1.4.94 से तहसील का कार्य आरम्भ होगा।

अतारांकित प्रश्न एवं उत्तर

Bus Stand at Rohtak

162. Sh. Karan Singh Dalal: Will the Minister of State for Transport be pleased to state whether the Bus-Service from the newly constructed Bus Stand at Rohtak has been started; is not, the reasons thereof?

परिवहन राज्य मंत्री (श्री बलबीर पाल शाह): जी नहीं। जनता को दी जाने वाली सुविधाएं–शौचालय, पानी की सप्लाई तथा अन्य सुविधाओं का कार्य पूर्ण न होने के कारण रोहतक के नये संक्रमण (ट्रांजिट) बए अड्डे से बस सेवायें आरम्भ नहीं की गई हैं। उपरोक्त सुविधाओं का कार्य शीघ्र ही पूर्ण हो जाएगा तथा कार्य पूर्ण होने के बाद बस सेवाएं आरम्भ कर दी जाएगी।

Recruitment of A.S.Is.

163. Sh. Karan Singh Dalal: Will the Chief Minister be pleased to state whether any recruitment of A.S.Is. in Police Department has been made during the period from 1st January, 1994 todate; if so, the names and addresses of the persons so recruited?

मुख्यमंत्री (चौ. भजन लाल): वांछित सूचना हरियाणा विधान सभा पटल पर रख दी गई है।

सूचना

पुलिए विभाग में सहायक उप पुलिस निरीक्षकों की प्रथम जनवरी, 1994 से अब तक की अवधि में भर्ती की गई है जिनके नाम व पते निम्नलिखित हैं।

क्र. स.	जिला का नाम		भर्ती किए गए उम्मीदवारों के नाम व पते

1	2		3
1	अम्बाला	1	श्री ब्रिजेन्द्र सिंह सपुत्र स्व. श्री सुबे सिंह, निवासी, पिनाना जिला, सोनीपत।
		2	श्री धर्मबीर सपुत्र श्री बिशन सिंह, निवासी मकान न. 412/5, मोहर नगर, कुरूक्षेत्र।
		3	श्री जोगिन्द्र सिंह सपुत्र श्री राम सिंह निवासी, खेरी जुलाना जिला हिसार।
		4	श्री चन्द्र पाल सपुत्र श्री देवी लाल, निवासी जुलाना जिला हिसार।
		5	श्री भगत राम सपुत्र श्री राजा राम, निवासी बालनवाली, जिला हिसार।
		6	श्री दिलीप कुमार सपुत्र श्री हीरा लाल निवासी सिनाना, जिला हिसार।
		7	श्री किशोरी लाल सपुत्र श्री शंकर लाल, निवासी अलावलवास, जिला

			हिसार।
		8	श्री सुखविन्द्र सिंह सपुत्र श्री जीत सिंह, निवासी गोविन्दपुरा, जिला सिरसा।
		9	श्री सुरेश कुमार सपुत्र श्री रामेश्वर दत्त, निवासी कोचरा, जिला करनाल।
		10	श्री धीरज कुमार सपुत्र श्री हरवंश लाल, निवासी मकान न. 509/6, चमेली मार्किट रोहतक।
		11	श्री बलबीर सिंह सपुत्र श्री किताब सिंह, निवासी राजपुरा बाहन, जिला जीन्द।
		12	श्री राजेश कुमार सपुत्र श्री राम चन्द्र, निवासी अलीवा, जिला जीन्द।
		13	श्री सतीश कुमार सपुत्र श्री हवा सिंह, निवासी मकान न. 2362, अर्बन अस्टेट, जीन्द।

		14	श्री राम दत्त सपुत्र श्री बृज लाल बिरागी, निवासी डींग, जिला कैथल।
		15	श्री सुभाश चन्द्र सपुत्र श्री जोगी राम, निवासी कलायत, जिला कैथल।
		16	श्री कृश्ण कुमार सपुत्र श्री गोपाल दास, निवासी मनफूल नगर, हिसार।
		17	श्री राहुल देव सपुत्र श्री प्रुसोतम दास, निवासी मकान न. 84/डी काबला नगर, दिल्ली।
		18	श्री रमेश कुमार सपुत्र श्री रामधन निवासी मकान न. 253, गली न. 1 बिशनोई कालोनी, हिसार।
		19	श्री मदन लाल सपुत्र श्री भगत राम, निवासी बुशली जिला करनाल।
		20	श्री कुलदीप सिंह सपुत्र श्री जीवन राम, निवासी दुरजपुर, जिला

			हिसार।
		21	श्री राज सिंह सपुत्र श्री नौरंग राम, निवासी खेरी मशानी, जिला जीन्द।
		22	श्री अशोक कुमार सपुत्र श्री सन्त राम, निवासी सरगथल, जिला सोनीपत।
		23	श्री महेन्द्र सिंह सपुत्र श्री पहलवान सिंह, निवासी गनगली, जिला हिसार।
		24	श्री हीरा सिंह सपुत्र श्री महेन्द्र सिंह, निवासी मुहब्बतपुर, जिला हिसार।
2	कुरूक्षेत्र	25	श्री अनिल कुमार सपुत्र श्री दीप राम, निवासी बरवाला पी.एस. चण्डीमन्दिर, अम्बाला।
3	कैथल	26	श्री संजीव दुग्गल सपुत्र श्री एच. एल. दुग्गल, निवासी मकान न. 1431, हरगोलाल रोड़ अम्बाला कैन्ट।

4	हिसार	27	श्री विशेसर सिंह सपुत्र श्री साधू राम, निवासी पंजोखड़ा, जिला करनाल।
		28	श्री हरिन्द्र कुमार सपुत्र श्री राम दत्त निवासी बुधाना पी.एस. झज्जर, जिला रोहतक।
		29	श्री अजैब सिंह सपुत्र श्री प्रताप सिंह, निवासी मकान न. 139/16 कौशिक नगर जीन्द।
		30	श्री महेन्द्र सिंह सपुत्र अमर नाथ, निवासी कोर पी.एस. निसिंग, जिला करनाल।
		31	श्री पवन कुमार सपुत्र श्री पी.एस. शर्मा, निववासी मार्फत एस.के. बत्तस, एग्जिक्यूटिव अधिकार, मुनिसिपिल कमेटी अम्बाला शहर।
		32	श्री सतबीर सिंह सपुत्र श्री चरती राम, निवासी गोच्छी, जिला रोहतक।

		33	श्री जयप्रकाश सपुत्र श्री टीका राम, निवासी मार्फत बाल मुकन्द शर्मा, मकान न. 27/4, शिवाजी कालोनी, रोहतक।
		34	श्री देश राज सपुत्र श्री हरबंस लाल निवासी मोहरी झुगियां थाना निसिंग, जिला करनाल।
		35	श्री धर्मबीर सपुत्र श्री भौत राम निवासी सागरपुर, थाना अटेली, जिला महेन्द्रगढ़।
		36	श्री विनोद कुमार सपुत्र श्री मुन्शीराम मकान न. 29, एम.सी. कालोनी रोहतक रोडद्व भिवानी।
		37	श्री गुरमेल सिंह सपुत्र श्री गुरबख्श सिंह, निवासी जोधपुर, जिला अम्बाला।
		38	श्री देवेन्द्र यादव सपुत्र श्री मुन्शी लाल, निवासी बलेर खुर्द, थाना सदन रिवाड़ी, जिला रिवाड़ी।

		39	श्री राजबीर सिंह सपुत्र श्री छोटू राम, निवासी हैबतपुर, थाना सदर जीन्द, जिला जीन्द।
		40	श्री तरूण सन सपुत्र श्री रोशन लाल, निवासी मकान न. 37/38 प्रीत नगर, अम्बाला छावनी।
		41	श्री विरेन्द्र देवयोग सपुत्र श्री टी.डी. शर्मा, निवासी मकान न. 460, सैक्टर–12, पंचकुला, जिला अम्बाला।
5	जीन्द	42	श्री मौजी राम सपुत्र श्री राम कुमार, निवासी गुज्जरवास, थाना जाटूशाला, जिला रिवाड़ी।
		43	श्री विनोद कुमार सपुत्र श्री रत्ती रमा निवासी मण्डोल, थाना खोल, जिला रिवाड़ी।
6	भिवानी	44	श्री प्रमोद कुमार सपुत्र श्री राजेन्द्र प्रसाद, निवासी बारोना खुर्द, जिला अम्बाला।

		45	श्री बीर सिंह सपुत्र श्री पतराम, निवासी बास मोहल्ला, जिला महेन्द्रगढ़।
		46	श्री दलीप सिंह सपुत्र श्री मुन्शी राम, निवासी भिवानी, रोहीलन, जिला हिसार।
		47	श्री जय सिंह सपुत्र श्री धर्मपाल, निवासी सिंहगना रोडद्व जिला नारनौल।
		48	श्री विरेन्द्र सिंह सपुत्र श्री चिरन्जी लाल, निवासी पवेरा, जिला महेन्द्रगढ।
7	सिरसा	49	श्री नरेन्द्र सिंह सपुत्र श्री रित ध्वज, निवासी मकान न. 453, देव कालोनी, जिला रोहतक।
		50	श्री हनुमान प्रसाद सपुत्र श्री चत्तर सिंह, निवासी बापरा, थाना सदन, भिवानी, जिला भिवानी।
		51	श्री राजेश कुमार सपुत्र श्री चरण सिंह, निवासी तुम्बहरी, जिला

			रिवाड़ी।
		52	श्री फूल कुमार सपुत्र श्री शमशेर सिंह, निवासी बेरी, जिला रोहतक।
		53	श्री रणधीर सिंह सपुत्र श्री जोहरी लाल, निवासी रामगढ़, बरद्वान जिला कैथल।
		54	श्री जगदीश राय सपुत्र श्री सियो राम, निवासी धोबी, जिला हिसार।
		55	श्री राज सिंह सपुत्र श्री मलिक चन्द, निवासी मकान न. 9, सैक्टर 13, अरबलन स्टेट, कुरूक्षेत्र।
8	नारनौल	56	श्री मुहमंद जमाल सपुत्र श्री याकूब खां, निवासी अलावलपुर, थाना नूंह, जिला गुड़गांव।
		57	श्री बलवान सिंह सपुत्र श्री प्रताप सिंह, निवासी संतोखपुरा, जिला भिवानी।
		58	श्री महेश कुमार सपुत्र श्री ओम प्रकाश निवासी चिरिया, जिला

			भिवानी।
		59	श्री जयपाल सिंह सपुत्र श्री रामदिया, निवासी मोआना, जिला जीन्द।
		60	श्री उदय सिंह सपुत्र श्री घनश्याम सिंह, निवासी लोरी जटरल, जिला भिवानी।
9	रिवाड़ी	61	श्री रतनदीप वाली सपुत्र श्री गोपी चन्द रत्ना, निवासी खरखोदा, जिला सोपीपत।
		62	श्री कृश्ण कुमार सपुत्र श्री लक्ष्मी चन्द निवासी नेत्रश्याम, जिला हिसार।
10	रोहतक	63	कुमारी सुनीता रानी सपुत्री श्री महाबीर प्रसाद, निवासी मकान न. ई–8–ए, रेलवे कालोनी, छोटी लाईन हिसार।
11	करनाल	64	श्री बलजीत सिंह सपुत्र श्री जोगिन्द्र सिंह, निवासी नगला, जिला

			कुरूक्षेत्र।
		65	श्री रमेश चन्द सपुत्र श्री पन्नू राम, निवासी उमरी, जिला कुरूक्षेत्र।
		66	श्री मनबीर सिंह सपुत्र श्री चत्तर सिंह, निवासी तल्लू थाना भिवानी खेड़ा, जिला भिवानी।
		67	श्री ओम प्रकाश किन्जा सपुत्र श्री देवी साही, मकान न. 251, सिविल लाईन, गुड़गांव।
		68	श्री शीतल झांगड़ा सपुत्र श्री बीर सिंह, निवासी आर्यनगर, हिसार।
12	सोनीपत	69	श्री विरेन्द्र सिंह सपुत्र श्री प्रभु सिंह, निवासी कुम्भा, जिला हिसार।
		70	श्री शमशेर सिंह सपुत्र श्री साधु सिंह, निवासी सिन्धवी खेड़ा, जिला जीन्द।
		71	श्री गुरदयाल सिंह सपुत्र श्री हमीरा राम, निवासी आर्य नगर, हिसार।

		72	श्री रमेश कुमार सपुत्र श्री शिव दयाल, निवासी मकान न. 340/20, रूप नगर, हांसी (हिसार)।
		73	श्री यशपाल सिंह सपुत्र श्री जगदेव सिंह, निवासी दमदमा थाना सोहना, जिला गुड़गांव।
13	पानीपत	74	कुमारी कुलदीप कौर सपुत्री श्री सुरजीत सिंह, निवासी लखनोरा साहब, जिला अम्बाला।
		75	श्री राजीव कुमार सपुत्र श्री धर्मपाल सिंह, मौहल्ला चन्दुबारा, जिला नारनौल।
		76	श्री सतीश कुमार सपुत्र श्री श्री भगवान, गांव व डा. कानोनधा, जिला रोहतक।
		77	श्री आत्मा राम सपुत्र श्री राम नारायण, निवासी महालसरा मण्डी आदमपुर, (हिसार)।
		78	श्री औम प्रकाश सपुत्र श्री घनश्याम दास, निवासी कबरल, जिला

			हिसार।
		79	श्री वाली सिंह सपुत्र श्री मोमन राम, निवासी बन्दा हेडी, जिला हिसार।
		80	श्री पवन कुमार सपुत्र श्री जनारधन मकान न. 250 हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, जीन्द।
		81	श्री विरेन्द्र सिंह सपुत्र श्री जगमाल सिंह, निवासी टिकली, जिला गुड़गांव।
		82	श्री शिव कुमार सपुत्र श्री सुखपाल सिंह निवासी मंगली सुरतिया, जिला हिसार।
		83	श्री सन्त कुमार सपुत्र श्री कृश्ण लाल, निवासी डिंग टी–स्टाल गणेश मार्किट दुकान न. 83, नजदीक होस्टल, जी.सी. हिसार।
		84	श्री सत्यपाल सपुत्र श्री हरी सिंह, निवासी शास्त्री कालौनी, आर.एस. डी. हाईस्कूल के पीछे, जिला

			सिरसा।
		85	श्री दलबीर सिंह सपुत्र श्री भाग सिंह, निवासी लोहाखड़ी, तहसील टोहाना, जिला हिसार।
14	कमाण्डो स.उ. निरीक्षक	86	श्री टेकन राज सपुत्र श्री बाली राम निवासी, कम्वासी, जिला अम्बाला।
		87	श्री अजय कुमार सपुत्र श्री बनारसी दास, निवासी नजदीक टुडंला हाई स्कूल कलहारी रोडद्व अम्बाला शहर।
		88	श्री रविन्द्र कुमार सपुत्र श्री महेन्द्र सिंह मकान न. 162, जवाहर नहर गली न. 8, हिसार।
		89	श्री नरेन्द्र सिंह सपुत्र श्री प्रलाद सिंह निवासी चिमनी जिला रोहतक।
		90	श्री रविन्द्र सिंह सपुत्र श्री शंकर लाल, निवासी मोडा खेडा, जिला हिसार।

		91	श्री विजय सिंह सपुत्र श्री जय नारायण, निवासी मुक्लान, जिला हिसार।
		92	श्री जोगेन्द्र सिंह सपुत्र श्री हरी सिंह निवासी लाखन माजरा, जिला रोहतक।
		93	श्री सरीफ सिंह सपुत्र श्री सुख राम, निवासी आर्यनगर, जिला हिसार।
		94	श्री जगदीश कुमार सपुत्र श्री राम चन्द, निवासी गांव कोकाश, डा. कुरी जिला हिसार।
		95	श्री पृथ्वी सिंह सपुत्र श्री भूप सिंह, निवासी बधीपाल, जिला हिसार।
		96	श्री भूप सिंह सपुत्र श्री मेला राम, निवासी मधासरा, जिला हिसार।

Deaths Occurred in Police Custony

164. Sh. Karan Singh Dalal: Will the Chief Minister be pleased to state –

(a) whether any deaths have occurred in police custody during the year 1994 in Palwal City, if so, the number

thereof, togetherwith the action taken against the persons held responsible; and

(b) whether any relief has been given to the members of the families of deceased as mentioned in part (a) above, if so, the details thereof?

मुख्यमंत्री (चौ. भजन लाल):

(क) वर्श, 1994 के दौरान थाना शहर पलवल में कोई मृत्यु नहीं हुई। अपितु दिनांक 30.1.94 को एक व्यक्ति नानक पुत्र रामशरण बाल्मीकि वासी बडौली थाना हसनपुर जिला फरीदाबाद ने थाना सदर पलवल में पुलिस हिरासत में आत्म हत्या की थी। अपने कार्य में कोताही बरतने वाले पुलिस कर्मचारियों को निलम्बित किया जा चुका है तथा उनके विरूद्ध विभागिय कार्यवाही की गई है।

(ख) हां। मृतक व्यक्ति के परिवार के सदस्यों को 10000 रूपये की अनुदान राशि दी गई है और उसके तीनों लड़कों में से प्रत्येक को 40000 रूप्ये के यू.टी.आई. बौंड दिये जायेंगे, जिनका भुगतान उन्हें 21 वर्श की आयु पूरी होने पर होगा।

Pollution

165. Sh. Karan Singh Dalal: Will the Minister for Forest and Environment be pleased to state the number of Industrial Units in Palwal and Hathin which have not installed

effluent treatment plants for controlling pollution togetherwith the action taken against them so far?

वन मंत्री (राव इन्द्रजीत सिंह): तीन। पलवल की दो तथा हथीन की एक औद्योगिक इकाईयों ने मल निस्त्राव शोधन संयंत्र नहीं लगाए हुए हैं। इन इकाईयों को नोटिस जारी किये जा चुके हैं।

मुख्यमंत्री (चौ. भजन लाल):

(अ) तथा (ब) वांछित सूचना हरियाणा विधान सभा पटल पर रख दी गई है। 2. जिला पुलिस अधीक्षकों, आदेशकों, ह.स.पु. बटालियनों तथा पुलिस अधीक्षक कमाण्डों, तथा दूर संचार विभाग द्वारा भर्ती किए गए जवानों के नाम पते आदि सम्बन्धी सूचना दिए जाने में जितना समय व परिश्रम लगेगा, उसकी तुलना में होने वाले सम्भावित लाभ से बहुत अधिक होगा।

सूचना

क्र.स.	जिला	1987	1988	1989	1990	1991	कुल
1	अम्बाला		7	419			426
2	यमुनानगर				2	2	4
3	कैथल				1	1	2
4	कुरूक्षेत्र		5	300	2		307

5	रोहतक	8	5	213	1	1	229
6	सोनीपत		5	158	2	4	169
7	पानीपत				3		3
8	करनाल	2	4	287		4	297
9	गुड़गांव		5	196	4	3	208
10	फरीदाबाद	1	4	304	1	1	311
11	नारनौल	2	3	202	5	1	213
12	रिवाड़ी						
13	हिसार	14	7	399	17	3	440
14	भिवानी		4	130	18		152
15	सिरसा		4	220			224
16	जीन्द		7	194	3	3	207
17	रेलवे		5	357		4	366
18	कमाण्डो		385	1			386
19	दूरसंचार	70	192	410	59	17	748

20	प्रथम वाहिनी	40	40	96	21	285	482
21	द्वितीय वाहिनी	78	704	435		366	1583
22	तृतीय वाहिनी	64	20	72	15	359	529
23	चतुर्थ वाहिनी	68	965	208	27	672	1940
24	पंचम वाहिनी	76	566	276	99	32	1049
	कुल योग	423	2937	4876	280	1759	10275

ध्यानाकर्शण प्रस्ताव

प्रो. राम बिलास शर्मा: स्पीकर साहब, मेरा एक काल अटैंशन मोशन था एक दूसरी बात यह है कि कल जो कुछ हुआ, उस संदर्भ में एक बात हुई है। जो आपके साथ है वह स्पीकर्ज गैलरी कहलाती है, वह हाउस का एक बहुत ही इम्पौर्टैन्ट हिस्सा है। वहां पर एक्स एम.एल.ए. और बाकी इम्पौर्टैन्ट लोग बैठते हैं। पता नहीं किस के आदेश से, आज वहां पर हरियाणा के कमांडोज बिठा दिये गये हैं। हमें यह पता नहीं चला कि किसके आदेश से ये वहां पर बिठाये गये हैं। मैं आपके नोटिस में यह बात लाना चाहता हूं और आप इस चीज को वैरीफाई करें। कल जो कुछ भी हुआ, वह तो हो लिया, लेकिन इस तरह की परम्परा क्यों डाली जा रही है। किसके आदेश से ये यहां पर आये हैं, आप इस बात को वैरीफाई करें। स्पीकर साहब, इस तरह से तो गलत परम्परा

पड़ जायेगी। यह बात मैंने आपके नोटिस में लाने के लिये कही है।

श्री अध्यक्ष: यहां कोई कमांडोज नहीं हैं।

प्रो. राम बिलास शर्मा: सर, अभी भी 15–20 वहां पर बैठे हैं। इसके अलावा मैंने एक काल अटैंशन मोशन दिया है कि अम्बाला छावनी में माफिया गिरोह बहुत सक्रिय है। वहां पर लगातार नाजायज कब्जे हो रहे हैं। विधवाओं की जमीन गलत तरीके से हड़प की जा रही है।

श्री अध्यक्ष: आज सुबह 9.57 पर आपका यह नोटिस आया है। अभी गवर्नमैंट से इसके कमैंटस मांग रहे हैं।

प्रो. छतर सिंह चौहान: स्पीकर साहब, मैंने भी आपकी सेवा में एक काल अटैंशन मोशन दिया है। अभी पिछले दिनों 23 फरवरी को माननयी मुख्यमंत्री महोदय लोहारू में गये थे। वहां पर बिजली नहीं है और टयूबवैल्ज खराब पड़े हैं। इस तरह से वहां पर न बिजली है और न ही पानी है। महिलाओं ने जब इसके रोश में जुलूस निकाला और मांग की तो उन पर पुलिस द्वारा डंडे बरसाये गये।

श्री अध्यक्ष: आपका काल अटैंशन मोशर अंडर कंसीड्रेशन है।

श्री राम भजन अग्रवाल: अध्यक्ष महोदय, मेरा एक काल अटैशन मौशन है। कल सुबह ही दिया था। भिवानी शहर के अन्दर पीलिया की बीमारी से कम से कम एक हजार आदमी बीमार हैं। वहां पर सीवर का पानी शहर की वाटर सप्लाई में मिक्स हो रहा है। पिछले सैशन में मुख्यमंत्री महोदय ने आश्वासन दिया था।

श्री अध्यक्ष: आपका यह नोटिस 15 तारीख के लिये फिक्स किया है।

चौ. ओम प्रकाश बेरी: स्पीकर साहब, मैंने भी एक काल अटैंशन मोशन दिया है। चार पार्टियों की तरफ से धरना दिया जा रहा है और डंकल प्रस्ताव पर गिरफतारियां दी जा रही हैं। दक्षिणी हरियाणा के लिये जेा पानी का गलत बंटवारा हो रहा है, उस बारे में और भ्रश्टाचार के बारे में सरकार का ध्यान आकर्शित करने के लिये ऐसा किया जा रहा है।

श्री अध्यक्ष: आपका यह मोशन अभी अंडर कंसीड्रेशन है।

श्रीमती चन्द्रावती: अध्यक्ष महोदय, मेरा एक ध्यानाकर्शण प्रस्ताव था कि राश्ट्रीय मार्ग नम्बर 1 जो हरियाणा के बीचों बीच गुजरता है तथा अब इसे चारमार्गी बना दिया जाएगा परन्तु इस पर पशुओं और मनुश्यों के लिये कोई क्रांसिग नहीं है जबकि प्रत्येक देश के राश्ट्रीय राजमार्गो पर हर 10 किलौमीटर पर पशु क्रासिंग

होते हैं। परन्तु हमारे देश में इसका कोई प्रावधान नहीं है। मैं अपने इस काल अटैन्शन मोशन का फेट जानना चाहती हूं।

श्री अध्यक्षः चन्द्रावती जी, आपका यह काल अटैन्शन मोशन 8 तारीख के लिये लगा दिया गया है।

श्रीमती चन्द्रावतीः धन्यवाद।

डा. राम प्रकाशः अध्यक्ष महोदय, मैंने भी एक ध्यानाकर्शण प्रस्ताव दिया था कि एस.सी., एस.टी. व बी.सी. के कर्मचारियों को सरकारी नौकरियों रोस्टर प्वायंट पर मिलती चाहिये। पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने भी अभी हाल ही में रामकुमार चौहान बरसिज राज्य सरकार तथा प्रताप सिंह गहलौत वरसिज राज्य सरकार के केसों में उक्त नीति को वैध ठहराया है तथा आदेश दियं हैं कि एस.सी., एस.टी. व बी.सी. कर्मचारियों को रौस्ट–प्वायंट पर पदोन्नति तथा वरियता दी जाए। लेकिन सरकार ने अभी तक इस नीति को लागू नहीं किया जिससे इन वर्गो से सम्बन्धित कर्मचारियों में चिन्ता एवं रोश व्याप्त है। अगर कोई सज्जन हाई कोर्ट के फैसले को लागू करने के विरूद्ध सुप्रीम कोर्ट में गया तो सरकार ने उक्त निर्णय को पुश्टि करने के लिए वकील तक नहीं किया। अतः मैं यह जानना चाहता हूं कि मेरे इस ध्यानाकर्शण प्रस्ताव की फेट क्या है? मैं चाहूंगा कि मुख्यमंत्री महोदय इस नीति के लागू करने के सम्बन्ध में उठाए गये पगों के विशय में इस सदन में एक वक्तव्य दें।

Mr. Speaker: Call attention motion No. 4 given notice of by Dr. Ram Parkash regarding filling up of vacancies, posts nad seniority of Scheduled Castes/Backward Classes/Scheduled Tribes has been disallowed because the terms and conditions of the service of the Govt. employees do not form the subject matter of calling attention motion.

प्रो. छतर सिंह चौहान: अध्यक्ष महोदय, कल मैंने और श्री रामभजन जी ने दो तीन काल अटैन्शन मोशंज दिये थे कि भिवानी जिला में बिजली की कमी है जिसके कारण फसलें सूख रही हैं। नहरों का पानी भिवानी जिला में नहीं मिल रहा है जिसकी वजह से रबी की फसल को काफी नुकसान हो रहा है और सरकार कह रही है कि बारिश होगी। तीसरा यह था कि सीवरेज का पानी भिवानी शहर में फैल रहा है जिसके कारण बीमारी फैलने का डर है। अतः सरकार को इस बारे में ब्यान देना चाहिये कि सरकार क्या उपाय कर रही है?

Mr. Speaker: It is under consideration.

चौ. ओम प्रकाश बेरी: स्पीकर सर, मेरा एक बड़ा ही इम्पोटैन्ट काल अटैन्शन मोशन था जो रूट परमिटस देने के बारे में है जिसमें बड़ी धांधलेबाजी हुई है। सरकार ने ड्रा आफ लाटस की तारीख, समय और स्थान के बारे में किसी किस्म की कोई वाइड पबलिसिटी नहीं की और सारा काम ही चुपचाप कर लिया गया जिससे अन–इमपलायड नौजवानों में बड़ा भारी रोश व्याप्त है। मैं चाहता हूं कि सरकार इस बारे में अपनी स्थिति स्पश्ट करे।

श्री अध्यक्ष: यह सरकार को कमैन्टस के लिये भेजा हुआ है।

गैर–सरकारी प्रस्ताव –

शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने तथा परीक्षाओं में नकल करने की बुराई का उन्मूलन करने सम्बन्धी

Mr. Speaker: Hon'ble Members, now discussion on Non-Official Resolution, which was moved by Sh. Mani Ram Keharwala MLA on 4.3.1993, will be resumed. Sh. Ramesh Kumar MLA was on his legs. He may now continue his speech. इस रैजोल्यूशन पर कुल मिलाकर अब तक केवल दो घंटे ही बोला गया है।

प्रो. राम बिलास शर्मा: अध्यक्ष महोदय, मेरी आपसे रिक्वस्ट है कि इस रैजोल्यूशन पर डिस्कशन कन्कलूड करवाने की कृपा करें ताकि सिकी और साथी का दूसरा नान–आफिशयल रैजोल्यूशन आ जाए।

श्री रमेश कुमार (बड़ौदा–अनुसूचित जाति): स्पीकर साहब, आपका बहुत–बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे बोलने का समय दिया। आज चौ. भजन लाल की सरकार शिक्षा के बारे में बड़ा दावा करती है कि उन्होंने शिक्षा के स्तर को बहुत ऊंचा उठा दिया है और कहते हैं कि आज शिक्षा के बारे में हरियाणा प्रदेश किसी से पीछे नहीं है। अध्यक्ष महोदय, में बताया चाहता हूं कि आज की सरकार ने शिक्षा का स्तर जितना नीचे किया है उतना

आज तक और सिी सरकार के समय नहीं हुआ। आज सरकारी स्कूलों में पढ़ाई अच्छी नहीं होती। सरकारी स्कूलों के अध्यापक स्कूलों में आते हैं और बच्चों को न पढ़ा कर अपना समय बिता कर चले जाते हैं। उनको तो अपनी तनखाह चाहिए, उनका बच्चों के भविश्य से कोई लगाव नहीं है। इस वजह से बच्चों के मां बाप को अपने बच्चों को प्राईवेट स्कूलों में भेजना पड़ता है। (इस समय श्री उपाध्यक्ष पदासीन हुए) उपाध्यक्ष महोदय, क्योंकि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई अच्छी नहीं होती इसलिए बच्चों के मां बाप को ज्यादा खर्चा करना पड़ता है। आपको पता ही है कि प्राइवेट स्कूलों में फीस ज्यादा होती है। आप कांग्रेस की सरकार गूंगी बनी बैठी है और शिक्षा की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रही है। आज प्राइवेट स्कूलों की मैनेजमैंट अपनी मनमर्जी से फीस चार्ज करती है, उसकी तरु सरकार को कोई ध्यान नहीं है। आज हर जगह पर प्राइवेट स्कूलों का दुकान के तौर पर प्रयोग किया जा रहा है। वहां पर टीचर्ज को भी मनमर्जी से तनखाहें दी जा रही हैं। आज जितने भी जे.बी.टी., बी.ए. ओर बी.एड. मास्टर भर्ती किये जाते हैं यह सब पैसे की खातिर किए जाते हैं। कोई भी लड़का मैरिट के आधार पर भर्ती नहीं किया जाता। आज 80–90 हजार रूपए लेकर इनकी भर्ती हो रही है। आज यह सरकार चुप हो कर बैठी है इसलिए शिक्षा का स्तर नीचे जा रहा है। उपाध्यक्ष महोदय, आज सारे हरियाणा के अन्दर किसी भी स्कूल या कालेज में पूरा स्टाफ नहीं है। खासतौर पर हमारे जो विपक्ष के हल्के हैं उनके अन्दर स्टाफ पूरा नहीं है। मेरे हल्के में बड़ौदा, बनवासा, ज्वारा और

मुडलाना में स्टाफ पूरा नहीं है। वहां पर न मैथ के टीचर्ज हैं, न साइंस के टीचर्ज हैं ओर न सामाजिक शिक्षा के टीचर्ज हैं। इस प्रकार से शिक्षा का स्तर नीचे जा रहा है। आज की कांग्रेस की सरकार टीचर्ज की तरफ और शिक्षा की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रही है और आज बच्चों का भविश्य अन्धेरे में जा रहा है। आज स्कूलों की बिल्डिंगज की भी बहुत बुरी हालत है क्योंकि ये बिल्डिंग्ज बहुत पुरानी हैं। बरसात के दिनों में इनका गिरने का भय रहता है जिससे बच्चों की जान का खतरा रहता है। लेकिन आज भी उन भवनों को बदला नहीं जा रहा है। इसके बावजूद भी आज की कांग्रेस की सरकार कह रही है कि हरियाणा में शिक्षा का स्तर हर तरह से बढ़ रहा है। लेकिन इनको यह नहीं पता कि हरियाणा में शिक्षा का स्तर हर तरह से बढ़ रहा है। लेकिन इनको यह नहीं पता कि हरियाणा के अन्दर कुछ डुप्लीकेट और जाली प्रमाण पत्र देकर लड़कों को भर्ती किया जा रहा है। ये प्रमाण पत्र चाहे यूनिवर्सिटी के हों या स्कूलों के हों ये खुले आम दिए जाते हैं और कांग्रेस सरकार चुप बैठी है। पिछले साल करनाल के अन्दर एक सुरेन्द्र नाम के लड़के को जाली प्रमाण पत्र दिया गया लेकिन सरकार ने उस पर कोई कार्यवाही नहीं की। आज तक वह लड़का धक्के खाता फिर रहा है। उस आदमी के विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गइ जिसने उसको जाली प्रमाण पत्र दिया है। इस प्रकार से बच्चों को जाली प्रमाण पत्र दे करके उनके भविश्य के साथ खिलवाड़ किया जाता है और भजन लाल सरकार बिल्कुल गूंगी बहरी बन कर बैठी देख रही है। यह सरकार शिक्षा की तरफ

कोई ध्यान नहीं दे रही है। अध्यापक बच्चों को स्कूलों में पढ़ाते है। जिस अध्यापक को जो सब्जैक्ट पढ़ाना होता है, वह अध्यापक उस सब्जैक्ट के बारे में अपने घर पर तैयारी करके नहीं आता है बल्कि गाइड खोलकर बैठ जाता है। वह अध्यापक, बच्चों के सामने जब बोर्ड पर कोई सवाल समझाना होता है तो गाइड खोल करी बोर्ड पर लिखता है। इस तरह से बच्चों के भविश्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। क्या इस तरह की पढ़ाई से बच्चों को अच्छी शिक्षा मिल पाएगी? आज प्रदेश में बच्चों की पढ़ाई का स्तर गिरता जा रहा है और हरियाणा सरकार चुप बैठकर देख रही है, शिक्षा की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रही है। ऐसे अध्यापकों के विरूद्ध भी कोई कार्यवाही नहीं की जाती है जो बच्चों की पढ़ाई की तरफ कोई ध्यान नहीं देते। इसलिए शिक्षा का स्तर दिन प्रति दिन गिरता जा रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय, आज यह सरकार कहती है कि लड़कियों को फ्री–शिक्षा दी जा रही है। मैं कहता हूं कि आज लड़कियों की शिक्षा का स्तर नीचे गिरता जा रहा है। जो लड़कियों आस पास के दूर दूर के गांवों में पढ़ने जाती हैं, उनको बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है।जवान लड़कियां जब बसों में बैठकर जाती हैं तो लडत्रके उनके साथ गलत हरकतें करते हैं जिसके कारण उनके मां बाप का नाम बदनाम होता है। लड़कियां शर्म के कारण अपनी गर्दन झुका लेती हैं और कुछ दिन के बाद स्कूल में जाना बन्द कर देती हैं। यह सरकार उन

लड़कियों की इस समस्या को ओर कोई ध्यान नहीं दे रही है। सरकार को उनके लिए ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए जिससे लड़कियों को स्कूलों में आने जाने के लिए सहुलियत हो। जब लड़कियों आस पास के स्कूलों में पढ़ने के लिए जाएं तो उनको किसी प्रकार की कोई परेशानी न हो लेकिन यह सरकार चुप बैठ कर देख रही है और लड़कियों के लिए सिकी प्रकार की सहूलियत का प्रबंध नहीं कर रही है। मेरे हल्के में बरोदा, छिछड़ाना, भण्डेरी, आहुलाना, कथुरा, मिर्जापुरखेड़ी गांवों की लड़कियां आस पास के स्कूलों में पढ़ने के लिए जाती हैं और वे लड़कियां बसों में बैठ कर उन स्कूलों में जाती हैं लेकिन बसें पीछे से सवारियों से भरी हुई आती हैं, इसलिए लड़कियों को बसों में जगह नहीं मिलती है, कई लड़कियां तो बस में चढ़पे से रह जाती हैं जिसके कारण वे स्कूलों में समय पर नहीं पहुंच पाती। यह कांग्रेस पार्टी की सरकार लड़कियों की शिक्षा की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रही है, चुप बैठ कर देख रही है।

इसी तरह से मैं एक बात भी कहना चाहूंगा कि बच्चों को स्कूलों में समय पर एडमिशन नहीं मिलता। जब बच्चे एक क्लास का एग्जाम दे देते हैं तो उनका रिजल्ट समय पर नहीं आता जिसके कारण बच्चों को एडमिशन नहीं मिल पाता। जब बच्चों के एग्जाम का रिजल्ट आता है तो उस समय उनके एडमिशन को डेट निकल जाती है। जब बच्चे एडमिशन के लिए जाते हैं तो अध्यापक कहते हैं कि एडमिशन की डेट निकल गई

है। इस तरह से बच्चों के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। यह सरकार कहती है कि रोजगार को बढ़ावा दिया जा रहा है। अगर बच्चों के एडमिशन की डेट निकल जाए और उनको एडमिशन न मिले तो उनकी जिन्दगी बेकार हो जाती है। उन बच्चों के मां बाप दिन रात अपने खून पसीने की कमाई उन बच्चों की पढ़ाई पर खर्च कर रहे हैं, यदि उनको एडमिशन ही नहीं मिलेगा तेा वे अपने बच्चों को कैसे कामयाब करेंगे? उनके बच्चे कैसे आगे बढ़ पाएंगे। भजन लाल सरकार मूक बन कर बैठी हुई है। गूंगी और बहरी बन कर बैठी हुई है। यह सरकार बच्चों की शिक्षा की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रही है। उपाध्यक्ष महोदय, बादली में एक कालेज खोलने के बारे में सरकार ने मन्जूरी दी थी लेकिन आज तक वह कालेज नहीं खोला है। उस कालेज की बिल्डिंग बना कर दी गई थी लेकिन वह ऐसे ही पड़ी है। बादली में कालेज न होने के कारण बादली के आस पास के लड़कों को काफी दिक्कत हो रही है लेकिन हरियाणा सरकार उस कालेज को खोलने के बारे में कोई ध्यान नहीं दे रही है। मैं कहता हूं कि इस सरकार को वह कालेज खोलने के बारे में ध्यान देना चाहिए। उपाध्यक्ष महोदय, टीचर्ज के ट्रांसफर्ज के बारे में ब्यान दे दिया जाता है कि अब ट्रांसफर पर बैन लगा दिया गया है। अब टीचर्ज के ट्रांसफर नहीं होंगे लेकिन यह सरकार उनकी ट्रांसफर फिर भी करती है क्योंकि जो सिफारिशी आदमी हैं, वे अपनी मनमर्जी की जगहों पर चले जाते हैं और जो बगैर–सिफारिश के टीचर हैं, उनकी कोई सुनवाई नहीं होती और न ही उनकी इच्छानुसार उनको ट्रांसफर

हो रहा है। (घंटी) इस प्रकार से कागजों में ही कह देते हैं कि टीचरों के ट्रांसफर को रोक दिया गया है जबकि असल में सिफारिश वाले टीचरों का ट्रांसफर होता रहता है। यह सरकार कहती है कि हमने हरिजनों के बच्चों की शिक्षा की तरफ अधिक ध्यान दिया है जबकि असलियत यह है कि हरिजन बच्चचों की शिक्षा की तरु अधिक ध्यान दिया है जबकि असलियत यह है कि हरिजन बच्चों की शिक्षा का स्तर जितना चौ. भजन लाल जी की सरकार में गिरा है, उतना आज तक किसी भी सरकार ने नहीं गिरा। सरकार की तरफ से हरिजन बच्चों को न तो समय पर फीस दी जा रही है और न ही उनको वर्दी आदि दी जा रही है। इतना ही नहीं, हरिजन बच्चों को जो स्टाईपैण्ड मिलना चाहिए, वह भी समय पर नहीं मिलता। मैं सरकार के ध्यान में लाना चाहता हूं कि गोहारा में जो कालेज है वहां पर हरिजन बच्चों को स्टाईपैण्ड पिछले एक डेढ़ साल से रूका पड़ा है। इसलिए मेरी सरकार से मांग हे कि उनको स्टाईपेण्ड जल्दी से जल्दी दिया जाये ताकि वे अपनी वर्दी आदि सिलवा सकें और अपनी पढ़ाई अच्छी प्रकार से कर सकें।

उपाध्यक्ष महोदय, पहले स्कूलों में साल छः महीने में बच्चों को देखने के लिए डाक्टर जाते थे और उनमें जो छोटी–मोटी बीमारी होती थी, उसाक ईलाज कर आते थे लेकिन अब इस मौजूदा सरकार ने डाक्टरों को स्कूल में भेजना बन्द कर दिया है। मेरी सरकार से गुजारिश है कि इस तरफ ध्यान दिया

जाये और टाईम पर डाक्टर्ज को स्कूलों में भेजा जाये ताकि उन बच्चों की छोटी–मोटी बीमारी का इलाज हो सके और वे अपनी पढ़ाई अच्छी प्रकार से कर सकें। उपाध्यक्ष महोदय, आज हरियाणा के बहुत से स्कूलों में बिजली नहीं है जिस कारण बच्चों की पढ़ाई ठीक तरह से नहीं हो पाती। बिजली न होने के कारण न तो बच्चे पढ़ पात हैं ओर न ही टीचर बच्चों को अच्छी प्रकार से पढ़ा पाते हैं। आपको मालूम है कि जेठ के महीने की गर्मी में अन्दर नहीं बैठा जा सकता क्योंकि अन्दर घुटन होती है और न ही बाहर बैठा जाता है क्योंकि बाहर तेज धूप होती है। इसलिए मेरी सरकार से मांग है कि गांवों में जिन स्कूलों में बिजली का प्रबन्ध नहीं है, उनमें बिजली का प्रबन्ध किया जाये ताकि पंखे चल सकें और बच्चों की पढ़ाई ठीक प्रकार से हो सके।

उपाध्यक्ष महोदय, यह सरकार कहती है कि हम सभी को साथ लेकर चलते हैं और सिकी के साथ कोई भेदभाव नहीं करते। आज की सरकार सबको साथ लेकर नहीं चल रही बल्कि लोगों के मुंह पर चपेड़ मार रही है लेकिन आने वाले समय में जनता इस सरकार पर चपेड़ मार कर इनका जवाब दे देगी (घंटी)

श्री मनी राम केहरवाला: उपाध्यक्ष महोदय, यह जो प्रस्ताव रखा गया था, इसमें यह था कि शिक्षा का जो स्तर गिरता जा रहा है, उसको कैसे ऊपर उठाया जाये और जो हमें नया सिस्टम अपनाना चाहिए, वह किसी प्रकार का होना चाहिए, इस पर

बात होनी चाहिए थी। जबकि श्री रमेश कुमार जी इन बातों को छोड़कर दूसरी बातों की तरफ ही जा रहे हैं।

श्री उपाध्यक्ष: मैं आपको याद दिला दूं कि जिस रैजोल्यूशन पर बहस हो रही है वह रैजोल्यूशन इस प्रकार है –

"This House recommends to the State Government take appropriate steps to improve the system of education in order to make it job oriented."

एक रैजोल्यूशन तो यह है और दूसरा रैजोल्यूशन यह है :–

"This House further recommends that immedidate necessary action may be taken bythe State Government to eradicate the evil of copying in examinations in the State."

इस रैजोल्यूशन में यह दो मुद्दे हैं इसलिए आप केवल इन्हीं पर बोलें।

श्री रमेश कुमार: डिप्टी स्पीकर साहब, जो बात मैं कह रहा हूं, वह इससे मिलती जुलती ही है। यह सवाल सारे हरियाणा की शिक्षा का है। मैं कह रहा था कि सरकार में जो भर्ती होती है, वह ये लोग अपनी मनमर्जी से करते हैं, इसमें हर जिले को बराबर का हिस्सा मिलना चाहिए। जब भर्ती होती है तो उसमें या तो हिसार जिले से लोगों को लिया जाता है या फिर कालका का ध्यान रखा जाता है। जो बी.एड. और जे.बी.टी. की भर्ती होती है,

उनमें कालका और हिसार के अतिरिक्त बाकी जिलों की उपेक्षा हुई है।

श्री उपाध्यक्ष: आप अपनी बात को कन्कलूड कीजिए।

श्री रमेश कुमार: उपाध्यक्ष महोदय, आज हरियाणा सरकार कहती है कि हम सारे हरियाणा में पानी दे रहे हैं। (विघ्न) आज हरियणा के स्कूलों और कालेज के बच्चों को पीने के पानी की सुविधा नहीं है जिसकी वजह से बच्चे परेशान होते हैं। जैसे कि मेरा हल्का बड़ौदा है और मुढलाना गांव और इसके साथ ही कई और गांव हैं जिनमें बच्चों को लिए पीने का पानी नहीं जिसके कारण उन्हें बड़ी दिक्कत होती है और स्टाफ को भी दिक्कत होती है। उपाध्यक्ष महोदय, हरियाणा के अन्दर लड़कियों और लड़कों के जो शौचालय हैं, उनमें सफाई नहीं की जाती है। सफाई न होने के कारण बच्चों में बीमारी फैलने का डर बना रहता है। इस बारे सरकार को ध्यान देना चाहिए और सफाई का प्रबन्ध होना चाहिए। उपाध्यक्ष महोदय, विपक्षी विधायकों के हल्कों के जो भी स्कूल्ज हैं, उनको अपग्रेड नहीं किया जा रहा है, चहो वह बड़ौदा का क्षेत्र है, चाहे वह बादली का क्षेत्र है, वहां कोई स्कूल अपग्रेड नहीं किया गया है। इस सरकार को इस तरफ भी ध्यान देना चाहिए। (घंटी) उपाध्यक्ष महोदय, बहुत से स्कूलों में साईस टीचर्ज नहीं होते और कई स्कूलों में साईस टीचर्ज तो हैं लेकिन साईस की प्रैक्टिकल प्रशिक्षण देने के लिए साईस का सामान और उपकरण नहीं हैं, जिस कारण बच्चों को प्रैक्टिकल

ट्रेनिंग नहीं दी जा सकती। हर स्कूल में साईस टीचर्ज और साईस का सामान उपलब्ध होना चाहिए जिससे वहां के बच्चे ठीक प्रकार से साईस का प्रशिक्षण प्राप्त करें। बच्चों को ठीक प्रशिक्षण मिलना चाहिए जिससे बच्चों का भविश्य अच्छा बने और टीचज्र की गरिमा भी बनी रहे। उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने के लिए जो समय दिया है, उसके लिए मैं आपका धन्यवाद करते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

11.00 बजे

श्री अमर सिंह (बवानी खेड़ा–अनुसूचित जाति): उपाध्यक्ष महोदय, इस समय हाउस में जो नान ऑफिशियल रैजोल्यूशन चल रहा है जिसकी श्री मनीराम केहरवाला जी ने रखा था, उसमें यह था :–

"This House recommends to the State Government to take appropriate steps to improve the system of education in order to make it job-oriented."

It further says :-

"This House further recommends that immedidate necessary action may be taken by the State Government to eradicate the evil of copying in examinations in the State."

डिप्टी स्पीकर साहब, हमारा भारत देश ऋशि–मुनियों का देश रहा है और यह धरती ऋशि–मुनियों की धरती रही है। पहले हमारे देश में ऐजूकेशन का वह सिस्टम चलता था जिससे

महान योद्धा बनते थे, धनुरधारी बनते थे, तीर–अन्दाज बनते थे और उस वक्त हर फन में काबलियत को देखा जाता था। 15 अगस्त, 1947, देश की आजादी के बाद, व्हाईट कालर जाब देने का जो ऐजुकेशन सिस्टम था, जिसको कि अंग्रेजों ने चलाया था, उसको एबोलिश कर दिया जाना चाहिए था। एजुकेशन को जाब ओरिऐटिड बनाया जाना चाहिए था परन्तु देवयोग से 15 अगस्त, 1947 के बाद से ये दोनों ही बातें नहीं हो पाई। इसी एजुकेशन सिस्टम की वजह से हर साल हम व्हाईट कालर क्लास पैदा कर रहे हैं। जब तक हमारा एजुकेशन का सिस्टम हमारे देश और हमारी जरूरत के मुताबिक नहीं होगा और वर्तमान सिस्टम बन्द नहीं होगा, देश का और प्रदेश का भला नहीं हो सकता और लाजमी तौर पर भ्रश्टाचार बढ़ेगा और बेरोजगारी फैलेगी। इसी तरह से बहुत सारी चीजों में आज के एजुकेशन सिस्टम के कारण तरक्की नहीं हो पा रही है। पहले जब हम पढ़ा करते थे, उस समय गुरू और चेले का सिस्टम था और टीचर्ज के प्रति बच्चों के मन में आदर का भाव था। एजुकेशन का एक ऐसा सिस्टम था जिसमें शिक्षा के सामने मस्तक झुकता था। डिप्टी स्पीकर साहब, आज हमारा ऐजुकेशन सिस्टम ऐसा बदल गया है कि हम समझते हैं कि बी.ए. या एम.ए. पास हो जाएं। बी.ए. या एम.ए. पास करने के बाद चाहे हमें चार लाईनें लिखनी न आए परन्तु बी.ए. या एम. ए. पास होना चाहिए, चाहे वह नकल मार कर ही क्यों न हो। ऐसे लोगों को नौकरियों में भी रख लिया गया जिनको कि दरख्वास्त लिखनी नहीं आती। इस ढंग से आज हमारी ऐजुकेशन का स्टैंडर्ड

गिरता जा रहा है जिसकी वजह से हम गिरते जा रहे हैं। हमारे देश में जापान और जर्मनी की भांति का एजुकेशन सिस्टम होना चाहिए था। जापान और जर्मनी में जो बच्चा मैट्रिकपा करता है, वह मशीनरी से पुज्र बनाना भी सीखता है, वह घड़ी का पुर्जा बना सकता है ओर वह दूसरे टैक्नीकल काम भी कर सकताहै। हिरोशिमा और नागासाकी जैसी तबाही होने के बावजूद भी जापान ने दुनियां में बहुत तरक्की की है। दुनियां के अन्दर आज वे देश एजुकेशन की बिना पर ही इतनी तरक्की कर पाए हैं और इण्डस्ट्रीज ने भी वहां पर इतनी तरक्की की है। आज वहां की एजुकेशन जौब ओरिऐटिड है। जाब ओरिएटिड एजुकेशन होने के कारण उनका विद्यार्थी आज हर फन में माहिर गिना जाता है। इसका कारण यही है कि उन देशों ने वाईट कालर जांब सिस्टम की एजुकेशन को बढावा नहीं दिया है। जहां तक अंग्रेजी का कन्सर्न है, अंग्रेजों ने व्हाईट कालर क्लास के लिए जिस ऐजुकेशन सिस्टम को चलाया था, वह आज भी चल रहा है। जर्मनी और जापान की तरह से हमारे देशमें भी यह बात आनी चाहिए। डिप्टी स्पीकर साहब, अगर हमारे यहां पर जौब औरिऐटिड ऐजुकेशन और कैरेक्टर बिल्डिंग ऐजुकेशन आ जाए तो मैं समझता हूं कि जो हमारे यहां पर नैतिकता का पतन आज हो रहा है, वह पतन नहीं हो सकेगा। आज हम यह देख रहे हें कि ऐजुकेशन सिस्टम में किस तरह से तबदीली लाई जाए। मैं हरियाणा सरकार को बधाई देना चाहूंगा कि उसने हरियाणा प्रांत में टैक्नीकल ऐजुकेशन, आई.टी.आई. वोकेशनल ऐजुकेशन और कम्प्यूटर एजुकेशन शुरू

की है। यह एक बहुत ही सराहनीय कदम है। (विघ्न) डिप्टी स्पीकर साहब, मैं यह कह रहा था कि शिक्षा इस किसम की ही दी जानी चाहिए। (विघ्न) कल ऐजुकेशन मिनिस्टर ने एक प्रश्न के उत्तर में बताया था कि हमारे प्रान्त में शिक्षितों की तादाद करीब चालीस लाख हो गयी है। सर, पहले तो बहुत कम लोग ही शिक्षित होते थे लेकिन यह बात भी सही है कि जितने लोग भी शिक्षित होते थे तो वह आला दर्जे के होते थे। जबकि आज वह बात नहीं है। सर, आप भी जानते हैं कि आज से तीस साल पहली का मैट्रिक पास आज के पी.एच.डी. के बराबर होता था। पहले जिसने मैट्रिक पास की होती थी उसको बहुत ही काबिल समझा जाता था। (विघ्न) सर, मैं बहुत ही काम की बात कह रहा हूं लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि चौहान साहब आज सीरियस नहीं हैं। ये मुझे बारबार डिस्टर्ब कर रहे हैं। डिप्टी स्पीकर साहब, मैं सदन में अपनी यह बात कहना चाहता हूं कि जोब ओरिऐटिड ऐजुकेंशन से दो मसले हल होते हैं। एक तो लड़कों को रोजगार मिलता है और दूसरे जो लोग खाली बैठकर कुराफात करते हैं, क्योंकि आईडल आदमी का दिमाग शैतान की तरह चलता है, वह काम में लगे रहेंगे। भविश्य में नौजवान लोग बदमाशी और गुन्डागर्दी से बचेंगे। तीसरी बात में यह कहना चाहता हूं कि जो बेरोजगारी हमारी देश को खा रही है, यह बेरोजगारी खत्म हो जाएगी। जो स्कूल, कालेज प्राइवेट दुकानदारों तथा बिजनैस के माध्यम से एजुकेशन का प्रचार हो रहा है, यह सिस्टम अच्छा नहीं है, यह तो दुकानदारी है। हांसी के बारे में तो मुझे गांव–गांव का

पता है, कदम–कदम पर, कोने–कोने पर, गांव–गांव में और शहरों में, हर कोने में अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूल खुले हुए हैं, किसी का नाम सुभाश पब्लिक स्कूल, किसी का गांधी पब्लिक स्कूल नाम रख दिया जाता है। एजुकेशन के नाम पर यह हमारे लिए धब्बा है। This is a slour on the State and the country. हमें इस तरह की दुकानों को चैक करना चाहिए, यह कोई एजूकेशन नहीं है, यह भ्रश्टाचार है। लड़कियों को भर्ती कर लेते हैं, कोई मैट्रिक पास व कोई फेल है, कोई एम.ए. पास है, कोई एम.ए. फेल है, उनसे लिखाते 700 रूपये हैं ओर देते केवल 200 रूपये हैं that should be totally abolished. अगर इस तरह की एजुकेशन रहेगी तो में समझता हूं कि हमारा भविश्य कोई बहुत उज्जवल नहीं है। हमारा भविश्य उज्जवल तब होगा, जब हम दो किस्म की एजुकेशन पर डिपैन्ड करें। पार्लियामैंटरी अफेयर्ज मिनिस्टर ओर फाइनैंस मिनिस्टर साहब बैठे हैं, में इनके माध्यम से सरकार के नोटिस में लाना चाहता हूं कि हमारे यहां शिक्षा प्रणाली जौब–औरिएन्टिड होनी चाहिए, जैसे जर्मनी और जापान में है। मैट्रिक पास लड़के को ऐसी ट्रेड का माहिर कर देना चाहिए जिससे वह सरकार के कंधे पर बोझ न रहे। यदि आप आई.टी. आई. ट्रेन्ड व्यक्ति को 50 हाजर रूपए का लोन दे दें तेा भविश्य में बेरोजगारी खत्म हो सकती है। Our unemployemnt problem will be solved sooner or later. अंग्रेज इस शिक्षा प्रणाली से व्हाइट कालर क्लास पैदा करते रहे हैं। यस मैन पैदा करने के लिए, हाजिरी देने के लिए, गुलामी करने के लिए उन्होंने इंगलिश

लागू की थी। उनका मत था कि जिस देश को भी कंट्रोल करना हो, उस पर अपनी भाशा लाद दो, वो देश गुलाम बन जाएगा। पौने दो सौ साल की गुलामी के बाद हमने खुली सांस ली तब हमें उस भाशा को छोड़ देना चाहिए था क्योंकि वह व्हाइट कालर क्लास पैदा करने वाली भाशा था। उपाध्यक्ष महोदय, जौब औरिएन्टिड सिस्टम के लिए मेरा सुझाव यह है कि सिर्फ जौब औरिएन्टिड एजुकेशन के नाम से जौब औरिएन्टिड एजुकेशन नहीं होगी, उस सिस्टम को पूरी तरह से हाई–स्कूल, मिडल स्कूल और हायर क्लासिज से जोड़ देना चाहिए। उसमें एक क्लाज यह लगनी चाहिए कि उसमें धार्मिक और नैतिक शिक्षा आवश्यक रूप से हो ताकि नौजवानों के चरित्र का निर्माण हो। वीडियों पर जो रंगारंग प्रोग्राम आते हैं, इनके माध्यम से देश की युवा–पीढ़ी को बिगाड़ने का ाडयंत्र रचा जा रहा है। युवा पीढ़ी यदि इसमें उलझ गई तो देश का भविश्य अंधकारमय हो जाएगा इसलिए उस प्रचार को बन्द करना चाहिए और प्रचार की बजाय, रामायण महाभारत ऋशि–मुनियों के चरित्र के बारे में प्रचार करना चाहिए जिससे हमारी नैतिकता और चरित्र बलवान बनें।

इसके अलावा मैं वोकेशनल ट्रेडज के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। अब तो वोकेशनल ट्रेडज भी कम्पयूटेराईज्उ हो गयी है। आज का युग कम्पयूटर का युग है। इसमें जो आदमी, जो कंट्री या जो प्रान्त पीछे रह जायेगा, वह हमेश के लिये पीछे रहेगा। आर्थिक तौर पर वही प्रान्त या देश आगे बढेंगे जिसमें

मोडर्न एजुकेशन होगी या आई.टी.आईज. में कम्पयूटेराईज्ड वोकेशनल ट्रेडज होगी। इनमें महारत होगी तीाी आगे बढ़ सकेंगे। इसको जब हम हर जगह, हर गांव में हर शहर में लागू करेंगे, तब ही हम तरक्की कर सकेंगे। तभी हम लोग अपना पुराना सिस्टम अबोलिश कर पायेंगे। इस सिस्टम की रिपलेसमैंट जौब ओरिएन्टिड एजुकेशन से होनी चाहिये। इसके अलावा डिप्टी स्पीकर साहब, मैं यह अर्ज कर रहा था कि देश के अन्दर, खास तोर पर नक्ल के बारे में चैंकिग होनी चाहिये। इस बात की सख्त जरूरत है। पिछली बार सैशन के दौरान आपको यह पता है कि नक्ल का बोलबाला था। इस बार हमारे साथी एजुकेशन मिनिस्टर साहब ने यानी फूल चन्द मुलाना जी ने और इनके विभाग ने तथा एजुकेशन बोर्ड ने मिलकर मिडल परीक्षा में इस बारे में यत्न किया है कि इस ईवल को इरैडीकेट किया जाये। मैं यह कहता हूं कि यह सराहना लायक कदम है। एजुकेशन में बगैर नकल मारे बच्चे पास होंगे तो इससे हमारा स्टैंडर्ड अच्छा होगा। (व्यवधान व शोर) .... चौहान साहब, आपने भी नकल करायी होगी, आपको भी पता होगा। शिक्षा मंत्री जी बैठे हैं, इन्होंने इसका इलाज करने की कोशिश की है। आप तो ऐसे कान्फीडैंस से बात कर रहे हो जैसे आप नकल कराबर आये हों।

प्रो. छतर सिंह चौहान: आन ए प्वायंट आफर पर्सनल एक्सप्लेनेशन, सर। उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने बताया हे कि इस बार मिडल की परीक्षा में काफी नकल कम हुई है और

सरवकार ने इस बारे में काफी कदम उठाये हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि सरकार ने कदम उठाये हैं ताकि नकल रूके और जैसे यह कह रहे हें कि इन्होंने करायी होगी तो यह तो इनकी अपनी बात होगी। .....(व्यवधान व शोर)

श्री उपाध्यक्ष: इसमें पर्सनल एक्सप्लेनेशन देने वाली कोई बात नहीं है। आप बैठिये।

प्रो. छतर सिंह चौहान: डिप्टी स्पीकर साहब, 1962 से यह इस सदन के सदस्य हैं और यह कैसे कह रहे है कि इन्होंने नकल करायी होगी? यह कांग्रेस पार्टी की सरकार है और अब ये इस सरकार के साथ हैं। अगर किसी ने नकल करानी होती तो बड़े ही मैनुपुलेटिड ढंग से होती। जहां तक चैकिंग की बात है, मैं उस बारे में भी बता दूं हायर एजुकेशन के डायरैक्टर को पता है, डी.ई.ओ. को भी पता है कि किस ढंग से नकल होती है।

Mr. Deputy Speaker: It is no personal explanation. Please take your seat.

श्री अमर सिंह: डिप्टी स्पीकर साहब, इसमें कोई पर्सनल एक्सप्लेनेशन की बात तो है नहीं। चौहान साहब तो वैसे ही खड़े हो गये। डिप्टी स्पीकर साहब, नकल के बारे में मैं अर्ज कर रहा था। अब मैट्रिक के इम्तहान चल रहे हैं।

शिक्षा मंत्री (श्री फूल चन्द मुलाना): आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, चौ. अमर सिंह माननीय सदस्य बोल रहे थे। नकल का

जो अभिशाप था, हमने आदरणीय मुख्यमंत्री महोदय की हिदायत के मुताबिक जो मिडल के इम्तहान हुए हैं, इस ईवल को खत्म करने के लिये फुल प्रूफ प्रबन्ध किया है। इस नकल को जड़ से उखाड़ फेंक दिया गया है। यह बात सही है कि कहीं–कहीं पर कुछ किस्से नोटिस में आये हैं। अब यह किस्से भी नोटिस में क्यों आयें। क्योंकि यह एक बहुत पुरानी बीमारी थी। उस बीमारी को खत्म करने के लिये हमने कई जगहों पर सैंटर भी कैंसिल किये हैं। 90 जगहों पर हमने ऐसा किया है। इसके अलावा 10–20 जगहों पर पेपर भी कैंसिल किये हैं। अब 10 जमा 2 के इम्तहान होने वाले हैं। आज तक नकल की कोई शिकायत नहीं है और न ही हम आने देंगे। मैं अपने साथियों से यह कहूंगा कि वह हमें इनके लिये सहयोग दें क्योंकि पहले बड़े ही आर्गेनाईज्ड वे में नकल होती थी हमने उसको समाप्त करने का प्रण किया है। मैट्रिक के इम्तहान हो रहे हैं ओर 10 जमा 2 के शुरू होने वाले हैं। इसमें आप हमें सहयोग दें।

श्री उपाध्यक्ष: अमर सिंह जी, आप अब खत्म करें।

श्री अमर सिंह: डिप्टी स्पीकर साहब, इस पर तो कोई लिमिट नहीं होती। आप मुझे अभी और बोलने दें।

श्री उपाध्यक्ष: आपका टाईम हो गया है। आपने 20 मिनट तक बोल लिया है।

चौ. अजमत खां: डिप्टी स्पीकर साहब, मैं यह कहना चाहता हूं कि आज ऐजुकेशन जैसे भले और अहम मुद्दे पर इस हाउस में बहस हो रही है और मैम्बर साहेबान एक दूसरे पर छींटा–कशी कर रहे हैं। चाहिये तो यह था कि मैम्बर साहेबान इस हाउस के कीमती समय की कद्र करते और कीमती मशविरे देते लेकिन यहां पर एक दूसरे पर छींटा–कशी करके हाउस का कीमती समय बरबाद कर रहे हैं। इससे तो यह अच्छा है कि या तो आप इस हाउस को एडजर्न कर दें या फिर मैम्बर साहेबान इस एजुकेशन जैसे अहम और भले मसले पर बोल कर अपना सही रोज अदा करें। बस मैं इतना ही कहूंगा।

श्री अमर सिंह: डिप्टी स्पीकर साहब, मास्टर जी जो कुछ कह रहे हैं, यह निराधार है। अगर मैंने बोलते हुए कोई इररैलेवैन्ट बात कही हो तो उसके लिये रिस्पौन्सिबल हूं। ये मास्टर हैं और ये काबलियत रखते हैं तो बोलें लेकिन इनके पास इतनी हिम्मत नहीं हैं।

Mr. Deputy Speaker: Ch. Amar Singh Ji, I would like to draw your attention to rule 178, which says:-

"No speech on a resolution except with the permission of the speaker, shall exceed fifteen minutes in duration."

You have already taken 20 minutes. Now you please conclude your speech in two minutes.

श्री अमर सिंह: डिप्टी स्पीकर साहब, बस थोड़ा सा समय लेकर मैं कंक्लूड करूंगा। डिप्टी स्पीकर साहब, मिडल की परीक्षाएं खत्म हो चुकी हैं और हाई स्कूल की परीक्षाएं शुरू हैं और साथ ही 10+2 की परीक्षाएं भी होने वाली हैं। जिस तरह से चौ. भजन लाल जी के नेतृत्व में शिक्षा मंत्री महोदय और अधिकारियौं ने शिक्षा का स्तर सुधारा है, वह सही मायनों में प्रशंसनीय है।

डिप्टी स्पीकर साहब, आपको याद होगा कि पिछले सैशन में यू.पी. के बारे में हर एम.एल.ए. की जुबान पर यह बात थी कि वहां पर उस सरकार ने नक्ल को रोकने के लिये क्या कुछ किया है, लेकिन अब जबकि हमारी सरकार ने यह प्रशंसनीय कदम उठाया है तो किसी भी एम.एल.ए. ने एक शब्द तक इस बारे में नहीं कहा है। हमारी सरकार ने इतना बड़ा प्रशंसनीय कदम उठाया है, इसके लिये हर एम.एल.ए. का फर्ज बनता था कि वह सरकार की प्रशंसा करें। डिप्टी स्पीकर साहब, नक्ल एक ऐसी बीमारी है जिससे सारा शिक्षा का सिस्टम बरबाद हो जाता है। अगर किसी बच्चे को सारा साल काम करने का, पोथी खोलने का समय ही नहीं मिलेगा, वह बारह से नक्ल करेगा ही और बारह से नक्ल करके मैट्रिक या +2 का सर्टीफिकेट भी ले लेगा लेकिन आगे हायर क्लासिज में जो करके वह नक्ल के कारण अपने मां–बाप व देश पर एक प्रकार स बोझा बनकर रह जाएगा। इस सिस्टम को हमारी सरकार ने कितना इरैडीकेट किया है, इसके लिये हमारी

सरकार बधाई की पात्र है। चौ. फूल चन्द जी, शिक्षा मन्त्री महोदय ने बताया कि उन्होंने बहुत सारे सैन्टर्ज में जाकर के चैक किया है और इनके विभागीय अधिकारियों ने बड़ी सतर्कता व बुद्धिमत्ता के साथ इन सब बातों का ध्यान रखते हुए सुपरवीजन आदि पर लगे लोगों का, जो लड़कों से नक्ल करवाने के लिये पैसे लेते थे, या जिन्होंने नक्ल करवाने के लिये बच्चों से पैसे बांध रखे थे, जिन सुपरवाईजरों और सुप्रिन्टेन्डैन्टस ने इस मसले पर आपसी तालमेल बना रखा था, उस तालमेल का भांडा फोड़ा है और इस मौजूदा शिक्षा व नक्ल के सिस्टम को सुधारने के लिये बहुत सारे कदम उठाये हैं जो प्रभावी सिद्ध हुए हैं। इसके लिये हरियाणा सरकार, शिखा मंत्री महोदय व अधिकारीगण प्रशंसा के पात्र हैं। मैं इतना ही कहता हुआ अपना स्थान लेता हूं। धन्यवाद।

चौ. अजमत खां (हथीन): डिप्टी स्पीकर साहब, शुक्रिया आपका, जो आपने मुझे बोलने का समय दिया है। इस समय हाउस के सामने केहरवाला साहब द्वारा पेश किया हुआ ऐजुकेशन से सम्बन्धित मुद्दा जेरेगौर है जिस पर मैं बोलना चाहूंगा। इस रेजोल्यूशन के साथ यह भी नुकता जुडा हुआ है कि हमारी ऐजुकेशन जो है, वह जाब ओरिऐनटिड होनी चाहिये जिससे हमारे देश के बच्चों को आगे चलकर रोजगार मिल सके और साथ में यह नक्ल का सिलसिला बन्द हो। 90 परसैन्ट तकरीबन नक्ल तो बन्द हो भी चुकी है। कम से कम मेरे अपने इलाके में पिछले साल से नक्ल पर काफी पाबन्दी लग गई है। चाहे हमारा ऐजुकेशन में

रिजल्ट कैसा भी क्यों न हो, चाहे हमें अपने बच्चों के फेल होने का कड़वा घूंट भी क्यों न पीना पड़े लेकिन यह नक्ल का सिलसिला बिल्कुल बन्द होना चाहिये। जो यह नक्ल का सिलसिला हमारी सरकार ने बन्द किया है, इसके लिये मैं सरकार को मुबारिकबाद देता हूं। लेकिन मैं इसके साथ साथ यह कहना चाहता हूं कि ऐजुकेशन के साथ रोजगार को को–रिलेट जयर किया जाए। लेकिन रोजगार भी तभी ठीक चलेगा जब बच्चों की दिमागी तौर पर डिवैल्पमैंट होगी। बच्चों को ऐजुकेशन मां–बाप के बाद टीचर से मिलती हे और अपने उस्ताद या अध्यापक से ही सीखता है और अच्छा उस्ताद वह है जो बच्चो को प्यार दे और पढ़ाते समय उन्हें अपना बच्चा समझे। उसके बाद वह माहौल है जो स्कूल की बिल्डिंग के नाम से और स्कूल की चार दीवारी के नाम से जाना जाता है। उसके बाद वह किताबें हैं जिन किताबों में बच्चा पड़ता है। उसके बाद वह किताबें हैं जिन किताबों में बच्चा पड़ता है। उसके बाद उसका माहौल है जिस समाज में वह रहता है। आप भी सब लोग पढ़े हैं और आप जानते हैं कि जब एक बच्चे को अच्छा उस्ताद न मिले, एक बच्चे को बैठने के लिए जगह न मिले, एक बच्चे को पीनै के लिए पानी न मिले और एक बच्चे को कोई सुविधा न मिले तो वह बच्चा क्या एजुकेशन लेगा और आगे चल कर उसका दिमाग किस रोजगार की तरफ चलेगा। वह एक बंधा हुआ मजदूर और क्लर्क बनना चाहेगा और इससे आगे वह नहीं जा सकेगा। लेकिन अगर उस बच्चे को सही तालीम दी जाए तो उस बच्चे की तालीम उसके जहन को खोलती है और

उकसे आगे बढ़ने के लिए मौका देती है। आज एजुकेशन का जो सिस्टम है उसमें सबसे बड़ी बात यह आई कि जो देहात का रहने वाला बच्चा है उसके मुकाबिले में शहर का जो बच्चा है वह बचपन से ही एक अच्छे माहौल में रहता है। उसे अच्छे टीचर मिलते है, उसे टयूशन पर पढ़ाया जाता है उसे अच्छी सहूलियतें मिलती है। देहात के बच्चे को स्कूल में टीचर नहीं मिलते स्कूलों की चार दीवारी नहीं मिलती और स्कूल में पीने का पानी नहीं मिलता है। वहां पर स्कूल का माहौल ऐसा होता है कि एक एक उस्ताद के पास 60–60 और 70–70 बच्चे होते हैं। एक टीचर के पास पांच पांच क्लासें हैं। क्या इस तरीके से एक बच्चे का दिमाग सही तरीके स डिवैल्प हो पाएगा? हां तो सबसे पहली जरूरत इस बात की है कि स्कूलों में शिक्षिक दिए जाएं और एक टीचर के पास बच्चे थोड़े हों। एक टाईम प्रति टीचर 30 की तादाद मानी थी, एक टाईम में 35 की थी फिर उसे बढ़ाकर 40 किया गया और फिर 50 किया गया। बच्चों की तादाद तो दिन प्रति दिन प्रति टीचर बढ़ती जाएगी और एजुकेशन के लिये स्कूल भी दिन प्रति दिन बढ़ते जाएंगे लेकिन क्या हमने कभी सोचा कि एक टीचर 50 बच्चों को कैसे पढ़ा पाएंगा? अगर एक टीचर एक बच्चे पर पांच मिनट भी लगाता है तो उसे 50 बच्चों के लिये कितना टाइम चाहिए और जब तक हर बच्चे पर टीचर खास ध्यान नहीं देता, बच्चे की जरूरत को नहीं समझ सकता। फिर उसके बाद टीचर पर कोई अखलाकी पाबन्दी भी हो। टीचर आज स्कूल में बीड़ी पीता है और टीचर आज स्कूल में शराब पीता है। टीचर आज बच्चों को

मां और बहिन की गाली देता है। टीचर पीट सकता है और धमका सकता है लेकिन जो टीचर एक मां का दिल रखता है उसे पैदा किया जाए। ऐसे टीचर जिनको बच्चों से मां बाप की तरह प्यार हो वे टीचर पैदा किए जाएं जिनके अन्दर मां का दर्द हो। वह टीचर जो मां का दर्द लेकर पैदा होगा वहीं टीचर बच्चों को सही मायनों में काबिल बना सकता है। वह टीचर कब पैदा होगा? वह तब पैदा होगा जब बच्चे का पहले से ही टीचर के लिए दिमाग बनाया जाएगा कि एजुकेशन क्या है और एजुकेशन क्या सिखाती हे। आज पोजीशन यह है कि हमारे स्कूलों में 50–50 बच्चों पर एक टीचर है। मैं आपको बता दूं कि मेरे इलाका मेवात में नगीना के अन्दर 92 स्कूल ऐसे हैं जिनमें डबल टीचर की जरूरत थी और उनमें एक एक लगा हुआ है। और 25 स्कूल ऐसे हैं जिनमें सिंगल टीचर भी नहीं है। अब आप ही बताएं कि जिस बच्चे की जिन्दगी खराब हो गई, साल साल तक जिनको टीचर नहीं मिला और उसे अब अगर टीचर मिला है तो क्या वह बच्चा पढ़ सकेगा। किसी बच्चे का एक साल मारा गया उसकी पूरी जिन्दगी बरबाद हो गई। आज सरकार अगर टीचर पैदा करेगी तो टीचर मिलेंगे। एक वक्त था जब जे.बी.टी. की क्लासें खोली गई थीं और कुछ समय बाद वह बन्द कर दी गई। एक सैन्टर तो हमारे मेवात के इलाके में था और दूसररा सिरसा की तरफ था। अब हर साल 6–7 सौ टीचर रिटायर होंगे। जो टीचर 1954, 1955 और 1958 के थे वे तो आज रिटायर हो गए हैं और उसके बाद 1960 से 1964 तक के टीचर आए हैं। उसके बाद बहुत कम स्कूल जे.बी.टी. के खोले

गए। अब तक जो ट्रेंड टीचर्ज थे वे सारे लग गए। आज भी जे.बी. टी. की पोस्टें खाली पड़ी हैं। चाहिए तो यह कि एक बार अच्छे लड़कों को जे.बी.टी. के लिये खुले आम दाखिला मिले और उनकी दो साल की ट्रेनिंग हो। दो साल के बाद जब वे बच्चे जाकर लगेंगे तो उस वक्त तक आपके पास पांच हजार पोस्टें जे.बी.टी. की खाली होगी। लेकिन आप कितने बच्चों को आज जे.बी.टी. बना रहे हैं। अब सरकार 6–7 सौ बच्चों को ट्रेनिंग दे रही है। सात सौ बच्चे हैं या नौ नौ बच्चे हैं इस बारे में एजुकेशन मिनिस्टर जानते होंगे मुझे पूरा पता नहीं है लेकिन पांच हजार टीचर आप कहां से लाएंगे। तो उस वक्त भी कम से कम दो हजार जे.बी.टी. टीचर स्कूलों में चाहिएं।

एक आवाजः अब तो बहुत बच्चों को ट्रेनिंग दी जा रही है।

चौ. अजमत खांः अगर दे रहे हैं तो बहुत बढ़िया बात है लेकिन मैं कह रहा हूं कि पांच हजार जे.बी.टी. अगले दो सालों में रिटायर हो रहे हैं। भविश्य में स्कूलों में ज्यादा बच्चे दाखिल होंगे तो जाहिर है कि उनको टीचर्ज ही चाहिएं। और ट्रेन्ड टीचर है नहीं, एक बात यह है कि 50 बच्चे प्रति टीचर का सिस्टम खत्म करके आप ज्यादा से ज्यादा 30–35 पर लाएं। क्यों एक टीचर 30–35 बच्चों से ज्यादा नहीं पढ़ा सकता। दूसरी मेरी बात यह है कि स्कूलों में कमरे नहीं हैं, और किसी इलाके को एजुकेशन में ऊपर उइाना है तो सबसे पहले उस इलाके के बच्चों को पढ़ाना

होगा और अगर पढ़ाना होगा तो वहां स्कूल की बिल्डिंग बनानी होगी। टीचर पूरे देने होंगे और चीजें तो पीछे हो सकती हैं लेकिन स्कूल की बिल्डिंग और चार दीवारी जरूर होनी चाहिए ताकि बच्चे उस चारदीवारी के अन्दर फुलवाड़ी और पौधे लगा सकें। उस चारदीवारी के अन्दर पानी का भी इन्तजाम हो। स्कूल की चारदीवारी बनाना जरूरी चीज है और स्कूल के लिये बिल्डिंग बनाना भी जरूरी चीज है। जब चारदीवारी के अन्दर पौधे लग जाएंगे तो उससे दो फायदे होंगे। एक तो इनवायरनमैंट का और एक कमरों की बचत। स्कूलों के अन्दर पीने के पानी का इन्तजाम किया जाए ताकि बच्चे पानी पीने के लिये बार बार अपने घरों में न जाएं।

जहां तक लड़कियों को फ्री शिक्षा देने की बात है, मैं कहता हूं कि लड़कियां पढ़ेंगी तब जब स्कूल गांव गांव में होंगे। आज मेवात के इलाके में यह हालत है कि वहां पर 10 जमा 2 प्रणाली के स्कूल बहुत दूर दूर है। जे.बी.टी. के लिए क्वालिफिकेशन 10 जमा 2 की है। क्या मेवात से टीचर बन पाएंगे? मैं तो यह भी कहता हूं कि जिस इलाके का स्कूल है उसी इलाके का टीचर लगाया जाना चाहिए क्योंकि दूर का रहने वाला टीचर काम नहीं करता। वह अपना ट्रांसफर करवा कर भागने की कोशिश करता रहता है वह बच्चों को नहीं पढ़ाता। वह इसी चक्कर में रहता है कि कब उसका ट्रांसफर हो। यह मेरा अपना तजुर्बा है कि टीचर जितना स्कूल के नजदीक का होता है, वह बच्चों को ज्यादा

पढ़ाता है और ज्यादा काम करता है क्योंकि उस पर समाज का दबाव होता है और समाज की शर्म करता है। (शोर)

एक आवाजः इसीलिए आप टीचर से एम.एल.ए. बन गए।

चौ. अजमत खांः वह बात अलग है। एम.एल.ए. तो आम लोग बनाते हैं लेकिन जो बार बार आप किसी को तंग करते हैं तो वह तंग आकर चुनाव में खड़ा हो जाता है। जो पिछली सरकार थी, उसने मुझे 14 बर ट्रांसफर किया इसलिये मुझे यहां आना पड़ा और मैं आपके सामने मुकाबले में खड़ा हूं। आप लोगों ने 1968 में जो टीचर्ज के ट्रांसफर्ज की पालिसी बनाई थी, हम लोग उसके शिकार बने। मेरा कहने का मतलब हे कि एजुकेशन के हिसाब से हमारे इलाके में आज भी बच्चे बहुत पीछे रह गए हैं वे नौकरियों में कैसे आगे आएंगे वे शहरी बच्चों का मुकाबला नहीं कर पाएंगे। जब तक हमारे इलाके के बच्चों के लिये पूरी स्कूल नहीं होंगे और जब तक उनके लिये पूरे टीचर नहीं देंगे तब तब वे बच्चे कैसे आगे आ पाएंगे। एजुकेशन के साथ रोजगार को जोड़ना अच्छी बात है लेकिन वोकेशनल ट्रेनिंग के अन्दर 400 नम्बर टीचर के हाथ में है और 10 जमा 2 प्रणाली के अन्दर सारा हाथ एजुकेशन बोर्ड का है। दोनों एक ही कैटेगरी हैं, वे भी 10 जमा 2 के बराबर होता है लेकिन जो बच्चा वोकेशनल से निकल कर आएगा वह फर्स्ट डिविजन नम्बर लेकर आएगा और उस बच्चे को आगे जा कर नौकरी में मौका मिलेगा। जो बच्चा 10 जमा 2 से आता है, वह बेचारा पीछे रह जाता है। मैं कहता हूं कि यह

दोगली बात खत्म की जाए या तो दोनों बोर्ड के पास हों या टीचर के देखने के बाद दोनों के नम्बर बराबर होने चाहिएं। आज जे.बी.टी. टीचर्ज की बहुत ज्यादा जरूरत है। यदि आज आप जे.बी.टी. की ट्रेनिंग देना शुरू करते हैं तो वे दो साल के बाद ट्रेंड होंगे। कम से कम आप 10 हजार बच्चों को जे.बी.टी. की ट्रेनिंग दें क्योंकि उनमें से कुछ बच्चे फेल भी होंगे। यदि आप जयादा से ज्यादा बच्चों को जे.बी.टी. की ट्रेनिंग देंगे तो टीचर्ज की कमी पूरी होती रहेगी। आपने कहा है कि 100 परसैन्ट बच्चों को दाखिला देंगे। जब आप 100 परसैन्ट बच्चों को दाखिला देंगे तो आपको टीचर्ज भी उनके हिसाब से देने पड़ेंगे। ट्रेनिंग देना कोई बड़ी बात नहीं है आप ट्रेनिंग दे सकते हैं, साल 6 महीने के बाद वे बच्चे टीचर लग जाएंगे। इसके साथ साथ मैं टीचर्ज के तबादलों के बारे में एक बात कहना चाहूंगा। टीचर्ज के तबादलों की पालिसी ऐसी हो कि टीचर्ज के तबादले अप्रैल के महीने में ही हो जाएं मई, जून में न हों। जितने भी टीचर्ज के तबादले आपने करने होते हैं, वे आप अप्रैल के महीने में कर दें। अगर कोई तबादला गलत हो जाये तो उसको आप अप्रैल के महीने में ही ठीक कर दें। जो ट्रांसफर गलत होते हैं ये तमाम ट्रांसफर सैट्रलाइज न हों। जो जे.बी.टी. टीचर्ज के ट्रांसफर्ज हैं ये डी.पी.ई. ओ. लैवल पर ही होने चाहिएं और मास्टरों के जिले के अन्दर डी. ई.ओ. करें बाकी चण्डीगढ़ से सारे ठीक हो जाएंगे। जो टीचर स्कूल के नजदीक का होता है, वह ज्यादा काम कर सकता है, बच्चों को ज्यादा पढ़ा सकता है। जब टीचर्ज के ट्रांसफर्ज होते हैं,

तब कोई पता नहीं कहां पहुंच जाता है ओर कोई कहीं पर पहुंच जाता है। सारे साल परेशानी बनी रहती है। मैं कहता हूं कि टीचर्ज की ट्रांसफर्ज केवल अप्रैल के महीने में की जानी चाहिए, उसके बाद नहीं की जाए। (शोर) इस समय सभापतियों की सूची में से एक सदस्य श्री वीरेन्द्र सिंह पदासीन हुए। सभापति महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि बच्चों को जो शिक्षा दी जा रही है, उसमें स्वरोजगार की भी शिक्षा दी जानी चाहिए। आज जो शिक्षा दी जा रही है, उससे बच्चा क्या बनेगा कलर्क बन जाएगा, पटवारी बन जाएगा या मास्टर लग जाएगा। आज के दिन बच्चे पढ़े–लिखे होने के बावजूद भी बेरोजगार घूम रहे हैं, इसलिये मेरा सुझाव है कि सरकार बच्चों को स्वरोजगार की शिक्षा दे ताकि वे अपना काम कर सकें और जिससे सरकार पर भी कम बोझ आ सके।

आधे से अधिक स्कूलों में हैडमास्टर व प्रिंसिपल नहीं हैं। आजकल आई.टी.आई. या पोलेटैक्निक हैं उनमें पूरा स्टाफ नहीं है। मेरे हल्के हथीन में जो आई.टी.आई. है उसमें पिछले एक साल से प्रिंसिपल नहीं है। प्रिंसिपल न होने की वह से बच्चों की पढ़ाई पूरी नहीं हो पा रही और उनकी जिन्दगी खराब हो रही है। जब पढ़ाई पूरी नहीं होगी तो वे पास कैसे होंगे और जब पास नहीं होंगे तो फिर उनके दिल टूट जाएंगे। जब बच्चों के दिल टूट जाएंगे तो स्कूल छोड़ देंगे फिर वे कोई भी काम नहीं कर पाएंगे। इसलिये मेरी सरकार से प्रार्थना है कि जहां जहां पर भी इन अदायरों में स्टाफ की कमी है, उसको जल्दी से जल्दी पूरा किया

जाये। जहां पर आवश्यकता हो वहां पर प्राईमरी से मिडल, मिडल से हाई और हाई स्कूल से 10+2 के स्कूल खोले जाने चाहिएं। इसके साथ साथ मेरी सरकार से प्रार्थना है कि हर तहसील लेवल पर कालेज अवश्य होना चाहिए। इसके साथ साथ मेरा सरकार को सुझाव है कि एजुकेशन विभाग को दूसरे विभागों से अधिक फंड दिए जाने चाहिएं क्योंकि यदि अधिक फण्ड एजुकेशन की तरफ जाएंगे तो अधिक बच्चे पढ़ लिख सकेंगे।

इसके साथ साथ मेरा सरकार को यह भी सुझाव है आज बच्चों पर जो किताबों का बोझ लाद दिया गया है, उसको कम किया जाये। इतनी अधिक पुस्तकों को लगाने का क्या फायदा जिनको बच्चे पढ़ व समझ न सकें। जिन बच्चों की जो लैग्विज है उनको उसके बारे में अधिक जानकारी दी जानी चाहिए। यदि उन पर इसी प्रकार का किताबों का बोझ लादा जाता रहा तो वे क्या जानेंगे। बच्चो को अगर सही ढंग से शिक्षा दी जाएगी तभी तो वे अधिक पढ़ लिख सकेंगे। आजकल बच्चों को अपने देश के बारे में जानकारी देने के बजाये जापान और दूसरे देशों के बारे में शिक्षा दी जाती है। छोटे बच्चों को अधिक जानकारी नहीं होती। वह तो अपने गांव को ही सारा देश समझता है। जब हम पढ़ते थे तो बड़ा अच्छा सिस्टम होता था। उस समय हमारे पास शुरू में एक कायदा होता था और गिनती सिखाई जाती थी। उसके बाद हिस्ट्री ओर दूसरे विशय मैथ आदि आते थे। नौंवी दसवीं और कालेज में जाकर कहीं दूसरे देशों की हिस्ट्री के बारे में पढ़ते थे। आज के

दिन बच्चों के साथ पढ़ाई के बारे में जो कुछ जो रहा है, वह बड़े शर्म की बात है। अब पिछले दिनों दिल्ली में बच्चों के मौरल के बारे में सर्वेक्षण किया गया था। रिपोर्ट आई कि 55 परसेंट बच्चों का मौरल गिर चुका है। बच्चों का मौरल गिरने का एक मेन कारण तो यही है कि अज के दिन स्कूलों और कालेजों में बच्चों को मौरल शिक्षा के बारे में कोई जानकारी नहीं दी जाती। आज के दिन बच्चाों को इन्सान बनाने की शिक्षा नहीं दी जा रही। पहले हमें कृश्ण और सुदामा की कहानियों के बारे में और राजाओं की कथाओं के बारे में यानी महापुरूशों के बारे में पढ़ाया जाता था। कृश्णा सुदामा और महापुरूशों के बारे में हर जमात में नये ढंग से लिखा होता था। चेयरमैन साहब जो पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवी में किताबें लगती थी अनमें अखलाक था लेकिन आज किसी को पता नहीं है जहांगीर का किसी को पता नहीं है, उनके इन्साफ के बारे में किसी को पता नहीं है। आज अशोक के बारे मैं सिकी को पता नहीं है, उसके इन्साफ के बारे में किसी को पता नहीं है। आज अशोक के बारे में सिकी को पता नहीं है। आज सब किताबों में टैकनीकल ऐजुकेशन में पड़े हुए हैं और दूसरी बातों में पड़े हुए हैं। ठीक है, वह भी करें लेकिन किताबों में मौरल की बात पढ़ाएं। चेयरमैन सहब आज इतिहास को बदलने की बात की जा रही है। आज जो लेखक हैं, वह अपनी मर्जी से चाहे जो कुछ भी लिख लेता है और बैठे–बैठे इतिहास लिख डालता है और अपनी किताब पास करवा लेता है इतिहास और किताब में जो लिखा है पास करने के लिये बोर्ड

बनाया जाए जिसमें अच्छे और पढ़े लिखे लोग हों। मैं तो यह कहता हूं कि उनसे उस बारे में पूछना चाहिए कि उन्हें इसका कैसे पता चला, क्या कोई सबूत है, उस विशय में उसने कहां से ढूंढा? इतिहास को बैठे बैठे ही पता नहीं चल जाता उसको ढूंढना पड़ता है।

इसी तरह से एजुकेशन में नकल को रोकने की बात है। इन्होंने पहले कहा था अब परीक्षाओं में नकल नहीं होगी तो इस बारे विद्यार्थियों ने पढ़ना शुरू कर दिया है। अब की बार भी कहा है तो इससे और भी असर पड़ेगा। अभी कुछ नकल तो रूकी है, यह बहुत ही अच्छी बात है। मैं यह मानता हूं कि 100 प्रतिशत तो नहीं रूक सकती लेकिन फिर भी बहुत असर हुआ है। इसके लिये थोड़ी सी सख्ती करनी पड़ती है। इसके साथ ही मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

श्री सभापतिः अजमत खां जी आप बहुत ही अच्छा बोले हैं।

प्रो. राम बिलास शर्मा (महेन्द्रगढ़): चेयरमैन साहब, आपने मुझे बोलने का मौका दिया है। उसके लिये मैं आपका धन्यवाद करता हूं। आज जो गैर–सरकारी प्रस्ताव है, उस पर मैं बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण और दुखद बात है कि ये जो गैर सरकारी दिन होता है इसे यह महान सदन गम्भीरता से नहीं लेता। यह तो सदन की हाजिरी से ही पता

चलता है। चेयरमैन साहब, इस बात के लिये तो आप मेरा समर्थन करेंगे। आज का यह मुद्दा शिक्षा से जुडा हुआ है। चेयरमैन साहब, इंग्लैन्ड में भी इस बात की चर्चा हुई थी कि वहां के प्रधान मंत्री ने कहा था कि चाहे रक्षा का बजट कम हो जाए चाहे और किसी चीज का बजट कम हो जाए लेकिन शिक्षा का बजट पूरा होना चाहिये। शिक्षा तो ऐ पूरी पीढ़ी का निर्माण करती है जिससे देश को काफी फायदा होता है। चेयरमैन साहब, हरियाणा प्रदेश में शिक्षा का एक अच्छा स्तर होता था, हरियाणा में छात्र और शिक्षक का एक अच्छा रिश्ता होता था। पिछले साल आपने भी पढ़ा होगा कि छात्र चाकू साथ लेकर पेपर देने जाते हैं। बहन शान्ति राठी जी भी ऐजुकेशन मिनिस्टर थीं, इन्होंने इसमें काफी सुधार करने की कोशिश की थी लेकिन चेयरमैन साहब, अगर हम आचार्य का सम्मान नहीं करेंगे और विद्यार्थी की शिक्षक के प्रति श्रद्धा नहीं होगी तो वह उससे कुछ नहीं सीख सकता। आज अध्यापकों की क्या हालत है, यह सबको पता है। नकल को रोकने के लिये पुलिस को बुलाना पड़ता है।

चेयरमैन साहब, आज विज्ञापनों में दिया जाता है कि शिक्षा में सुधार किया जाएगा, गुणात्मक सुधान के लिये विज्ञापनों पर फोटो छापे जाते हैं। पता नहीं इसके लिये कितना पैसा अलाट किया गया है। चेयरमैन साहब, मैं तो यह कहना चाहता हूं कि विज्ञापनों से नकल बन्द होने वाली नहीं है। इसके लिये तो सबसे पहले जिनके हाथ में शिक्षा है, उनको अपने जहन में एक बात

बिठानी होगी कि शिक्षा का क्या महत्व है और नई पीढ़ी के प्रति उनका क्या दायित्व है? मुझे बड़े ही दुख के साथ कहना पड़ता है कि आज कांग्रेस सरकार की जो राजनीति चल रही है, वह सिर्फ ताली पिटवाने की राजनीति है। चेयरमैन साहब, आज चाहे कोई भी क्षेत्र है, उसमें उपभोक्ता हावी है और उसी हिसाब से सब लोग अपना आचरण कर रहे हैं। परन्तु यह जो उपभोक्तावाद है, इससे हम सृश्टि का संतुलन बिगाड़ रहे हैं। चेयरमैन साहब हिन्दुस्तान की भी अपनी परम्परा है और हर देश के अपनी रीति रिवाज होते है। भारत यदि पश्चिम का, अमेरिका का ओर उपभोक्तावादियों का अनुकरण करना चाहे तो वह नहीं कर सकता। भारत की मिट्टी में एक अजीब तरह की सुगन्ध है, एक अजीब तरह की शान्ति है, एक अजीब तरह की अमरता है। यहां हर युग में कोई न कोई महापुरूश से उत्तर, पश्चिम और दक्षिण से खड़े होकर पूरे समाज को प्रभावित किया है। पूरे समाज को उन्होंने आन्दोलित किया है चाहे वह नानक हो, गोबिन्द हो, विवेकानन्द हो और चाहे दयानन्द हो। इन्होंने किसी न किसी युग में भारत के मूल संस्कारों की प्रतिश्ठा बढ़ाई है और इनको दुनिया ने भी माना है, स्वीकार किया है। दुनिया ने इन्हें बिना परखे स्वीकार किया। स्वामी विवेकानन्द शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में 1893 में बोलने के लिये गए थे तो उनको वहां पर बोलने का समय नहीं दिया जा रहा था। उनको वहां तक पहुंचने में बड़ी दिक्कत आई थी। वहां पर एक महिला बहन ने उनकी मदद की। उसने कहा कि इतनी दूर से चल कर बेचारे सन्यासी आए हैं,

इनको भी बोलने का समय दो। वहां पर जितने भी धर्म आचार्य दुनिया भर के थे वे बड़े बड़े सर्टिफिकेट लेकर आए थे बड़े बड़े आभूशण पहन कर आए थे उस सम्मेलन में वहां के सेक्रेटरी ने कहा कि एक हिन्दुस्तान से भी संत आये हैं दो मिनट इनकी बात भी सुनकर जाना। चेयरमैन साहब, जिनका परिचय ऐसे टूटे फूटे शब्दों में कराया जाए उनके लिये तो बड़े दुख की बात है जहां पर बड़े बड़े वैज्ञानिक यूनिवर्सिटी छोड़कर और बड़े बड़े समझदार लोग बैठे हो तो वहां पर उनको कौन सुनता। एक बार तो सब उठ गए और जैसे ही भारत के प्रतीक विवेकानन्द ने वहां के श्रोताओं को सम्बोधित किया, वे रूक गए। सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा ''ब्रदर्ज एंड सिस्टर्ज आफ अमरीका''। चेयरमैन साहब, यह एक अजीब तरह का सम्बोधन था, उसमें एक प्रकार का आकर्शण था। स्वामी जी डेढ़ घंटा बोलते रहे और फिर उन्होंने खुद ही कहा कि मुझे दो मिनट दिए गए थे और आप लोग समय को ही भूल गये। मैं आज डेढ़ घंटे बोल गया और बाकी मैं कल बोलूंगा चेयरमैन साहब मैं यह कहना चाहता हूं कि किस तरह से स्वामी विवेकानन्द जी के प्रवचनो को उस अमरीका की धरती पर सुना गया। हिन्दू दर्शन की किस तरह से उन्होंने स्थापना की। हिन्दू धर्म हर धर्म का आदर करता है। (विघ्न) चेयरमैन सर, स्वामी विवेकानन्द जी वहां पर 6 दिन के लिये केवल एक कपड़े में ही गए थे। कोई पर्सनैलिटी कल्ट नहीं था कोई आभूशण उनके शरीर पर नहीं था। लेकिन उन्होंने फिर भी पूरी अमेरिकी धरती को हिला कर रख दिया। सर, यह स्वामी विवेकानन्द की ही बात नहीं

थी बल्कि वह पूरी भारत की संस्कृति और सारी दुनिया की संस्कृति के बीच कम्पैरिजन था। चेयरमैन सर, भारत की संस्कृति शिक्षा से जुड़ी हुई है। आज देश और प्रदेश में सरकार का शिक्षा के ऊपर जो ध्यान कम हो रहा है, यह बहुत ही चिन्ता का विशय है। कल भी शिक्षा मंत्री जी ने एक प्रश्न के उत्तर में बताया था कि वह प्राईवेट दुकानों से चिन्तित हैं। चेयरमैन सर, आज नकल को रोकने की जरूरत पड़ रही है जबकि एक समय था जब अखंड भारत में नालन्दा और तक्षशिला दो विश्वविद्यालय हुआ करते थे जो आज दुर्भाग्य से पाकिस्तान में चले गये हैं, तब चीन से उस सयम दो चीनी यात्री आए थे। ये यात्री थे हयूनसांग और फाहियान। ये यात्री 14 वर्श तक हिन्दुस्तान में रहे और 14 वर्श तक घूमने के बाद उन्होंने अपनी पुस्तक लिखी। जिसमें कहा गया कि हिन्दुस्तान देवताओं की धरती है। यहां पर कभी चोरी नहीं होती। यहां पर लोग अपने घरों को खुला छोड़कर 6–6 महीने के लिये ऐसे ही तीर्थ यात्रा पर चले जाते हैं। कीाी भी वे लोग अने घरों में ताला नहीं लगाते। पुस्तक में यह भी कहा गया है कि यहां पर अगर कोई खाना खा रहा है और बची में ही कोई अतिथि आ गया है तो वह अपना खाना बीच में ही छोड़कर पहले अतिथि को रोटी खिलाता था। पुस्तक में अतिथि को भगवान का दर्जा दिया गया है। पुस्तक में ऐसी धरती को देवताओं की धरती कहा गया है लेकिन आज अगर कोई यह इल्जाम लगाये कि यह संस्कृति ठीक नहीं है बैकवर्ड है यह बात क्या गलत है? चेयरमैन सर, आज हम पश्चिमी संस्कृति को अपना रहे हैं। आज शिक्षा में

पहले जैसी बात नहीं है। आज ए.बी.सी. पढ़ने वाले बच्चों पर किताबों का बहुत भारी बोझ डाल दिया गया है। आज सारी दुनिया पश्चिम की नकल कर रही हैं आज हिन्दुस्तान में कहा जा रहा है कि हमारे पास अच्छे उद्योगपति नहीं है, अच्छी पूंजी लगाने वाले आदमी नहीं है। आज सब कुछ यहां पर विदेशों से आ रहा है। चेयरमैन सर, आज दुनिया क्यों बिखर रही है, रूस में साम्यवाद क्यों बिखर गया It was imperfect throught. रूप में साम्यवाद इसलिए बिखर गया क्योंकि उनका विचार अपूर्ण रहा था जबकि भारत का विचार पूर्ण विचार है। कई बर विज्ञान के आधार पर इस विचार की परीक्षा हुई है लेकिन यह विचार हर बार पूर्ण रहा। आज दुनिया में अशान्ति इसलिय ही है क्योंकि उनके विचार अपूर्ण हैं जबकि भारत में शान्ति इसलिये है क्योंकि यहां का विचार पूर्ण है। यह बात जरूर है कि भारत में गरीबी हे लेकिन चेमरमैन सर, फिर भी यहां पर शान्ति है। यह शान्ति क्यों है यह इसलिये है क्योंकि भारत की संस्कृति में दया है, धर्म है परोपकारी है। यहां पर चींटी के बिल पर भी लोग आटा डालते हैं तथा गांवों में गरीब लोगों को सहारा देते हैं। चेयरमैन सर, यही भारत की संस्कृति का आधार है। हमें इसको समझना होगा।

जहां तक नकल जैसी बुराई की बात है। नकल आदमी तब करता है जबकि उसका मानसिक विकास नहीं होता। उसे अपने ऊपर भरोसा नहीं रहता जब वह परिश्रम नहीं करता। चेयरमैन सर, पहले जो आचार्य होते थे वह विद्यार्थियों को पेड़ के

नीचे बिठाकर पढ़ाते थे जबकि अब के आचार्य तो स्कूलों में पढ़ाने की बजाए घरों में टयूशन पढ़ाते हैं। आज जो हमारी संस्कृति है वह पश्चिम से प्रभावित है। हमारा अपने ऊपर से विश्वास उठता चला जा रहा है। इसका नतीजा आने वाली पीढ़ियों को अवश्य भुगतना पड़ेगा। मैं इस प्रस्ताव के माध्यम से यह बात कहना चाहता हूं कि शिक्षा पर बहुत ध्यान देने की आवश्यकता हैं यह केवल एक नकल का मुद्दा नहीं हैं अब तो आचार्य की नकल कराते हैं। अब तो एक–एक सैन्टर्ज ही बिकने लगे हैं। अध्यापक या निरीक्षक विद्यार्थियों से बीस या तीस–तीस रूपये ले लेते हैं और कहते हैं कि भई पास हेना है तो यह देने ही पड़ेंगे। मैं आपको महर्शि दयानन्द यूनिवर्सिटी का ऐग्जाम्पल देना चाहता हूं। वहां पर बी.काम.फाईनल के स्टैटिस्टिक्स के पेपर में किसी ने चौदह प्लास दो बराबर 18 लिखकर दे दिया। इसी चीज को बी. काम. फाईनल के चालिस विद्यार्थियों ने नकल की है। पता नहीं हम अपनी पीढ़ी को कहां पर ले जा रहे हैं। मुझे समझ में नहीं आता कि हम कैसे नागरिकों का निर्माण कर रहे हैं और कैसे ये नागरिक भारत का निम्रण कर सकेंगे। चेयरमैन सर, यह बहुत चिन्ता का मुद्दा है। मैंने शुरू में ही एक बात कही थी कि हम में से बहुत कम लोग शिक्षा के मामले में गंभीर है। आज ये जो सोसायटी हे जिसमें पति–पत्नी की अपनी अलग अलग जिन्दगी है, वे लोग बच्चे पैता तो कर देते हैं, पैदा करने के बाद मास्टर के मत्थे मढ़ देते हैं। चेयरमैन सर, ये तो जिम्मेवारी से बचने वाली बात है ओर बहाना क्या बनाते हैं कि हमारे पास समय नहीं है,

इसकी नाक साफ करने का समय नहीं है इनके बुढापे में जब ये कब्र में पैर लटकाए बैठे होंगे, उन बच्चों के पास भी इनके लिये समय नहीं होगा। शास्त्रों में भी कहा गया है कि किसी को स्वर्ग देखना है किसी को भगवान को देखना है तो वह सुबह उठकर माता पिता के दर्शन कर ले। इस्लाम में भी है कि स्वर्ग यदि कहीं है तो मां के पैर के नीचे है की जमीन मैं है। (विघ्न) चेयरमैन महोदय, मेरे अन्दर का अध्यापक जागृत है और ये इनको तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। (विघ्न) शिक्षा के महत्व में यह बहुत चिन्तन का विशय है। हम जो लोग राजनीति में हैं और यह बहम रखते हैं कि हम दिशा दे रहे हैं। खासकर इस तबके के लोगों को, इस बारे में विचार करना चाहिये कि नकल का प्रावधान कानून से रूकने वाली बात नहीं है। अध्यापक यदि सोच लें कि मेरे बच्चे 80 प्रतिशत मार्क्स लेकर आए और कंपीटिशन में आएं तो यह कार्य हो सकता है। लेकिन अध्यापक की इच्छा होना आवश्यक है कि मेरा पढ़ाया हुआ बच्चा डाक्टर बने, इंजीनियर बने। ये सारी चीजें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

12.00 बजे

बेरोजगारी की समस्या भी शिक्षा से जुड़ी हुई है। लार्ड मैकाले ने कहा था कि मैं भारत मैं ऐसी शिक्षा पद्धति चलाऊंगा जिसमें भारत में ऋशि–मुनि पैदा नहीं होंगे डाक्टर इंजीनियर पैदा नहीं होंगे सिर्फ सफेद कालर वाले क्लर्क पैदा होंगे। मैकाले ने अपनी इंग्लैन्ड की सरकार को चिट्ठी लिखते समय यह बात

लिखी थी। उस अंग्रेज ने गुलाम हिन्दुस्तान की गुलाम बनाने के लिये जो शिक्षा नीति चलाई थी वो नीति ज्यों की त्यो चल रही है। आज भी वही सिस्टम आफ एजुकेशन चल रहा है। वह शिक्षा आज क्या पैदा कर रही है, यह हम सब जानते हैं और समझते हैं। देश और प्रदेश के बारे में कुल मिलाकर इस बारे में विचार करना पड़ेगा। नकल पाप है इसको समाप्त करने के लिये जब उत्तर प्रदेश में पिछली बार सरकार आयी तो हमने नकल को बन्द किया था।

श्री सभापतिः इस बारे में आपने तो कानून बनाया था लेकिन अब तो आप कह रहे हैं कि इस बारे में कानून नहीं बनना चाहिए।

प्रो. राम बिलास शर्माः मैं यह इसलिये कह रहा हूं कि कुछ लोगों ने इसी कानून के इशु पर चुनाव लड़ा और वह जीत गये। आप जानते हैं आजकल उपभोक्तावाद का जमाना है। कोई आदमी काम नहीं करना चाहता, हरेक आदमी बगैर काम किये खाना पसन्द करेगा। आज अगर कोई यह कहे कि तुम्हें कमाने की जरूरत नहीं है। फलाने आदमी का घर उजाड़ कर उसके घर को लूट लो, तो आपको बहुत से ऐसे आदमी मिल जायेंगे। लखनऊ में अभी दो लाख छात्रों ने एक रैली की है। उन्होंने उसमें यह कहा है कि हमारा भविश्य खराब किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में जिस नापाक गठबन्धन की वजह से सरकार बनी है, वह तो अलग बात है। डेढ करोड वोट हमें ज्यादा मिले हैं। 220 सीटों पर इन

कांग्रेसियों की जमानतें जब्त हुई हैं। 177 हमारे आदमी हैं। 425 में से 100 स्वतन्त्र एम.एल.ए. आज वहां पर है। (व्यवधान व शोर) आनन्द सिंह डांगी जी, जब आदमी संकट में आता है तो राम की शरण में जाना पड़ता है। हमने अपनी राजनीति अयोध्या के राम मन्दिर से शुरू की है। हम इसे राम राज्य तक ले जायेंगे इसमें कोई दो राय नहीं हैं।

श्री सभापति: आप कृपया रेलैवेन्ट बोलें।

Prof. Ram Bilas Sharma: Chairman, Sir, Ram is very much the subject of education. हिन्दुस्तान में तो राम के चारों तरफ आदमी चक्कर काट रहा है। जब आदमी सारी तरफ से निराश हो जाता है तो यह कहता है कि राम को यही मन्जूर होगा। जब आदमी मर जाता है तो राम को याद किया जाता है। आदमी यही कहता है ''जाहि विधि राखे राम ताहे विधि रहिये''।

श्री सभापति: आज राम पर संकट क्यों है

प्रो. राम बिलास शर्मा: कोई संकट नहीं है। भारत में ऐजुकेशन कैसी होनी चाहिये, इस पर विचार हो रहा है। असल सबजैक्ट क्या है। आपने बहुत अच्छा किया राम की चर्चा बीच में ला दी। भारत की किसान जब अपने बैलों को जोतता है तो कहता है ले राम का नाम। सेठ जब कोई काम शुरू करता है तो कहतार है ले राम का नाम। जब आदमी की लीला इस दुनिया से समाप्त हो जाती है तो चार भाई उसको कन्धे पर उठाकर चलते

हैं तो यही कहते हैं कि राम नाम सत्य है, सत्य में ही गत है? कोई यह नहीं कहता अजमत खां का नाम लो, राम बिलास का नाम लो या चौ. भजन लाल का नाम लो। सब लोग उस समय यही कहते हैं कि राम नाम सत्य है, सत्य में ही गलत है। इस जिन्दगी की शुरूआत राम के नाम से होती है और अन्त राम के नाम से होता है। भारत में भावना यह है कि जिन्दगी की सुबह और शाम राम के नाम से शुरू की जाये।

श्री सभापति: राम बिलास जी, अब आप समाप्त करें।

प्रो. राम बिलास शर्मा: चेयरमैन साहब, जब आप इस चेयर पर आये थे तो मैंने राहत की सांस ली थी चलो, अब मैं आराम में बोल सकूंगा।

श्री सभापति: अब आप राम को आराम करने दो।

प्रो. राम बिलास शर्मा: यह तो अविराम चलने वाली बात है इसको आराम नहीं दे सकते। मेरा कहने का मतलब यह है कि इस पर गम्भीरता से विचार होना चाहिये। मामला अकेले नकल का नहीं है। पूरी शिक्षा पद्धति के बारे में सोचने का मामला है। यह सारा मामला आपस में जुड़ा हुआ है। पूरे एजुकेशन सिस्टम में आमूल–चूल परिवर्तन का मुददा इससे जुडा हुआ है। यह अकेले नकल बन्द करने से उद्धार होने वाला नहीं है। टीचर अपने जिम्मेवारी को समझें। टोटल री–फंडिग आफ एजुकेशन एक्सपैंडीचर के बारे में हमें सोचना चाहिये। इसके लिये हमें

टोटल ऐलौकेशन आफ फंडज चेज करनी पड़ेगी। जोकि हमें करनी चाहिये। तभी शिक्षा में सुधार हो सकता है। अन्यथा नहीं। धन्यवाद।

प्रो. छतर सिंह चौहान (मुंढाल खुर्द): चेयरमैन साहब, आज सदन के अन्दर शिक्षा से सम्बन्धित जो चर्चा चल रही है, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। आज हरियाणा प्रदेश ऐसा प्रदेश है। जिसमें शिक्षा का स्तर हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों से निम्न स्तर का है। यह हमारे लिए एक गम्भीर मसला है और हर जागरूक नागरिक के सामने एक प्रश्न चिन्ह है कि आने वाली हमारी औलाद का भविश्य क्यों अन्धकार में है। (शोर) उस बारे में हमें बड़ी सतर्कता से सोचना पड़ेगा कि हमारी भावी पीढ़ी का भविश्य किस प्रकार से उज्जवल हो सकता है। स्कूलों और कालेजों में जो विद्यार्थी जाते हैं, उनको मां–बाप अपने खून पसीने की कमाई लगाकर यह चाहते हैं कि उनके बच्चे एक अच्छे नागरिक बनें, अच्छा जीवन व्यतीत करें, एक खुशहाल जीवन व्यतीत करे। लेकिन उन मां–बाप की आशाओं पर जब आजकल की शिक्षा को देखते हुए कुठाराघात होता है तो वे सोचने पर मजबूर होते हैं कि आज की शिक्षा प्रणाली किस प्रकार की शिक्षा प्रणाली है, जिसका कोई स्तर नहीं है। वे मां–बाप ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहते हैं जिस शिधा प्रणाली का हमारे ऋशियों ने स्पप्न देखा था लेकिन उन ऋशियों के स्वप्न अधूरे ही रह गये।

चेयरमैन साहब, शिक्षा से विहीन व्यक्ति पशु समान होता है। ऐसा हमारी भारतीय संस्कृति कहती है। लेकिन चेयरमैन साहब, आज की शिक्षा प्रणाली में और उस वक्त की शिक्षा प्रणाली में जिसके अन्तर्गत आप ओर हम पढ़े हैं, बड़ा फर्क है। आज की शिक्षा प्रणाली में बहुत दोश हैं। मेरे से पहले शर्मा जी ने बताया कि उस शिक्षा प्रणाली की नींव सनृ 1827 में लार्ड मैकाले ने डाली थी और उनकी नीति का एक उदेश्य था और उसने इंग्लैण्ड सरकार को लिखा भी थी कि हमारी एक ऐसी तहवीज है कि आने वाला भारतवर्श शरीर से तो भारतवासी हो लेकिन आत्मा और मन से अंग्रेज हो (शोर) चेयरमैन साहब, लार्ड मैकाले अपनी इस नीति से हिन्दुस्तान के नागरिक को मानसिक और आत्मिक रूप से गुलाम बनाया चाहते थे और वह गुलामी 15 अगस्त, 1947 के बाद बढ़ी है, घटी नहीं है, हालांकि अंग्रेज चले भी गये हैं।

चेयरमैन साहब, मैं एक शिक्षक के नाते कह रहा हूं। तीस सालों से मेरा शिक्षा से सम्बन्ध रहा है। मैं बड़े ही दुखी मन से कह रहा हूं कि आज अगर सब से बड़ा नुक्स हमारी शिक्षा प्रणाली में है तो वह है हमारा पाठयक्रम। न हमारे पाठयक्रम ही सही है और न ही बच्चे इसके लिये जागरूक हैं ओर न ही हमारी सरकार ही इसके लिये सचेत है। सरकार तो सिर्फ अपनी औपचारिकता निभा रही है और ऐसे पाठयक्रम निर्धारित कर रही है जोकि बच्चों के लिये ठीक नहीं है। पता नहीं यह पाठयक्रम सिक प्रकार से हमारी आने वाली पीढ़ी के लिये हारमोनीअस

डिवैल्पमैन्ट करता है या नहीं। बच्चे के शरीर को, मन को या आत्मा को इन तीनों चीजों को अगर यह पाठयक्रम डिवैल्प नहीं कर पाता तो उसको हम शिक्षा नहीं कह सकते, एक लिट्रेसी तो कह सकते हैं। जो हमारी सरकार है वह तो चाहती है कि इन्हें लिटरेट बना दें। क्योंकि मांगे राम जी तो शिक्षा और लिट्रेसी में कोई अन्तर नहीं समझते। चेयरमैन साहब, मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि आज हम आजाद होने के बाद भी यह चाहते हैं कि हिन्दुस्तान का विभाजन हो। जब तक हिन्दुस्तान की शिक्षा प्रणाली में सुधार नहीं होगा और जब तक हम अपने पाठयक्रम में सुधान नहीं लाएंगे, तब तक हमारी शिक्षा प्रणाली में सुधार नहीं आ सकता।

आज सारे उदयोगपतियों के बच्चे और श्री मांगे राम जी गुप्ता जैसों के बच्चे वहां पढ़ते हैं जहां हमारे जैसे गरीब सोच भी नहीं सकते क्योंकि वहां पर दस हजार रूपये महीने का खर्च देना पड़ता है। चेयरमैन साहब आप भी एक किसान के घर पैदा हुए हैं तो आप ही बताएं कि एक तरफ तो एक बच्चा दो रूपए फीस देकर पढ़ता है और दूसरी तरफ दस हजार रूपए देकर पढ़ता है और जब कम्पीटीशन का समय आता है तो दोनों को एक जैसा पेपर दिया जाए। तो दो रूपए देकर पढ़ने वाला लड़का दस हजार वाले के मुकाबिले में कैसे आ सकतार है? तो मैं कहना चाहता हूं कि यह जो अंग्रेजो की डिवाइड एंड रूल वाली पालिसी थी वह 1947 में समाप्त हो जानी चाहिये थी लेकि आज भी हमारी

सरकार इस बारे में नहीं सोच रही है। गवर्नर एड्रैस पर बोलते हुए हमारे एक माननीय सदस्य ने शिक्षा के बारे में बहुत कुछ कहा। वे शायद एक स्कूल का संचालन करते हैं। अगर मैं एक बात कहूं तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी आज एजुकेशन का कमर्शियलाईजेशन हो गया है। अगर यही चलता रहा तो इस स्वपन में भी नहीं सोच सकते कि हम भी दूसरों के मुकाबिले में नौकरियां हासिल कर सकेंगे। इसलिये जरूरी है कि पाठयक्रम एक जैसा होना चाहिये। चेयरमैन साहब, मैं पब्लिक स्कूलों के अगेंस्ट नहीं हूं बल्कि मैं तो इस बात के अगेंस्ट हूं कि हमारा विभाजन क्यों किया हुआ है। हमारे बच्चे आई.ए.एस. ओर आई.पी.एस. कैसे बन सकते है। यह प्रिवलेज तो केवल उन्हीं के बच्चों को मिलता है जो पाठयक्रम निर्धारित करते हैं। वे लेाग यह नहीं सोचते कि गरीब के बच्चों को भी पढ़ाई का समान अवसर मिले। दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि आप स्कूलों के बच्चों को देखें। जो तो प्रिवलेज्ड क्लास के बच्चे हैं वे तो कारों में बैठकर स्कूल जाते हैं और चपरासी उनका बस्ता उठाते हैं लेकिन दूसरी तरफ एक गरीब आदमी का बच्चा अपनी कमर पर बस्ता उठाकर नहीं ले जा सकता क्योंकि उसमें भार इतना होता है। शायद गुप्ता जी मनोविज्ञान को तो समझते नहीं होंगे। साइकोलोजीकली देखा जाए कि बच्चे के ऊपर कितना भार होना चाहिये लेकिन इस बात की ओर शिक्षा शास्त्रियों ने बिल्कुल नहीं देखा। चेयरमैन साहब, में आपके द्वारा कम से कम हरियाणा सरकार से यह निवेदन करना चाहता हूं कि अगर वह चाहती है कि शिक्षा का सुधार हो तो सबसे बड़ी बात

यह है कि हमें सिलेबस में एकरूपता लानी पड़ेगी ताकि सभी बच्चों को एक जैसी शिक्षा ग्रहण करने का समान मौका मिले। आज हमारे बच्चों के साथ अन्याय हो रहा है। आज हमारे बच्चे अशिक्षित से भी बदतर हैं। इन्होंने कहा कि हमने शिक्षा में सुधार किया है। मैं शिक्षा मंत्री जी के सामने अपना सिर झुका दूंगा अगर वे सिलेबस में तनिक भी सुधार कर सकते हैं। तब मैं सोचूंगा कि शिक्षा के सुधार में इनका बड़ा योगदार है। दूसरी बात यह आई कि हमने नकल को रोक दिया है। मैं एक शिक्षक के नाते यह मानता हूं कि नकल एक अभिशाप है। अगर हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे अच्छे नागरिक बनें तो उनको नकल की बीमारी से बचाना चाहिये। सरकार ने नकल को रोकने के लिए जो रास्ता अपनाया है वह ठीक है। लेकिन अढ़ाई साल पहले जब यह सरकार सत्ता में आई तो उस समय जो कांग्रेस के लोग चुनाव हार गए थे उनको एजुकेशन बोर्ड का चेयरमैन लगा दिया और उन्होंने धान्धली मचा दी। यह कह दिया कि कौन सुपरिटेन्डेन्ट लगे, कौन सुपरवाइजर लगे और कौन इन्स्पैक्टर लगे। यह धांधली मचाई।

श्री सभापति: चौहान साहब, नकल की रोकथाम के लिए इन्होंने कुछ कोशिश तो की है, यह तो आप मानते हो।

प्रो. छतर सिंह चौहान: चेयरमैन साहब, यह मैं मानता हूं कि इन्होंने नक्ल की रोकथाम के लिए प्रसास किया है। भगवान करे ये उस प्रयास में सफल हों। अगर मुलाना साहब ने कोई अच्छा काम किया है तो मैं विरोध के लिए उसके बारे में कुछ नहीं

कहूंगा। मुलाना साहब ने नक्ल की रोकथाम के लिए प्रयास किया है, यह अच्छी बात है। लेकिन मैं एक बात यह कहना चाहूंगा कि इस सरकार की नीयत और नीति में अन्दर है। उसका मैं एक उदाहरण देता हूं। चेयरमैन साहब, नकल करने की बीमारी कैसे पैदा हुई, जब तक हम इनकी जड़ में नहीं जाएंगे तब तक इसका पता नहीं लगेगा। इन्होंने जो फलाइंग स्कवैड लगाए हुए हैं, उनमें ऐसे आदमी हैं जिनका शिक्षा से कोई संबंध नहीं है। भिवानी में जो फलाइंग स्कवैड है, उसमें 4 या 5 क्लास तक पढ़े हुए है, वे फलाइंग स्कवैड के अध्यक्ष बने हुए हैं और सारे हरियाणा में घूम रहे हैं। (शोर) अगर मैं बन गया तो आपका नम्बर ऊपर नहीं आने दूंगा। (शोर)

साथी लहरी सिंह: चेयरमैन साहब, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। अभी प्रोफेसर साहब ने मनीराम केहरवाला की तरफ इशरा करके कहा है कि अगर मैं बन गया तो आपको ऊपर नहीं आने दूंगा। असल बात यह है कि इन्होंने अपने आप चेयरमैन बनने के लिए चौ. भजन लाल जी से कह कर ठाकुर बीर सिंह की छुट्टी करवा दी (शोर)

प्रो. छतर सिंह चौहान: चेयरमैन साहब, एक माननीय सदस्य इस तरह से कोई गैर जिम्मेदाराना बात कहें तो मुझे बहुत दुख होता है। मैं एक बात कहता हूं कि अगर मैंने कभी भी चौ. भजन लाल जैसे * * * * से ऐसी कोई बात की है तो आप पांच सदस्यों की एक कमेटी बना दें। अगर उस कमेटी का कोई सदस्य

यह कह दे कि यह बात सही है तो मैं मान जाऊंगा। ऐसी गलत और गैर जिम्मेदाराना बात इनको नहीं कहनी चाहिये। (शोर)

श्री सभापति: मुख्यमंत्री चौ. भजन लाल जी के बारे में इन्होंने जो शब्द इस्तेमाल किया है, वे रिकार्ड न किया जाए। (शोर)

प्रो. छतर सिंह चौहान: मैं कभी भी चौ. भजन लाल के पास नहीं गया। (शोर)

साथी लहरी सिंह: आप बीसियों बार गए हैं। (शोर)

सिंचाई मंत्री (चौ. जगदीश नेहरा): चेयरमैन साहब, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य से कहना चाहूंगा कि वे अपने आपको प्रोफसर कहते हैं और शिक्षा के बारे में बोल रहे हैं, उनको मैं क्या कहूं, उनको * * आनी चाहिये वे शिक्षा पर न बोल कर, नक्ल के बारे में न बोल कर और कोई अच्छे सुझाव न देकर, ऐसी * * * * बात कर रहे हैं जो सदन के लिए उपयोगी नहीं है। चेयरमैन साहब, मेरी प्रार्थना है कि माननीय सदस्य इस तरह की * * * * बात न करें। ये शिक्षा के बारे में अपने अच्छे अच्छे सुझाव दे दें। अगर ये प्रोफसर हैं तो क्या ये इस ढंग की बात करेंगे? (शोर)

प्रो. छतर सिंह चौहान: क्या आप ही हमें शिक्षा देने वाले हैं? आप हर बात पर कैसे खड़े हो जाते हैं? (शोर)

चौ. जगदीश नेहरा: यह नहीं होना चाहिये कि आप बगैर मतलब की बात करें। आप शिक्षा के बारे में कोई अच्छे सुझाव दें। ऐसे ही * * * * बात न करें। (शोर)

प्रो. छतर सिंह चौहान: चेयरमैन साहब मंत्री जी को इस तरह से नहीं बोलना चाहिये। I object to it. He should withdraw the word * * * * इन्होंने कहा कि मुझे * * * * आनी चाहिये। अगर पार्लियामैंटरी अफेयर्ज मिनिस्टर ऐसी बात कहेंगे और इस प्रकार की भाशणा का प्रयोग करेंगे तो मैं कहता हूं कि इस सदन को * * * * आनी चाहिए। (शोर)

मेरी आपसे नम्र प्रार्थना है कि मैं किसी पर व्यक्तिगत लाछन लगाऊं या और कोइ अपशब्द कहूं तो I stamd to be corrected.

श्री सभापति: आपसे वह शब्द निकल गया है, वह एक्सपंज कर दिया।

प्रो. छतर सिंह चौहान: एक इन्होंने कहा कि * आनी चाहिये वह शब्द भी एक्सपंज होना चाहिए।

श्री सभापति: अनपार्लियामेंटरी शब्द रिकार्ड पर नहीं आयेंगे।

प्रो. छतर सिंह चौहान: मेरा आपके माध्यम से सरकार को सुझाव है कि नक्ल को रोकने के लिए इसके मूल कारणों में

सरकार को जाना चाहिए कि नक्ल के मूल कारण क्या हैं? इसका एक कारण तो यह है कि हमारे स्कूलों में स्टाफ की कमी है। स्टाफ की कमी के कारण बच्चों की पढ़ाई नहीं हो पाती। इसलिए मेरी सरकार से प्रार्थना है कि जिन स्कूलों में स्टाफ की कमी है, वहां पर जल्दी से जल्दी स्टाफ भेजा जाए। सभापति महोदय, इस हाउस में शिक्षा मंत्री महोदय नहीं बैठे। आज हरियाणा में 3 डी.पी. आईज. और एक एजुकेशन मिनिस्टर बैठे हैं। उनको सुझाव देता हूं कि वे समय समय पर जाकर स्कूल चैक करें कि आया टीचर ठीक तरह से पढ़ा रहे हैं या नहीं। टीचर समय पर आते हैं या नहीं। मैं जानना चाहूंगा कि इन्हौंने अब तक कितने स्कूलों को चैक किया है? पेपरों के दिनों में तो चकिंग के लिए फलाईग स्कवैड बना दी गई लेकिन क्या डी.पी.आई. ने और मंत्री महोदय ने स्कूलों की चैकिंग की है? जहां पर 3 डी.पी.आईज. और 16 डी. ई.ओज. हों और मंत्री हो, फिर भी शिक्षा का सुधान न हो तो यह कोई अच्छी बात नहीं है।

श्री सभापतिः प्रो. साहब, प्रस्ताव तो यह है कि ऐसी शिक्षा हो जो जोब ओरिएन्टिड हो। आप तो एजुकेशनिश्ट हो। कोई अच्छा सुझाव दें कि स्लेबस क्या हो, फण्डज क्या हों और टीचर और स्टुडेंटस की क्या रेशो हो? ऐसे सुझाव आप सरकार को दैं।

प्रो. छतर सिंह चौहानः एक सुझाव तो मेरा यह है कि एक ऐसी फलाईग स्कवैड भी होनी चाहिए जो सारा साल यह देखे

कि आया टीचर स्कूल में आते हैं यह नहीं और वे पढ़ाते हैं या नहीं। स्टुडेंट और टीचर की रेशो के बारे में मेरा सुझाव है कि प्राईमरी तक यह रेशो 1–30 की होनी चाहिए यानी 30 बच्चों पर एक टीचर होना चाहिएं प्राईमरी से मिडल 1–40 की रेशो होनी चाहिए। मेरे कहने का मतलब यह है कि बच्चों की निगरानी के लिए 1–30 या 40 की रेशो ही ठीक रहती है। आगे ज्यों ज्यों कालेज में बच्चे जाते जायें, यह रेशो बढ़ सकती है क्योंकि उस उम्र तक बच्चे भी समझदार हो चुके होत हैं। मेरे हिसाब से प्राईमरी तक तो विशेश ध्यान दिया ही जाना चाहिए और उसके बाद मिडल तक भी ध्यान दिया जाना जरूरी है। इसलिये मेरा सुझाव यह है कि सरकार को ऐसी कोई रेशो निश्चित करके ही स्कूलों में स्टाफ लगाना चाहिए और जो रेशो फिकस कर दी जाये तो उसके बाद जहां जहां पर भी रेशो के हिसाब से स्टाफ कम है, स्टाफ भेजा जाये। इसके अतिरिक्त मेरा एक सुझाव यह भी है कि जो बच्चों के एग्जाम लिए जाते हैं, वे सारा साल चलते रहने चाहियें यानि उनकी वीकली और मंथली परीक्षा होनी चाहिये और उसका सारा रिकार्ड स्कूल में मास्टर और हैड मास्टर के पास अवश्य होना चाहिये। जो एन्वल एग्जाम होता है, वह तो केवल दिखावे के लिए होता है। जहां तक नक्ल रोकने की बात है, हमारे मौजूदा मंत्री जो प्रयत्न कर रहे हैं, उसमें इनको लगनशील भी रहना चाहिए। इसलिए मेरा सुझाव है कि जो मंथली और वीकली एग्जाम होते हैं उनके हिसाब से और एन्वल परीखा के आधार पर अगली कक्षा में बच्चों को प्रमोट किया जाना चाहिये। (विघ्न)

चेयरमैन सर, मैं आपके माध्यम से हरियाणा सरकार से यह निवेदन करना चाहता हूं कि सरकार इस प्रकार की व्यवस्था करे जिससे कि लड़का जब स्कूल छोड़े तो वह अपने पैरों पर खड़ा होने लायक बन चुका हो। एजुकेशन जौब–ओरिएंटिड होनी चाहिये। मैं यह सुझाव दूंगा कि बच्चे को पहली क्लास से पांचवीं तक तो दूसरी शिक्षा दी जाए लेकिन पांचवी क्लास के बाद जो एजुकेशन दी जाए, उसमें उसको कोई काम–धन्धा करना भी सिखाया जाना चाहिए। (विघ्न)

प्रो. राम बिलास शर्मा: आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर। सभापति महोदय, आपको पार्लियामैंटरी अफेयर्ज मिनिस्अर का बहुत लम्बा तजुर्बा रहा है। (विघ्न) सभापति महोदय, मैं प्वायंट आफ आर्डर पर खड़ा हुआ हूं और यह जानना चाहता हूं कि क्या आप पार्लियामैंटरी अफेयर्ज मिनिस्टर श्री जगदीश नेहरा जी की 15 मिनट के लिए क्लास लेंगे क्योंकि पार्लियामैंटरी अफेयर्ज मिनिस्टर साहब बीच–बीच में टोक रहे हैं। शिक्षा के बारे में जो ये बोल रहे हैं इनको उसे सुनना चाहिए। (विघ्न) इस प्रकार से बीच बीच में टोक कर माननीय सदस्य का समय खराब नहीं करना चाहिए। एजुकेशन का जो हाल है, वह तो सबको पता ही है। इसलिए आपके माध्यम से मेरा यह निवेदन है कि नेहरा साहब बीच में कम बोला करें, तो ज्यादा बेहतर होगा। (विघ्न)

चौ. जगदीश नेहरा: सभापति महोदय, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। मेरे फाजिल दोस्त काफी विद्वान हैं और प्रोफेसर भी हैं

परन्तु 20 मिनट हो गए हैं उन्हें बोलते हुए। जौब–ओरिऐंटिड एजुकेशन तथा कापिग इन दि एग्जामिनेशन के बारे में अगर इन्होंने एक भी सुझाव सरकार को दिया हो तो मैं गलती पर हूं। 20 मिनट इनको बोलते हुए गये हैं और बाद में इनका टाईम खत्म हो जाएगा।

प्रो. राम बिलास शर्मा: चेयरमैन साहब, नेहरा साहब ठीक कहते हैं। यह प्राईवेट रैजोल्यूशन है और इनका एक भी मंत्री उन प्वायंटों को नोट नहीं कर रहा है जो कि सदस्य बता रहे हैं।

Mr. Chairman: The Education Minister is in the House and he is noting down the points.

चौ. जगदीश नेहरा: सभापति महोदय, मैंने सारे प्वायंटस नोट किए हुए हैं।

श्री सतबीर सिंह कादियान: चेयरमैन साहब, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। पार्लियामैंटरी अफेयर्ज मिनिस्टर साहब ने पिछले 15 मिनट में जो नोट किया है, वह पढ़ कर बता दें। (विघ्न)

श्री सभापति: यह कोई प्वायंट आफ आर्डर नहीं हैं, आप बैठिए।

चौ. जगदीश नेहरा: सभापति जी, मैं इनको बताना चाहूंगा कि रमेश कुमार जी ने जो बातें कही हैं, वह मैंने सारी नोट की हुई हैं। (विघ्न)

श्री सभापतिः नेहरा साहब, आप बैठिये। प्रोफैसर साहब, आप और कितना टाईप बोलेंगे?

प्रो. छतर सिंह चौहानः सभापति महोदय, मैं 20 मिनट में अपनी बात समाप्त कर दूंगा।

श्री सभापतिः 20 मिनट से ज्यादा समय तो आपको बोलते हुए हो गया है और दूसरे मैम्बर्ज ने भी बोलना है, इसलिए आप अपने सुझाव 10 मिनट के अन्दर–अन्दर दे दें।

प्रो. छतर सिंह चौहानः चेयरमैन साहब, मेरा सबसे पहला सुझाव है कि अगर सरकार की वाकई में नकल रोकने की नीति है तो सरकारी आफिसर्ज और मिनिस्टर साहब को बार–बार वहां पर विजिट करना चाहिए। मेरा तो ख्याल है कि आज तक सिकी ने विजिट ही नहीं किया है। (शोर एवं व्यवधान) दूसरे, मेरा सुझाव है कि पाठयक्रम को उम्र और क्लास के हिसाब से लाईट किया जाए। बच्चे उतना ही पढ़ें जिससे उनके मानसिक विकास में कोई रूकावट न हो।

श्री सभापतिः आप जो कह रहे थे कि बड़े लोगों के बच्चों को अच्छी ऐजुकेशन मिलती है और आम लोगों के बच्चों को अच्छी ऐजुकेशन नहीं मिल पाती है, क्या इस बारे में आपके कोई सुझाव हैं?

प्रो. छतर सिंह चौहानः चेयरमैन साहब, मैं तो यह कहता हूं कि यह जो प्राईवेट कामर्शियलाइज्ड दुकानें हैं, उनको

बन्द किया जाना चाहिये और बच्चों को एक तरफ की ही शिक्षा दी जानी चाहिए। अगर समाज में एकरूपता हो और सबको आगे बढ़ने का समान अधिकार रहे तो हारमोनियस डिवैल्पमैंट होगी। चेयरमैन साहब, इन पब्लिक स्कूलों के तो में परसनली खिलाफ हूं, इनको बन्द किया जाना चाहिए। तीसरे, मैं यह बताना चाहता हूं कि किस प्रकार से शिक्षा में सुधार हो और किस प्रकार से बच्चों को अच्छी शिक्षा दी जाए जिससे बच्चों का विकास हो। चेयरमैन साहब, वी. सी.एम.डी.यू. रोहतक ने फैसला लिया था जिससे हरियाणा के लोगों को समान अधिकार मिलें, दूसरे प्रान्तों के लोग हरियाणा के लोगों के अधिकारों का अतिक्रमण न करें। 16 फरवरी, 1994 को रोहतक यूनिवर्सिटी के वी.सी. ने जाते हुए फैसला लिया था कि एम.बी.बी.एस. और बी.डी.एस. में वही लोग दाखिला ले सकते हैं जिन्होंने हरियाणा से दसवीं या दस जमा दो की परीक्षा पास की हुई है। इसमें यह भी कहा गया था कि 28.2.94 तक सिलेबस तैयार हो जाएगा और पब्लिक हो जाएगा। 3.3.94 को फार्म भरवाए जाएंगे और 7 मई को टैस्ट होगा। लेकिन न जाने किसी निजी कारण से उसको रोक दिया गया है। चेयरमैन साहब, एडमिशन कमेटी जो स्टैचुटरी बाडी होती है, उसका भी फैसला ये रोक लेते हैं। चेयरमैन साहब, मैं एक बात प्वायंट आउट करना चाहता हूं कि आज जो वी.सी. है, उस समय भी वे प्रो. वी.सी. होते थे और उनके उस कमेटी के सदस्य के रूप में हस्ताक्षर हैं। मैं तो यह कहता हूं कि अगर आप यह चाहते हैं कि बच्चों को प्रोफैशनल एजुकेशन मिले तो हमें चोर दरवाजों को बन्द करना होगा। दूसरे

ये जो श्री कृश्ण मूर्ति हुड्डा जी बैठे हुए हैं, उनके हस्ताक्षर हैं, डांगी साहब के भी उस पर दस्तख्त हैं और बत्तरा सहब के भी दस्तखत हैं। अगर आप चाहें तो मैं आपको बाहर जाकर उसको फोटो स्टेट कापी दिखा सकता हूं। उस पर इन तीनों के दस्तख्त हैं। चेयरमैन सर, इन्हौंने कहा है कि हरियाणा के हितों की रखा के लिए 16 फरवरी, 1994 का वी.सी. का जो फैसला था, वह कायम रखा जाए। (विघ्न) चेयरमैन सर, मैं तो यही कहना चाहता हूं कि हरियाणा का जो बच्चा मैट्रिक और टैन प्लस टू पास हो, उसको ही दाखिला मिलता चाहिए। (विघ्न) चेयरमैन सर, उस बढ़िया निर्णय को उलटने का कुप्रयास किया जा रहा है।

श्री सभापतिः चौहान साहब, अभी तक तो उल्टा नहीं गया है, भी तो वह स्टे करता है।

प्रो. छतर सिंह चौहानः सर, वह सिलेबस 18 फरवरी को पब्लिश होना था लेकिन उसको प्रैस में ही रोक दिया गया। मैं जानना चाहता हूं कि यह क्यों रोका गया? (विघ्न) चेयरमैन सर, मेरी आपसे प्रार्थना है कि प्रोफैशनल इंस्टीच्यूशन में हमारे बच्चों को ही शिक्षा मिलनी चाहिए ताकि वे एक अच्छे नागरिक बन सके। वहां पर दूसरे प्रदेशों के बच्चो को या फिर आई.ए.एस./आई.ए. एस. के बच्चों को जो बम्बई या कलकत्ता में पढ़कर आते हैं, को उन इंस्टीच्यूशंज में ऐडमिशन नहीं मिलना चाहिए। सर, एक साधारण स्कूल का पढ़ा हुआ बच्चा, पब्लिक स्कूल में पढ़े हुए बच्चे से किस प्रकार से कम्पीट कर सकता है? सर, ऐजुकेशन के लिए

समाज की भी उतनी ही जिम्मेदारी बनती है जितनी कि सरकार की। समाज भी शिक्षा के गिरते हुए स्तर के लिए जिम्मेदार है क्योंकि हम लोग अपने बच्चों की तरफ नहीं देख पाते। चेयरमैन सर, शिक्षा के लिए तीन चीजें जरूरी हैं एक ऐजुकेशन, दूसरा ऐजुकेटर और तीसरा टू बी ऐजुकेटिड। अगर इन तीनों चीजों का विकास नहीं होगा तो शिक्षा का विकास नहीं हो सकता। (विघ्न) मेरी आपके माध्यम से सरकार से प्रार्थना हे कि सरकार केवल ऐग्जामिनेशन के दौरान ही जागरूक न रहे। अगर सरकार ऐसी करेगी तो फिर नक्ल जैसी बुराई कोनहीं मिआना जा सकता। इससे काम नहीं चल सकता। सुपरवाईजिंग स्टाफ और ऐजुकेशन मिनिस्टर को भी पूरे साल जागरूक रहना चाहिए। मैं यह बात दावे के साथ कह सकता हूं कि अगर साल भर सरकार का सुपरवाईजिंग स्टाफ और मिनिस्टर ऐयर कंडीशंज कमरों में न बैठे रहे, बल्कि लोहारू और भिवानी के सर्कल में जाकर देखें, तो यह बुराई दूर हो सकती है। चेयरमैन सर, सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि जितने कालेज हैं, जितने हायर सैकेण्डरी स्कूल हैं, उनमें कोई हैड नहीं है। अगर इनमें कोई हैड नहीं होगा तो आप स्वयं अन्दाजा लगा सकते हैं कि शिक्षा कैसे सुचारू रूप से हो सकेगी? हमने कई बार मिनिस्टर साहब से कहा है कि भिवानी का कालेज, लोहारू का कालेज पिछले डेढ़ दो साल से बिना हैड के ही पड़ा हुआ है। लेकिन उन्होंने आज तक भी इस ओर ध्यान नहीं दिया। चेयरमैन सर, इतना कहते हुए ही मैं आपका धन्यवाद करता हुआ अपना स्थान लेता हूं।

चौ. जिले सिंह जाखड़ (साल्हावास): चेयरमैन सर, शिक्षा के विशय में मुझें यह कहना है कि शिक्षा का सुधार होना चाहिए क्योंकि हमारी जो शिक्षा पद्धति है, उसमें से वैस्टर्न कल्चर की बू आ रही है जबकि हमारी कल्चर, हमारी फिलौसफी दुनिया में सबसे रिच है। हमारी फिलौसफी रिच इसलिए है कि हमारे विद्वान अपने शरीर पर शोध करके पुस्तकें लिखा करते थे। अगर हमारी शिक्षा पद्धति में से इस किस्म के सिलेबस को चेंज नहीं किया जाएगा तो इस एजुकेशन का कोई फायदा नहीं है। मैट्रिक तक एजुकेशन पाकर क्लर्क लग जाए, हमारी एजुकेशन सिर्फ यहीं तक सीमित है। मौरेलिटी और नेशनैलिटी के बारे में हमारी शिक्षा में कुछ नहीं है इसके लिए सबसे पहले हमें सिलेबस चेंज करना चाहिए। शिक्षा को धर्म से जोड़ना चाहिए। शिक्षा में शुरू से ए, बी, सी, डी, 10 जमा 2 बराबर 12 और ए + बी का स्क्वेयर पढ़ाए जा रहे हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम समाज का कल्याण कर रहे हैं। गवर्नमैंट स्कूल के बच्चौं का सिलेबस प्राईवेट और पब्लिक स्कूलों के सिलेबस से अलग है। एक बच्चा चार किताबें लेकर स्कूल जाता है और दूसरा बच्चा बस्ता भरकर जाता है। सभी स्कूलौं में, चाहे वे गवर्नमैंट हों, प्राईवेट हों, सभी में एक जैसा सिलेबस होना चाहिए। जहां तक प्राइमरी सकूलों का ताल्लुक है, यदि शिक्षा की नींव ही खराब हो जाए तो बच्चों का भविश्य क्या होगा? पहली क्लास के बच्चे को बिना टैस्ट लिए दूसरी क्लास में और इसी तरह से उन्हें आगे की क्लासिज में बढ़ाते जाएंगे तो इस तरह से पास करने से क्या फायदा होगा?

वही बच्चे 8वीं और 10वीं क्लासों में जाकर क्या करेंगे? इसके अलावा, मेरा सुझाव यह है कि स्टुडैन्टस और टीचर्ज की रेशो 20 या 25 होनी चाहिए। आज 250 से 300 बच्चों को पढ़ाने के लिए एक ही मास्टर है। प्राइमरी स्कूलों में जे.बी.टी. हैड मास्टर और दूसरे अन्य टीचर्ज का पूरा इंतजाम होना चाहिए। नींव शुरू से ही अच्छी होनी चाहिए अगर नींव ही खराब होगी तो सुधार कैसे हो पाएगा? पहले तो स्कूलों में डी.ई.ओ. और बी.ई.ओ. खुद जाकर क्लास के बच्चों को टैस्ट लिया करते थे लेकिन आज ऐजुकेशन के बारे में कोई इंसपैक्टर चैक करने नहीं जाता है। मेरा सुझाव है कि डी.ई.ओ., बी.ई.ओ. स्कूलों में जाकर बच्चों का टैस्ट लें और पता लगाएं कि उनका क्या स्टैंडर्ड है और उसके हिसाब से टीचर को प्रोमोशन या इन्क्रीमैंट दी जाए। लेकिन आज क्या है कि टीचर्ज पर कोई बैन नहीं है। उनका काम है कि महीने में एक दिन आए, हाजिरी लगाई, तनख्वाह ली और चल दिए। इसके बारे में चैकिग होना बहुत जरूरी है अदरवाईज तो शिक्षा का बेड़ा ही गर्क होता जाएगा। अगर हम इसको चैक नहीं करेंगे तो हम शिक्षा में सुधार नहीं कर सकेंगे। पता नहीं हमारे देश के कौन से लोग हैं जो इस देश में गलत किस्म के कानून बनाते हैं। कहां से इस काम के लिये पैसा लेते हैं। हमारे स्कूलों में कमरे नहीं हैं, चाक नहीं हैं, पट्टी नहीं है, अध्यापक बच्चों से पैसे लेकर चाक मंगवाते हैं। स्कूलों में पीने के पानी का भी अरेंजमैंट नहीं है। बच्चे अपने लिये पानी बोतलों में भर कर लाते हैं। फिर प्रौढ़ शिक्षा के बारे में यह कहते हैं कि हम बूढ़ों को पढ़ायेंगे। What is this non-

sense? इस पैसे को ठीक ढंग से यूज किया जाना चाहिये। मैं चाहता हूं कि सरकारयह बताये कि आज तक प्रदेश में किस बूढ़े को या अनपढ़ आदमी को शिक्षा दी गयी है। यह फिजूल में पैसा वेस्ट किया जा रहा है। अगर आप अनपढ़ बूढों को पढ़ाना ही चाहे हें तो प्राइमरी स्कूलों में टीचर एक्सट्रा क्यों नहीं लगा देते और जिन अनपढ़ लोगों ने या बूढ़ों ने पढ़ना है, उनके लिये भी एक पीरियड साथ लगा दिया जाता। यह फिजूल का पैसा बरबाद हो रहा है। दीवारें काली करके या गाड़ियों में बैठकर घूमने से अनपढ़ता खत्म नहीं हो सकती। क्या नारे लिखकर लगाने से अनपढ़ता खत्म होती है? यह तो शीयर वेस्टेज आफ मनी है। यह तो फिजूल में पैसा बरबाद किया जा रहा है। अगर इस पैसे द्वारा अच्छे टीचर अप्वायंट किये जायें या टीचर्ज की संख्या बढ़ाई जाये या स्कूलों में कोई दूसरा अरेंजमैंट किया जाये तो उन्हीं स्कूलों में अनपढ़ बूढ़े भी पढ़ सकते हैं। आप ही बतायें कि क्या किसी गांव में आज तक कोई इस बारे में क्लास लगी है? फिजूल में ही इस नाम पर पैसा बरबाद किया जा रहा है। इस तरह स्कीमें बनायी जायें कि ऐजुकेशन के मामले में कुछ सुधार हो सके और पैसा सहीं ढंग से इस्तेमाल हो सके। मेरा इस सरकार से अनुरोध है और यह सुझाव भी है कि इस पैसे को ठीक ढंग से यूटेलाईज किया जाये। स्कूलों में टीचर्ज की संख्या बढ़ाई जाये। उन्हीं स्कूलों में अनपढ़ बूढ़ों को एक घंटा या आधा घटा टाईम एडजस्ट करके पढ़ाया जाये। इसमें क्या तकलीफ है? इस तरह से फिजूल में पैसा क्यों बरबाद किया जा रहा है? नकल का जहां तक

सम्बन्ध है, इस मामले में हम पोलिटीशीयन्ज ज्यादा जिम्मेवार हैं। हम जैसे लोगों ने नकल करवाने के लिये अरेंजमैंट किया है। किसी एस.एस.एस. बोर्ड को या एच.पी.एस.पी. का कम्पीटीशन होता है तो मां–बाप के मन में यह सोच होती है कि कम्पीटीशन में तो मेरा लड़का क्लर्क भी नहीं बन सकता और न ही एच.पी.एस.सी. की किसी सिलैक्शन में आ सकता है। उनकी यही सोच होती है कि नकल मारो और पास हो जाओ। अगर कम्पीटीशन हार्ड हो और उसमें अगर बच्चों को योग्यता के आधार पर सिलैक्ट किया जायेगा तो इससे किसी को भी नक्ल मार कर पास होने की हिम्मत नहीं होगी। अगर कम्पीटीशन हार्ड हो तो नक्ल मारने की जरूरत ही नहीं है। बच्चे भी नहीं चाहेंगे कि वह नक्ल मार कर पास हो और बच्चों के मां–बाप भी नहीं चाहेंगे कि वह ऐसे नक्ल मारकर पास हों। लेकिन नक्ल तो वह इसलिये मारते हें क्यों कि अयोग्य आदमी सिफारिश से भरती हो जाते हैं और एक अच्छा मैरिट का आदमी रह जाता है। (इस समय श्री उपाध्यक्ष पदासीन हुए।) पिछली बार मैं रोहतक बस–अड्डे पर एक लड़के से मिला। वह वहां पर उदास सा खड़ा था। मैंने उससे कहा कि तुम उदास क्यों बैठे हो। वह कहने लगा कि क्या कहूं। इतना पढ़ा–लिखा हूं। इतना इटैलीजैंट हूं कि जिसकी कोई बात नहीं है। नायब तहसीलदार के टैस्ट में तो पास हो लिया लेकिन इंटरव्यू में मुझसे कुछ नहीं पूछा गया। मेरे से थर्ड क्लास लड़के को सिलैक्ट कर लिया गया। नक्ल तो हम खुद एनकरेज इस तरह से कर रहे हैं। एक मेरे गांव का लड़का 1982 में एच.सी.एस. कके रिटन टैस्ट में

थर्ड पोजीशन पर आया था। उसको इन्टरव्यू में 200 में से सिर्फ 10 नम्बर दिये गये। बेचारा बट्टे खाते में चला गया। मेरा कहना यह है कि जो इन्टैलीजैंट आदमी हो, उसकी कद्र हो। इससे शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। कम से कम कुछ परसैंट तो आदमी मैरिट पर लो। अब्बल पर आने वाले सारे ही आदमी आपकी मैरिट पर लेने चाहिएं लेकिन हो सकता है आपकी कोई मजबूरी हो। ऐसी कोई न कोई मजबूरी किसी की भी हो सकती है लेकिन कम से कम पांच दस या बीस परसैंट कुछ तो इंटैलीजैंट आदमी मैरिट पर सिलैक्ट करो ताकि उनको भी यह हौसला हो कि हमें भी मौका मिलेगा। अगर यही पद्धति चलती रही तो हमारी शिक्षा प्रणाली में ने तो नक्ल रूक सकती है और न ही इसमें कोई सुधार हो सकता है। तो मेरा सरकार से यह अनुरोध है कि कम्पीटीशन में कम से कम 10–20 परसैंट आदमी तो मैरिट पर सिलैक्ट करो ताकि इंटेलीजैंट लोगों के दिन न टूटें और वह भी मेहनत करते रहें। उनके अन्दर फ्रस्ट्रेशन की भावना न आने पाये। इसलिये मेरा सुझाव है कि जो इंटैलीजैट और लायक लड़के हैं, उनको भी कुछ न कुछ परसैंट के हिसाब से सिलैक्ट किया जाना चाहिये। उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि हमें शिक्षा के अन्दर धर्म को जोड़ना चाहिये और हमें अपने ऋशि मुनियों, गुरूओ के धार्मिक नेताओं के आचरण को अपनी शिक्षा के अन्दर स्थान देना चाहिये कि हमारे गुरूओं के यह विचार थे, उनके शिश्यों के ये–ये विचार थे ताकि बच्चों को उनके विचारों की जानकारी हो सके। ऐसे पाठयक्रम हमारे स्कूलों में होने चाहियें। उपाध्यक्ष महोदय,

आज शिक्षा का बहुत बुरा हाल है। आज सुबह शर्मा जी बता रहे थे कि लड़के टीचर्ज की परवाह नहीं करते हैं और स्कूलों में चाकू लेकर जाते हैं। चेयरमैन साहब, आप लोग व हम लोग भी पहले स्कूलों कालेजों में पढ़े हैं। आपको पता होगा कि जब टीचर क्लास में आते थे तो बच्चे खड़े होकर उनका आदर सम्मान करते थे क्योंकि स्टुडैन्ट और टीचर का रिश्ता ही ऐसा होता था लेकिन आज हमारे समाज में शिक्षक और विद्यार्थी का वह रिश्ता नहीं रहा है। आज मास्टर शिश्य को कहता है कि जो बोतल ले आ, बीड़ी का बंडल ले आ। जब एक टीचर बच्चों के सामने दारू पीएगा, बीड़ी पीएगा तो बच्चों के मन में टीचर के बारे में क्या इज्जत रहेगी? इसलिये मेरी सरकार से यह रिक्वैस्ट है कि सरकार को एक ऐसा प्रस्ताव पास करके टीचर्ज के लिऐ कानून बनाना चाहिये कि अगर कोई टीचर स्कूलों में दारू पीएगा, बीड़ी पीएगा तो उसके खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जाएगी या उसके खिलाफ कुछ न कुछ दण्डात्मक कार्यवाही की जाएगी। अगर सरकार ऐसा पग उठायेगी तो अवश्य ही टीचर्ज पर और स्टुडैन्टस पर इसका अच्छा असर पड़ेगा। इससे बच्चों व टीचर्ज का आचरण ठीक होगा। टीचर्ज बच्चों को इस तरह से लालच देकर चीजें मंगवाते हैं कि तेरे को मैं पास करवा दूंगा तू बोतल ला। तेरे को नक्ल करवा दूंगा। इसके लिये हम सब लोग मां–बाप समेत जिम्मेवार हैं। बच्चे तो, चेयरमैन साहब, कोमल बुद्धि के होते हैं और हम बड़ों को यह कर्तव्य बनता है कि हम आने वाली पीढ़ियों को सुधारें।

उपाध्यक्ष महोदय, अब मैं प्राइवेट स्कूलों के सम्बन्ध में कहूंगा कि प्राइवेट स्कूलों में बेतहाशा फीस ली जाती है और उनके ऊपर कोई चैक नहीं है और न ही उनके कोई रूल्ज एण्ड रेगुलेशन हैं। ठीक है प्राइवेट स्कूल भी होने चाहियें। हमारे अपने स्कूलों में बच्चे कितने हैं। हमारे प्राइमरी स्कूलों में टीचर्ज की पोस्टें घट गई हैं। साहलावास में आठ में से तीन पोस्टें घट गई हैं क्योंकि बच्चों की संख्या कम थी और बच्चे प्राईवेट स्कूलों में चले गये। इसलिये मैं सरकार को यह कहना चाहता हूं कि सरकार को प्राइवेट स्कूलों की फीस फिक्स करनी चाहिये किआप इससे ज्यादा फीस नहीं ले सकते, तुम्हारा सिलेबस यह होगा, तुम्हारे रूल्ज एण्ड रेगुलेशन यह होंगे। कोई फायदा कानून तो सरकार को उनके लिये बनाना चाहिये। प्राईवेट स्कूलों में कोई एक बच्चे से दो सौ ले रहा है, कोई तीन सौ ले रहा है। फिर क्या होता है कि जिस स्कूल के अन्दर उनका अपना सैन्टर होता है उन स्कूलों के अन्दर जाकर वे स्वयं स्पैशल नकल करवाते हैं। इन सारी बातों को सरकार चैक करे कि जिन प्राईवेट स्कूलों में जहां बच्चों से फीस ज्यादा ली जाती है, वहां वे बच्चों को नकल भी खूब करवाते हैं। मेरे हल्के साहलावास, छूछकवास व बेरी हल्के में कई स्कूलों में वहां नकल को भी बढ़ावा दिया गया है। आपके जो सुपरवाइजरी स्टाफ जैसे सुपररिन्टैन्डैन्ट हैं, उनको बाकायदा नकद पैसा इस नकल करवाने के लिये दिया जाता हैं उनके अपने कमरों में स्पैशल नकल करवायी जाती है। चैंकिग वालों को छूछकवास, साहलावास में यह दिखाया गया था कि देखो इन इन बच्चों के

पेपर्ज 15–15, 20–20 मिनट बाद में भी होते रहे क्योंकि सुपरवाईजरी स्टाफ ने पैसा खा रखा था। तो इस प्रकार की जो बड़ी बुराईयां हैं, उनको दूर करवाने के लिये सरकार किसी बड़े अफसर को भेजकर पता करवाने कि किन किन बच्चों के ऐग्जाम पेपर्ज छीनने के बाद हुए हैं। नकल करवाई गई है। ऐसे लोगों के ऊपर जो नकल करवाते हैं, कुछ चैक्स एंड बैलैन्स होने की आवश्यकता है। प्राइवेट स्कूल्ज का एग्जामीनेशन सैन्टर भी सरकार सैन्टर्ज के साथ नहीं होना चाहिये ताकि नकल को बढ़ावा न मिलने पाए। क्योंकि इस बात से बड़ा ही झगड़ा होता है। वे लोग तो नकल करवाने लग जाते हैं और दूसरे रह जाते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, जहां तक फण्डज का ताल्लुक है। शिक्षा के ऊपर हम जिस प्रकार से फण्डज इस्तेमाल कर रहे हैं वह बड़ा ही कम है। हमें इसके लिये आने वाली पीढ़ी माफी नहीं देगी। वे कहेंगे कि समाज के भावी संचालक थे, वे हमारे लिये क्या छोड़ गये हैं? (शोर) वे हमें कहेंगे कि हमारे जो सरकार के संचालक थे, वे हमारे लिये क्या छोड़ गये हैं? अगर आज हम शिक्षा के ऊपर पैसे की कमी न रखेंगे तो हमारी शिक्षा में सुधार हो सकता है। मैं चाहता हूं कि कम से कम टीचर्ज तो स्कूलों में पूरे होने चाहिएं। यह तो मैं मानता हूं कि हम बच्चों को पीपल और नीम के पेड़ के नीचे पढ़ा सकते हैं लेकिन अगर टीचर्ज ही पूरे नहीं होंगे तो बच्चे कैसे पढ़ेंगे। आज भी स्कूलों में 15 प्रतिशत टीचर्ज की कमी है। प्राइमरी स्कूलों में तो टीचर्ज को

होना बहुत ही जरूरी है। आज प्राईमरी स्कूलों में दो सौ बच्चों के ऊपर एक टीचर है। तो मैं चाहता हूं कि फंड क्रिएट करके टीचर्ज बढ़ाए जाएं ताकि हमारे बच्चे आराम से पढ़ सकें। जहां तक जौब ओरिएंटिड शिक्षा देने का ताल्लुक है, आज इसकी इतनी बुरी हालत है कि बच्चे सोचते हैं कि मैं मैट्रिक, बी.ए. करने के बाद कहीं क्लर्क लग जाऊं। लेकिन स्कूल से निकलने के बाद उनको नौकरी नहीं मिलती। हमें प्राइमरी स्कूलों से ही बच्चों को जौब ओरिएंटिड शिक्षा देनी चाहिए। अगर हम उसे कोई टैक्नीकल शिक्षा देंगे तो अगर उसे कहीं पर नौकरी नहीं मिलती तो वह टैक्नीकल शिक्षा लेने की वजह से घड़ियां बना सकता है या खिलौने बना सकता है। तो हमें बच्चों को इसके लिए अलग से कर्मशाला खोलकर सिखाना चाहिए। आज जो माहौल हमने पैदा कर रखा है, वह ठीक नहीं है। अभी नकल के बारे में शिक्षा मंत्री जी ने बताया कि हमने नकल बन्द कर दी है। मैं कहता हूं कि नकल बन्द नहीं हुई है, थोड़ा कन्ट्रोल जरूर हुआ है। अगर आज आप किसी बी.डी.ओ. या थानेदार को चैकिंग के लिए भेजते हैं कि नकल हो रही है या नहीं तो उनको इस बात का क्या पता चलेगा। इस बीमारी को खत्म करने के लिए आपका सुपरवाइजरी स्टाफ स्कूलों में जाना चाहिए। वे वहां बच्चों का टैस्ट लें और उसके आधार पर टीचर्ज की परमोशन हो और उनको इन्क्रीमैंट मिलें। धन्यवाद।

श्री राम रतन (हसनपुर–अनुसूचित जाति): उपाध्यक्ष महोदय, मैं शिक्षा के ऊपर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं आपके माध्यम से बताना चाहता हूं कि मेरे हल्के में स्कूलों की इतनी बुरी हालत है कि बच्चे स्कूल के कमरों में बैठ नहीं सकते। वैसे तो जब से यह हमारी सरकार आई है .....

प्रो. राव बिलास शर्मा: उपाध्यक्ष महोदय, मेरा प्वायंट आफर आर्डर है।

Mr. Deputy Speaker: Has he spoken too much that you have raised a point of order?

प्रो. राव बिलास शर्मा: मैं आपकी इजाजत मिलने पर ही बोलूंगा।

श्री उपाध्यक्ष: आप क्या कहना चाहते हैं?

प्रो. राव बिलास शर्मा: उपाध्यक्ष महोदय, हम यहां सदन में सभी माननीय सदस्य बैठे हैं। अभी प्रो. छतर सिंह चौहान एजुकेशन पर बोल रहे थे। जब वे लीक से थोड़ा सा बाहर होते थे तो उनको नेहरा साहब की तरफ से टोका जाता था। अभी राम रतन जी ने कहा कि 'मेरे हल्के मे'। तो अगर नेहरा साहब अब भी बोलते तो मैं मानता कि वाकया ही वे अपना फर्ज निभा रहे हैं। हमारे प्रैस के भाई सब कुछ देखते और सुनते हैं। वे भी इनकी तारीफ करते। (हंसी)

13.00 बजे

श्री राम रतन: उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से शर्मा जी को बताना चाहता हूं कि जब सदन में शर्मा जी शोक प्रस्ताव पर बोले तो इन्होंने हमारे जीते जागते विधायक श्री अजमत खां की श्रद्धांजलि दे दी, वह कितनी गलत व शर्म की बात है? उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से अपने साथी से कहना चाहता हूं कि ये सदन में खड़े होकर अपने शब्द वापिस लें। इन्होंने एक जीते जागते विधायक को श्रद्धांजलि दी है। क्या इनकी पार्टी इनको यही सिखाती है? (शोर)

श्री उपाध्यक्ष: राम रतन जी, आप रैजोल्यूशन पर बोलें।

श्री राम रतन: उपाध्यक्ष महोदय, मेरे साथी अजमत खां जी कह रहे हैं कि अगर माननीय सदस्य शर्मा जी ने अपने शब्द वापिस नहीं लिए तो उनके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। मैं हाउस में कहता हूं कि पासवास जी के खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिए। (हंसी) पासवान का नाम गलती स कहा गया। मैं कहना हूं कि शर्मा जी के खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिए। इनके खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज होनी चाहिए। (शोर)

प्रो. राम बिलास शर्मा: उपाध्यक्ष महोदय, अजमत खां की तरफ से राम रतन जी क्यों बोल रहे हैं? वे खड़े होकर खुद यह बात कह सकते हैं। (शोर)

श्री उपाध्यक्ष: राम रतन जी, आप विशय पर बोलें जो इस समय अंडर डिस्कशन है।

श्री राम रतन: उपाध्यक्ष महोदय, मैं विशय पर ही बोल रहा हूं। उपाध्यक्ष महोदय, मैं इनको पढ़ा रहा हूं। (शोर)

प्रो. छतर सिंह चौहान: उपाध्यक्ष महोदय, माननयी सदस्य कह रहे हैं कि मैं तो इनको पढ़ा रहा हूं। हम तो पढ़ने के लिए तैयार हैं लेकिन ये शिक्षा शब्द हिन्दी में लिख कर दिखा दें, हम मान जाएंगे। (शोर)

श्री राम रतन: मैं आपको लिखकर दे रहा हूं, अगर उसमें कोई कमी हो तो आप बता दें। (शोर)

श्री उपाध्यक्ष: राम रतन जी आप रैजोल्यूशन पर बोलें।

श्री राम रतन: उपाध्यक्ष महोदय, मेरे साथी पुराने हैं, मैं तो इस बार नया चुन कर आया हूं। सारा सदन जानता है कि हरिजन भी शिखा में काफी ऊपर हैं। ऐसी बात नहीं है कि हरिजन पढ़े लिखे नहीं हैं। हरिजन तो उप प्रधान मंत्री की सीट तक पहुंचे हैं। हरिजन तो डाक्टर और एस.पी. हैं। (शोर)

श्री उपाध्यक्ष: राम रतन जी आप रजोल्यूशन पर ही बोलें।

श्री राम रतन: उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से शिक्षा मन्त्री जी से और मुख्यमंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि जिन–जिन स्कूलों में अध्यापकों की कमी है उन स्कूलों में जल्दी से जल्दी अध्यापक लगाए जाएं ताकि बच्चों को सही ढंग से शिक्षा

मिल सके। (शोर) उपाध्यक्ष महोदय, अभी जो एग्जाम हुए हैं उनमें नकल को रोकने के लिए सरकार ने पूरे प्रयत्न किए हैं। हमारे मुख्यमंत्री जी, शिक्षा मंत्री जी और विभाग के अधिकारियों ने इस तरफ काफी ध्यान दिया है कि नकल न हो।

उपाध्यक्ष महोदय, दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं जिन स्कूलों में कमरे कम हैं या जिन स्कूलों की छतें खराब हो चुकी हैं, उनको भी ठीक करवाया जाये ताकि बच्चे वहां पर आराम स बैठ कर पढ़ सकें। उसके साथ ही साथ स्कूलों में पेड़ भी लगाये जाने चाहिएं ताकि बच्चे छाया में बैठ सकें। इसके साथ साथ मेरा यह भी सुझाव है कि महिला अध्यापकों को उनके घर के आसपास के स्कूलों में ही लगाया जाना चाहिए ताकि वे बच्चों की पढ़ाई की तरफ ज्यादा से ज्यादा ध्यान दे सकें। दूर दूर इन लेडी टीचर के होने के कारण वे समय पर स्कूल नहीं पहुंच पाती इसलिए इस तरफ भी सरकार को ध्यान देना चाहिए। इसके साथ साथ मेरा एक सुझाव यह भी है कि सब बच्चों को एक जैसी शिक्षा दी जानी चाहिए। अमीर का बच्चा और गरीब का बच्चा भी सरकारी स्कूल में पढ़े, ऐसी व्यवस्था सरकार की करनी चाहिए। हामरे बी.सी. के और एस.सी. के बच्चे तो अच्छे स्कूलों में पढ़ नहीं पाते जबकि शर्मा जी जैसों के बच्चे 5000–5000 रूपए डोनेशन देकर अपने बच्चों को बढ़िया स्कूलों में दाखिल करा लेते हैं जबकि गरीब आदमी इतनी रकम नहीं दे सकता। इसलिए सरकार को ऐसा प्रबंध करना चाहिए कि अमीर–गरीब के बच्चों को

एक जैसी शिक्षा मिल सके। (विघ्न) उपाध्यक्ष महोदय, मेरा सरकार से यह भी मांग है कि हर हल्के में कम से कम पांच–पांच स्कूल अपग्रेड होने चाहिएं। इसके साथ साथ मेरी यह भी प्रार्थना है कि देहात में लड़कियों के लिए हाई स्कूलों की और 10+2 स्कूलों की काफी कमी है इसलिए सरकार को नजदीक–नजदीक हाई स्कूल और 10+2 स्कूल अधिक से अधिक खोलने चाहिएं ताकि लड़कियां भी अधिक से अधिक पढ़ सकें। दूर दूर स्कूल होने के कारण गरीब लोगों की बच्चियां पढ़ नहीं पाती। इसलिए मेरा सुझाव है कि इस तरफ सरकार को अवश्य ध्यान देना चाहिए।

इसके अतिरिक्त मेरी सरकार से यह भी मांग है कि सरकार को जे.बी.टी. और ओ.टी. की शिक्षा की तरफ भी ध्यान देना चाहिए। मैं आपके माध्यम से सरकार के नोटिस में लाना चाहता हूं कि मेरे हल्के में जे.बी.टी. कालेज का कोई प्रबंध है, इसलिए मेरी सरकार से गुजारिश है कि वहां पर जे.बी.टी. की क्लासिज चालू करने के लिए सरकार तुरन्त कदम उठाए। (विध्न)

प्रो. छतर सिंह चौहान: डिप्टी स्पीकर साहब, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। उपाध्यक्ष महोदय, जब मैं बोल रहा था तो हमारे माननीय पार्लियामैंटरी अफेयर्ज मिनिस्टर जी कह रहे थे कि यह शिक्षा की बात नहीं जो रैजोल्यूशन लाया गया है, उस पर ही बोलें। अब जो शिक्षा के बारे में बोला जा रहा है, क्या इनको सुनाई नहीं दे रहा है, क्या इनके कान बहरे हो गए हैं कि अब इस बारे में ये कुछ नहीं बोल रहे हैं? उपाध्यक्ष महोदय, हर

विधायक के साथ एक जैसा व्यवहार होना चाहिए और इस प्रकार के दोहरे मान–दण्ड नहीं होने चाहिए।

श्री राम रतनः उपाध्यक्ष महोदय, हमारे जो बच्चे स्कूल के टाईम पर इधर–उधर घूमते रहते हैं और स्कूल में नहीं जाते, उसमें भी सुधार होना चाहिए। जो मास्अर सरकारी स्कूलों में पढ़ाते हैं, उनके अपने बच्चे बढ़िया प्राईवेट स्कूलों में पढ़ने जाते हैं। मैं सरकार से प्रार्थना करना चाहूंगा कि सरकार को ऐसा कानून बनाना चाहिए ताकि सरकारी स्कूलों के टीचरों के बच्चे उन्हीं स्कूलों में पढ़े जहां वे खुद पढाते हैं। उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से यह प्रार्थना करूंगा कि जिन टीचरों का रिजल्ट अच्छा नहीं है, उनको दूर भेजा जाना चाहिए और उनकी पोलिटिकल सिफारिश भी नहीं मानी जानी चाहिए। कुछ टीचर्ज जो गांवों में पढ़ाते हैं, वे हाजरी लगा कर अपने खेतों में जाकर काम करते रहते हैं और बच्चे बाहर घूमते रहते हैं। ऐसा कोई कानून बनाया जाना चाहिए जिससे इस प्रथा को रोका जा सके। (विघ्न) उपाध्यक्ष महोदय, इनके साथ ही मैं आपके माध्यम से सरकार को यह भी सिफारिश करूंगा कि ऐजुकेशन सिस्टम ऐसा होना चाहिए जिससे बच्चे को स्कूल छोडते ही नौकरी मिल जाए। नौकरी दिलाने वाली शिक्षा नीति बनाई जानी चाहिए। ऐसी महिला टीचर्ज जो स्कूलों में नहीं जाती और इधर–उधर घूमती रहती है, उनको चैक किया जाना चाहिए। इसके साथ ही सरकार को ऐसा कानून बनाना चाहिए जिससे कि स्कूलों में परीक्षाओं में जो नकल

होती है उसको रोका जा सके। ऐजुकेशन के जो आफिसर हैं वे स्कूलों को चैक नहीं करते हैं, वे अपने दफतरों में बैठै रहते हैं। जो डी.ई.ओ. या दूसरे आफिसर्ज हैं, उनको जाकर स्कूलों को चैक करना चाहिए कि वहां पर पढ़ाई ठीक हो रही है या नहीं। वे स्कूलों में जाकर छापे मारें और मास्टरों को चैक करें। (विघ्न) उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से प्रार्थना करता हूं कि सारे हरियाणा के अन्दर सभी स्कूलों में बच्चों की एक जैसे ड्रैस होनी चाहिए और किसी भी ड्रैस में बली नहीं होनी चाहिए ताकि लोगों को पता चले सके कि यह स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे हैं। सारे प्रदेश में ऐजुकेशन का ढांचा एक जैसा होना चाहिए ताकि हरियाणावासियों को एक जैसी शिक्षा प्राप्त हो सके। इसके साथ ही मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि जिन बच्चों को स्कूल में पढ़ने के लिए दूर–दूर जाना पड़ता है उनको स्कूल भेजने के लिए सरकार चाहे कोई बस का प्रबन्ध करे या कोई और प्रबन्ध करके स्कूल भिजवाने का इन्तजाम करे। उपाध्यक्ष महोदय, जो बड़े–बड़े प्राईवेट स्कूल हैं जिनमें बड़े लोगों के बच्चे पढ़ने जाते हैं, उनमें एस.सी. बी.सी. और गरीब बच्चों के लिए रिजर्वेशन होनी चाहिए ताकि गरीबों के बच्चे भी अमीरों के बच्चों के साथ इक्ट्ठे बैठकर पढ़ सके और अच्छी शिक्षा प्राप्त करे सकें। हमारे आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने बी.ए. तक शिक्षा मुफ्त की हुई हैं लेकिन जो प्राईवेट दुकानें खुली हुई हैं। मैं सरकार से यह प्रार्थना करना चाहूंगा कि इन प्राईवेट दुकानों को बन्द करवा दिया जाना चाहिए। इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं

तथा उपाध्यक्ष महोदय, आपने जो समय मुझे बोलने के लिए दिया है, उसके लिए आपका धन्यवाद करता हूं।

चौ. सूरजभान काजल (जुलाना): उपाध्यक्ष महोदय, मैं शिक्षा पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। यह देश के लिए बहुत ही गम्भीर मुद्दा है। यह ऐसा मुद्दा है जैसे एस.वाई.एल. और अबोहर फाजिल्का जरूरी है, इसी तरह से देश और प्रदेश के लिए अच्छी शिक्षा का होना बहुत ही जरूरी है। आज हमारे नौजवान साथियों में जो अशान्ति की भावना है उसका कारण हमारी गलत शिक्षा है, आज हमारे नौजवान साथी जो अपराध, लूट–खसूट कर रहे हैं और जो बेरोजगार हैं, इसका कारण हमारी शिक्षा पद्धति है। उपाध्यक्ष महोदय, शिक्षा में सुधार लाने के लिए हमारी सरकार की गम्भीर होकर सोचना चाहिए। जैसे हमारे धार्मिक गुरू, समाज सुधारक और देश भक्त हुए हैं उनके बारे में पढ़ाया जाना चाहिए ताकि बच्चों को उनसे अच्छी अच्छी प्रेरणाएं मिलें। साथ ही हमारी शिक्षा में जो कमी और है वह यह कि हम टैक्नीकल, जौब–ओरियैन्टिड और मैकैनीकल शिक्षा नहीं देते हैं। आज हमारे जो नौजवान साथी हैं वे सिर्फ एक ही बात सोचते हैं कि हमें डिग्री लेनी है क्योंकि आज नौकरी योग्यता के अनुसार तो मिलती ही नहीं है। आज तो एच.सी.एस. और आई.ए.एस. में नकल हो रही है। हमारे हरियाणा के अन्दर ही प्रभावशाली लोग अपने बच्चों को नकल करवाते हैं। जो बच्चे पढ़कर पास होना चाहते हैं वे तो पीछे रह जाते हैं और नकल मारकर पेपर देने वाले पास हो जाते

हैं। हर जगह सिफारिशें ही चलती है। आजकल यह धारणा बनी हुई है कि पैसा देकर ही नौकरी लग सकती है। आज शिक्षा में बहुत खामियां हैं इनको दूर करने की आवश्यकता है। आज की शिक्षा विद्यार्थियों को किताबी–कीड़ा बनाकर छोड़ देती है। जिससे हमारे विद्यार्थियों को रोजगार नहीं मिलता है।

उपाध्यक्ष महोदय, दूसरी बात स्कूलों को अपग्रेड करने की है या स्कूलों को मान्यता देने की है, वह भी सही नहीं है। स्कूलों को अपग्रेड भी अब भेदभाव की नीति के आधार पर किया जाता है। कहीं पर तो पक्ष की बात है, कहीं पर विपक्ष की बात है और कहीं पर मंत्री अपनी सोच से स्कूलों को अपग्रेड करते हैं। उपाध्यक्ष महोदय, यह इनका क्राईटेरिया ठीक नहीं है। स्कूलों को अपग्रेड करने का क्राईटेरिया सही नहीं है। मैं आपको अपने हल्के जुलाना का उदाहरण देना चाहता हूं। जुलाना हल्के में 58 गांवों के अन्दर एक 10+2 का स्कूल है। जुलाना रोहतक से 25 किलोमीटर की दूरी पर है और इतनी ही दूरी पर जींद से पड़ता है। उपाध्यक्ष महोदय, होना तो वहां पर कालेज चाहिए था लेकिन वहां पर तो 10+2 का एक स्कूल भी नहीं है। इसलिए मैं आकपके माध्यम से सरकार से कहना चाहूंगा कि वह अपने स्कूलों की अपग्रेड करेन की पोलिसी में सुधार करे। सरकार को यह देखना चाहिए कि किस हल्के में 10+2 स्कूल है और किस हल्के में नहीं है ताकि आस पास के पढ़ने वाले बच्चों को सुविधा मिल सके। उपाध्यक्ष महोदय, हमारे बच्चे गरीब हैं, इसलिए वे गवर्नमैंट स्कूलों

में पढ़ते हैं जबकि गवर्नमैंट स्कूलों में पढ़ाई होती नहीं है। यह बात हम सबको मानकर चलना पड़ेगा। इसलिए मेरा कहना यह है कि सरकार को वहां पर कोई सुपरविजन या फलाईग स्कावड को भेजना चाहिए। सरकार को डी.ई.ओज. या एस.डी.ई.ओज. को स्कूलों में चैक करने के लिए भेजना चाहिए ताकि टीचर्ज भी कुछ जिम्मेदार बन सकें। जब ये टीचर्ज जिम्मेदार होंगे, तभी क्लासों में पढ़ाई हो सकेगी। उपाध्यक्ष महोदय, इसके अलावा, आज स्कूलों में बच्चों को पढ़ने के लिए सामान भी नहीं मिलता, जैसे साईस की क्लास तो हर स्कूल में होती है, लेकिन लैबोरेटरी नहीं है और अन्य सामान भी नहीं है, जिसका नतीजा यह होता है कि विद्यार्थी अपनी कक्षाओं में पास हो तो जाते हैं लेकिन उनको साईस का प्रैक्टिकल ज्ञान नहीं होता। इसी तरह से ज्योग्राफी जैसे विशयों का भी यही हाल है।

उपाध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी जरूरी है, क्योंकि अगर दिमागी विकास करना है तो शारीरिक विकास करना भी जरूरी हो जाता है। अगर अच्छा स्वास्थ्य होगा, तभी अच्छा दिमाग होगा। इसके अलावा, अन्य दूसरी भी कमियां हैं, जैसे कहीं पर तो हैड मास्टर नहीं हैं, कहीं पर साईस मास्टर नहीं हैं, और कहीं पर ड्राईग मास्टर नहीं है। इन सारी बातों को खासतौर पर सरकार नोट कर ले और डी.ई. ओ. से स्कूलों की रिपोर्ट मंगवाये कि कहां पर हैड मास्टर नहीं है और कहां–कहां पर अन्य विशयों के मास्टर्ज नहीं हैं। सरकार को

ऐसे स्कूलों में जल्दी से जल्दी मास्टर्ज अप्वायंट करने चाहिए। जहां तक नकल की बात है, ऐजुकेशन मिनिस्टर ने भी माना है कि नकल हुई है, इसीलिए 90 सैन्टर्ज कैंसिल किए गए हैं, जबकि हमारे ट्रेजरी बैंचिज के साथी कह रहे हैं कि नकल रोकी गयी है। 90 सैन्टर्ज इसलिए तोड़े गए हैं क्योंकि नकल हो रही थी। अगर नकल को रोकना है तो उसको सजा दो जिन्होंने नकल की है। एक या दो लड़कों की वजह से सैन्टर तोड़ना तो ठीक नहीं कहा जा सकता। मेरे हल्के में इसलिए दो सैन्टर्ज तोड़े हैं क्योंकि वहां पर नकल हो रही थी।

शिक्षा मंत्री (श्री फूल चन्द मुलाना): उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य कह रहे हैं कि एक या दो बच्चों की वजह से सैन्टर्ज तोड़ दिए गए। सैन्टर्ज इसलिए तोड़े गए क्योंकि वहां पर सब लोग मिलजुल कर नकल करवा रहे थे। सरकार ने इसको चैक करने के लिए कदम उठाए हैं।

श्री रमेश कुमार: डिप्टी स्पीकर साहब, सजा तो उनको मिलनी चाहिए जो नकल करते हैं या करवाते हैं लेकिन जो सैन्टर्ज तोड़ जाते हैं, उनका असर नकल न करने वाले बच्चों पर भी पड़ता है। सैन्टर्ज तोड़ना गलत बात है।

श्री फूल चन्द मुलाना: उपाध्यक्ष महोदय, रमेश कुमार जी ने ठीक कहा है। सैन्टर इसलिए तोड़ते हैं कि दूसरे सैन्टर्ज

को पता चल जाए कि वे नकल करवायेंगे तो उनका सैन्टर भी टूट जाएगा।

चौ. सूरज भान काजला: उपाध्यक्ष महोदय, जैसा मंत्री जी ने बताया कि सैन्टर इसलिए तोड़ने हैं कि दूसरे सैन्टर्ज को पता लग जाए, तो यह भी कोई अच्छी सोच नहीं है। जैसा कि मैंने पहले कहा था जो भी नकल करवाने का दोशी पाया जाए चाहे वह हो जिसकी डयूटी लगी हो, चाहे उस स्कूल का अध्यापक हो, चाहे सुपरवाईजन हो, सैन्टर तोड़ने की बजाए नकल करवाने वाले दोशी को सजा दी जाए।

इसके अलावा, मैं टयूशन सिस्टम के बारे भी सुझाव देना चाहूंगा कि इस टयूशन सिस्टम को खत्म किया जाना चाहिए। जो लैक्चरर या अध्यापक जिन विद्यार्थियों को टयूशन पढ़ाते हैं, उनकी खासतौर से मदद करते हैं, प्रैक्टिकल में भी उनकी मदद करते हैं। जो बेचारे बच्चे टयूशन पढ़ने नहीं जा सकते, उनके साथ क्लास में, प्रैक्टिकल में, सभी जगह भेदभाव किया जाता है। इन तथ्यों की ओर मंत्री जी को खास नोटिस लेना चाहिए। स्कूलों में जाकर जहां जिस चीज की जरूरत हो, वह भी दी जाए। जैसा मुझसे पहले बोलने वाले माननीय सदस्यों ने कहा, मेरा भी इस बारे में यह सुझाव है कि सिलेवस एक जैसा होना चाहिए ताकि सभी बच्चे एक समान शिक्षा प्राप्त कर सकें। इसके अलावा, बच्चों के बस्ते का बोझ भी कम होना चाहिए। उपाध्यक्ष महोदय, इतना ही कहते हुए मैं अपना स्थान लेता हूं। धन्यवाद।

श्री राम कुमार कटवाल (राजौंद): उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया। इसके लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। मैं भी शिक्षा के बारे में आपको 2–4 सुझाव देना चाहूंगा। उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले ये जो मंत्री साहिबान बैठे हैं, इनको यह शपथ ग्रहण करनी चाहिए कि जो भी शिक्षक ये लगाएंगे, उसे रिश्वत लिए बगैर लगाएंगे। दूसरा मेरा सुझाव यह है कि 10 जमा 2 स्कूल में जो साईस रूम होते हैं, उनमें एक–एक लैब अटैन्डैन्ट और हैल्पर होना चाहिए। उपाध्यक्ष महोदय, मेरा तीसरा सुझाव नकल के बारे में है, नकल रोकने के लिए जो फलाईग स्कवैड के दस्ते जाते हैं, उन सबको एक कमरे में बैठाकर के शपथ दिलानी चाहिए कि वे या उनका स्टाफ किसी को भी नकल नहीं कराएगा।

Mr. Deputy Speaker: Now the House stands adjourned till 9.30 a.m., on Friday, the 4th March, 1994.

***13.30 – hrs.**

(The Sabha then *adjourned till 9.30 a.m., on Friday, the 4th March, 1994.)